श्री गुरुचरण कमलेभ्यो नमः

श्री प्रिया प्रीतमाभ्यां नमः

श्री मत्यै सर्वेश्वर्य्यैचन्द्रकलायै नमः

श्री मन्मारुतनन्दनाय नमः

वृहद् अष्टयाम पदावली

श्रीविदेहजा दूल्लह कुंज, अयोध्या के संस्थापक अनन्त श्रीस्वामी विदेहजाशरण जी महाराज की भावना के अनुकूल भगवान श्रीसीतारामजी की आह्निक सेवा (लीला) जिसको श्री रसमोद कुंज के संस्थापक अनन्त श्री स्वामी शत्रुहन शरणजी महाराज ने रसिकाचार्यों की महावाणियों में सवाँरकर संवर्द्धित किया उसी अष्टयाम के

संकलनकर्त्ता :—

श्री वैदेही वल्लभ शरण जी

हनुमानबाग, अयोध्या

प्रकाशक:—

श्रीसीताराम लाहौटी (शिवसागर, आसाम)

संवत्–२०५०, विवाह पंचमी

प्रति–१०००] सन्–१९९३ [न्यौछावर–१५ रुपये

श्री गुरुचरण कमलेभ्यो नमः

श्री प्रिया प्रीतमाभ्यां नमः

श्री मत्यै सर्वेश्वर्य्यैचन्द्रकलायै नमः

श्री मन्मारुतनन्दनाय नमः

वृहद् अष्टयाम पदावली

श्रीविदेहजा दूल्लह कुंज, अयोध्या के संस्थापक अनन्त श्रीस्वामी विदेहजाशरण जी महाराज की भावना के अनुकूल भगवान श्रीसीतारामजी की आह्निक सेवा (लीला) जिसको श्री रसमोद कुंज के संस्थापक अनन्त श्री स्वामी शत्रुहन शरणजी महाराज ने रसिकाचार्यों की महावाणियों में सवाँरकर संवर्द्धित किया उसी अष्टयाम के

संकलनकर्त्ता :—

श्री वैदेही वल्लभ शरण जी

हनुमानबाग, अयोध्या

प्रकाशक:—

श्रीसीताराम लाहौटी (शिवसागर, आसाम)

संवत्–२०५०, विवाह पंचमी

प्रति–१०००] सन्–१९९३ [न्यौछावर–१५ रुपये

॥ श्रीमते रामानन्दाय नमः ॥

संकलित पदावली का तात्पर्य

रसो वैसः 'रसं ह्येवायं लब्ध्वाऽऽनन्दी भवति' इत्यादि श्रुतियों में ब्रह्म को रस स्वरूप कहा गया है। रस की प्राप्ति के पश्चात् ही साधक को परमान्द की प्राप्ति होती है। 'सत्यं ज्ञान-मनन्तं ब्रह्म आनन्दे ब्रह्मेति व्यजानात्' आदि श्रुतियों से स्पष्ट है कि सत् चित् एवं अनन्त आनन्द ये तीन ब्रह्म के स्वरूप हैं। सत् अंश से कर्मयोग, चित् अंश से ज्ञान योग तथा आनन्द अंश से भक्तियोग की अभिव्यक्ति मानी गयी है। भारतीय दार्शनिकों का यह सुनिश्चित सिद्धान्त है कि चिदंश (चेतन) होने के कारण जीव को कैवल्य मुक्ति प्राप्त करने में स्वरूपतः अधिकार है। आनन्दांश में जीव का प्रवेश एकमात्र श्रीजी की कृपा से ही सम्भव है।

श्रीराम तापनी श्रुति में स्पष्ट है कि योगीजन अनन्त सच्चिदानन्द श्रीराम में रमण करते हैं। अतः परब्रह्म शब्द से एकमात्र श्रीराम का बोध होता है। **'रमन्ते योगिनोऽनन्ते ... . परब्रह्माऽभिधीयते'**।। वेदावतार श्रीमद्वाल्मीकि रामायण में श्रीजनक नरेन्द्रनन्दिनी के साथ श्री अवधनरेन्द्रनन्दन श्रीरघुनन्दन की विविध विहार लीलाओं का वर्णन है- **'रामस्तु सीतया सार्द्धं विजहार बहून् ऋतून्'** महर्षि कहते हैं कि श्रीराघवेन्द्र ने तो श्रीजनकराजनन्दिनी जू के साथ चिरकाल तक विहार किया। श्लोक में संवत्सरान् (बहुत वर्षों तक) न कहकर बहु ऋतून (बहुत ऋतुओं तक विहार किया।) कहा गया है। इससे स्पष्ट

है कि ऋतु के अनुकूल विहार का संकेत किया गया है। षट ऋतु विहार का इस श्लोक में स्पष्ट संकेत है। इसी सिद्धान्त की दृष्टि से आचार्यों ने अपने अपने प्रबन्धों में श्रीजानकी वल्लभ जू के षट ऋतु विहार का विशद वर्णन किया है। रसिकाचार्यों के दिव्य प्रबन्धों के गान श्रवण से ही उपासना रस का बोध होता है।

'श्री रसिक प्रकाश भक्तमाल' में स्पष्ट कहा गया है कि उपासकों को अग्र स्वामी आदि रसिकाचार्यों के प्रबन्धों का गान तथा स्वयं नृत्य गान सन्ध्यावन्दनादि की भाँति करना चाहिये।

"अग्र स्वामि आदि के प्रबन्ध गान समय समय स्वयं नृत्य गान सन्ध्यावन्दन ज्यों कीजिये।" यदि ब्राह्मण प्रातः की सन्ध्या करता है, किन्तु, सायं का सन्ध्यावन्दन नही करता है तो शूद्र की भाँति ब्राह्मणोचित कार्यों से वहिष्कार्य है। **स शूद्रवद् वहिष्कार्य सर्वस्माद् द्विज कर्मणाः"** उसी प्रकार यदि उपासक नित्य इन प्रबन्धों का गान श्रवण नहीं करता है तो रसोपासना से वंचित हो सकता है। दम्पति श्रीयुगल चितचोर की उपासना की रीति प्राप्त करने के लिये जहाँ ऊर्ध्व पुण्ड्र, धनुर्वाण, नाम युगल कंठी एवं मन्त्र ये पञ्च संस्कार अपेक्षित हैं वहीं पूर्वाचार्यों के प्रबन्ध का गान भी परमावश्यक है।

भक्तमालजी में स्पष्ट है कि—

प्रथम षडक्षर युगल मंत्र लेइ पुनि,
मिथिला अवध जन्म नातो भावई।
ऊर्ध्व पुण्ड्र धनुवान तप्त भुज अंशन पै,
कंठ में युगल कंठी शोभा सुख छावई॥

अग्र स्वामी भनित प्रबन्ध मिलि अष्टयाम,
सेवा और श्रृंगार बीच अंकुर बढावई ।
इष्ट को परत्व महामाधुर्य स्वरूप जानै,
दम्पति उपासना की रीति तब पावई ।

युगल श्री सीतारामानुरागी श्री वैदेही वल्लभशरण जी ने बड़े परिश्रम से इस 'वृहद् अष्टयाम पदावली' का संकलन किया है जिसमें युगल सरकार भगवान श्री सीताराम जी की आह्निक विहार लीला का विशद् गान है । प्रात: उत्थापन से लेकर मंगला, शृंगार, भोजन, हिंडोल, रास रात्रि शयन कुञ्ज तक की सेवा लीला का विभिन्न रसिकाचार्यों के प्रबन्धों का समीचीन संग्रह है जिनके गान श्रवण से ही मधुर रस की अधिकाधिक पुष्टि सम्भव है । इस ग्रन्थ के प्रकाशन प्रूफ संशोधनादि कार्यों में श्री श्याम वल्लभा शरणजी ने महान सहयोग किया है । जिनके ही सहयोग विशेष से ग्रन्थ का प्रकाशन सम्भव हो सका । अत: दोनों ही महापुरुष विशेष धन्यबाद के पात्र हैं ।

आशा है, इस ग्रन्थ रत्न के अनुशीलन से उपासकों के हृदय में युगल रस का संचार होगा ।

स्वामी सीताराम शरण

धन्यवाद के दो शब्द :-

परमात्मा रसरूप माने गये हैं। शान्त, दास्य, वात्सल्य, सख्य और शृंगार पंच रसों में मुख्यतया 'रस' शब्द शृंगार रस ही अभिप्रेत है।

रस शब्दोहि शृङ्गारे मुख्य बृत्तितया स्थिता: ।
अन्यत्र स भवेद्गौण: परिभाषा विवर्जित: ॥

वैसे सब रस तो रस है ही। फिर भी, अन्य रसों के लिये रस शब्द का प्रयोग गौण ही है। इसी तरह शृंगार भावापन्न शृंगारी सन्तों के लिये ही प्राय: रसिक शब्द अभिहित है। शृंगार रस रसिक सन्तों के लिए प्राय: रसिक सम्प्रदाय शब्द का भी व्यवहार चल पड़ा है। डा० भगवती प्रसाद सिंह जी ने 'श्रीराम भक्ति में रसिक सम्प्रदाय' नाम का अपना एक विशाल शोध ग्रन्थ ही लिख डाला है जिसमें शृंगार रस के परिचय के साथ शृंगार रस रसिक सन्तों के जीवन वृत्त तथा उनकी कृतियों का विशद विवेचन है। इस रस के रसिकों में बड़े बड़े रसिकाचार्य सिद्ध संत हो गये हैं जिनने अपने भगवत साक्षात्कार दशा की अनुभूतियों को अपनी सहज सिद्ध वाणियों में वर्णन किया है जो **'रसिका चार्यों की महावाणी'** संज्ञा से जानी जाती है तथा जिनके पठन पाठन गान श्रवण से भगवत लीला का साक्षात्कार होता है जो मुमुक्षुओं के लिये पारलौकिक परमानन्द प्रदायक चरम साधन है।

इन महावाणियों में आत्म परमात्म (जीव-ईश्वर) रमण की यावत त्रिगुणातीत तुरीया अवस्था की केलि क्रीड़ा का विशद वर्णन है सो सब कल्याणकामी मुमुक्षुओं के लिए अनुपम पारलौकिक संवल है ।

इसी परहित कारिणी बुद्धि से प्रेरित हो उदार बुद्धि महात्मा श्री वैदेही वल्लभ शरणजी (हनुमागबाग, अयोध्या) की आज वर्षों से उत्कट अभिलाषा रही कि श्री रामानन्द सम्प्रदाय के परमोपास्य भगवान श्रीसीतारामजी की आह्निक विहार लीला जो रसिकाचार्यों की अनुभूत महावाणियों में वर्णित है, एक ग्रन्थ के रूप में प्रकाशित हो ताकि साधकों को इकट्ठे रसिकाचार्यों की महावाणियों के माध्यम से अपने परमोपास्य भगवान श्री सीतारामजी की मधुर लीलाओं का आस्वादन सम्भव हो सके। इसके लिये इन्होंने वर्षों के अथक परिश्रम से रसिकाचार्यों की वाणियों का संग्रह कर रखा था जो आज श्री गुरुहरि कृपा से 'वृहद् अष्टयाम पदावली' के रूप में प्रकाशित है और जो भगवान श्रीतारामजी की मधुरोपसना का सर्वाधिक सरस और सुगम साधन है।

तदर्थ महात्मा श्री वैदेही वल्लभ शरणजी महाराज विशेष धन्यवादार्ह और अविस्मरणीय हैं। समय समय पर इनने रसिक समाज के लिये रस ग्रन्थों के प्रकाशन माध्यम से सेवा करते रहे हैं और आगे भी सेवा का उत्साह बनाये हुए हैं। अतएव, ऐसे महात्मा सर्वथा वन्दनीय और स्मरणीय हैं।

इसकी प्रेस कापी बनाने में श्रीरामभजन दास आदि कई महात्माओं ने सेवा की है जिसके लिये वे सब विशेष धन्यवाद के पात्र हैं। विशेष कर, आगरा वाली बहनें सुश्री सिया सहेली, रसरूपा आदि जो श्री वृन्दावनधाम निवास करती हैं, प्रेस कापी बनाने में अधिकश्रम पूर्ण सहायता की है तदर्थ ये अविस्मरणीय धन्यवादार्ह हैं।

श्रीसीताराम लाहौटी (शिवसागर, आसाम) जो श्रीरसमोद कुञ्ज, अयोध्या के संस्थापक स्वामी श्री १०८ श्री शत्रुहन शरण जी महाराज (बिरौली वाले) के विशेष कृपापात्र हैं, इसके प्रकाशन व्यय का भार वहन कर रसिक समाज की बड़ी सेवा की है। अतएव, ये अधिकाधिक धन्यवाद के पात्र हैं।

श्रीवैदेही शरणजी (अवध बस्त्रालय वाले) ने श्री महाराज जी को कागज आदि लाने और विचार विमर्श के विशेष सहयोगी हैं तदर्थ धन्यवादार्ह हैं।

मनीराम प्रिंटिंग प्रेस परिश्रम पूर्वक इस ग्रन्थ का प्रकाशन कर रसिक समाज को उपकृत किया है। धन्यबाद के लिये स्मरणीय है।

प्रूफ संशोधन की दुरुह सेवा श्री महाराज जी ने मेरे सिर रखी जो मेरी योग्यता से बाहर की थी। फिर भी, यथा साध्य आज्ञा सिरोधार्य की गयी। अयोग्यता के कारण त्रुटि के लिए क्षमा प्रार्थी :-

रसिकों का अनुचर

अनन्त श्री रसमोद पादारविन्द मकरन्द मिलिन्द

श्याम वल्लभा शरण

❀ अनुक्रमणिका ❀



❀ शुद्धि पत्रम् ❀

पृष्ठ	पद नं०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	श्लोक ३ का छुटा हुआ—			

चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

५४ पद १०२ पंक्ति ४ के आगे छुटा हुआ

छैल पान पीकें लगाई कहाँ है ?

पृष्ट	पद	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४१	६३	६	हो	नहिं
४९	८७	अन्तिम	पललय को	पल
६७	१६	२	बनी	घनी
११५	११ के ऊपर	अन्तिम	पाव	पान
११९	५	१	रघुनन्दन	रघुनन्द
१२६	८	१	पिया	सिया
१२३	१२	६	अभी	अमी
१२५	१६	१०	हँसिमुख	हँसमुख
१३४	१४	५	पादक	पादप
१५३	३२	६	प्रिय	प्रिया
१५६	१	५	डक़	डफ
१५९	७	७	दोहु	दुहुं
१६०	११	२	छरि	घरि
१६१	१३	५	मीजि	भीजि
१६४	१९	२	मलार	धमार
१६६	२५	५	अँधिकारी	अँधियारी
१६८	२८	३	वर	वन
१७०	२	३	मयद	गयंद
१७४	१२	४	हारक	हाटक
२१०	१०	अन्तिम	निज	जिन
२२२	२६	५	षट	पट
२५६	कवित्त में	—	जपटें डपटें	लपटें दपटि

❁ श्रीगुरुचरण कमलेभ्यो नमः ❁

वृहद् अष्टयाम पदावली

❁ मंगलाचरण ❁

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुर्साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

अज्ञान तिमिरान्धस्यज्ञानाञ्जनशलाकया।
सीतानाथ समारम्भां रामानन्दार्य मध्यमाम्।
अस्मदाचार्य पर्यंतां वन्दे गुरु परम्पराम् ॥

नित ध्यान कीजै श्रीगुरु के चरन को।
शुभ लाभ लीजै नर दिव्य तन को ॥
यह लोकहू में परलोकहू में गुरु की कृपा तें सिधि है नरन को।
उपदेश नौका नीकी बनी है भवरूप गहिरी सरिता तरन को ॥
विश्वास जी में करि प्रेम जपिये शुभ नाम श्रीरामवल्लभा
शरन को ॥

श्यामां सरोज वदनां मृग पोत नेत्रीं ।
मंद स्मितां मुरसिजां मृदुमंजु केशीम् ॥
श्री पाणि पद्म मणि भूषण भाविताङ्गीं ।
सञ्जीवनीं शरण मेमि च राम रामाम् ॥१॥
श्यामं पिसङ्ग बसनं वनजात नेत्रं ।
प्राण प्रियं प्रणत पालमपार रूपम् ॥
स्मेरं सुधांशु वदनं मणि भूषणाङ्गं ।
रामं नमामि वपुषा वचसा हृदा च ॥२॥
गांधर्वेषु च पारगा सुसखिषु सर्वासु मुख्यातु या,
दम्पत्योस्सुख स्वाद राग निरता स्वप्नेन वाञ्छापरा ।
यावद्रास विलासकार्य्यं मखिलं कर्त्रीं स्वतंत्रास्तयोस्तां,
वन्देन्दुकलां परां सु रसिकाचार्य्यां तु सीता सखीम् ॥३॥
वन्दे सखी समाजं तं प्रेम रज्जवा वशीकृतं,
बबन्ध क्रीड़मानं यो श्री राम रस सागरम् ।
यासां भ्रमरवन्नित्यं भूत्वा भ्रमति राघवः ।
चित्तेषु फुल्लकंजेषु काननेषु मुहुर्मुहुः ॥४॥



❀ आचार्य वन्दना ❀

❀ सर्वेश्वर्यै श्रीमत्यैचन्द्रकलायै नमः ❀

वन्दे चन्द्रकलां देवीं वीणा वादन तत्पराम् ।
रासवेश्मनि भावज्ञां जानकी प्रेम विह्वलाम् ॥ १ ॥
सौशिल्यादि गुणैर्युक्तां वात्सल्य रस भूषिताम् ।
दयार्द्रचित्तांसततं प्रणतार्ति विनाशिनीम् ॥ २ ॥
सुन्दरीं नृत्य हास्यास्यां तयोः हास्यं बितन्वतीम् ।
भेदज्ञां हावभावानां रसानां रस रूपिणीम् ॥ ३ ॥
मांप्रापयचत्वं देवि राघवं राघव प्रियाम् ।
तवैव कृपयाजाता श्याम श्यामाहि भावना ॥ ४ ॥
रसाचार्योपदेशेन यत्किञ्चित्स प्रकाशते ।
सम्यक् न बुद्धयते भद्रेत्वदीयं रूपमद्भुतम् ॥ ५ ॥
कृपाकरुष्वभावज्ञे प्राप्नुयामिष्ट भावनाम् ।
तवैव कृपया रामे दुःख हानिर्भविष्यति ॥ ६ ॥
नमो वाद्य प्रवीणायै चन्द्रकान्त्यै नमो नमः ।
नमो सीता प्रहर्षिण्यै विलासिन्यै नमो नमः ॥ ७ ॥
नमस्ते सर्व भावज्ञे चन्द्रायै च नमो नमः ।
नमो विद्या स्वरूपिण्यै कृपा रूपिणिते नमः ॥ ८ ॥
चन्द्रकलाष्टकं पुण्यं नारदेन प्रभाषितम् ।
यः पठेत्सततंभक्त्या तस्य भावोहि सिध्यति ॥ ९ ॥
शठाय पर शिष्याय दाम्भिकाया हितात्मने ।
न दातव्यमिदं स्तोत्रं भावसिद्धिर्हि दुर्लभा ॥ १० ॥

इति श्रीनारद पंचरात्रे श्रीनारदोक्त श्रीचन्द्रकलाष्टकं समाप्तम्

श्रीस्वामी श्रीअग्रदेवाचार्य कृत :—

अष्ट सखियों की वन्दना

सर्वाषां सु सखीनां तु प्रेरिकां गुण सागराम् ।
जानक्याः परम प्रेष्ठां कोक विद्या विशारदाम् ॥१॥
रसिकानामाचार्यां तां वीणा वादन तत्पराम् ।
दम्पत्योः केलि मर्मज्ञां वन्दे चन्द्रकलां सखीम् ॥२॥
चारुशीलां सखीं वन्दे सर्वाभरण भूषिताम् ।
गान विद्या प्रवीणानां कुशलां रस रूपिकाम् ॥३॥
सुन्दरांगीं हेम रूपां विमलां मन्द गामिनीम् ।
वन्दे तां सु सखीं प्रेम्णा दम्पत्योः रस वर्द्धिकाम् ॥४॥
वन्दे अनंगकलाभिज्ञां तां मदनकलाभिधाम् ।
मन्दोदरीं महाप्रज्ञां दम्पत्योः प्रेमदायिकाम् ॥५॥
हेमांगीं चन्द्रवदनां हेमां रूप विलक्षणाम् ।
वन्दे रस विद्यात्रीं तां सुन्दरीं रस रूपिणीम् ॥६॥
वन्दे चारुतरां रूपां क्षेमां क्षेम विधायिनीम् ।
मर्मज्ञां सर्व कार्येषु दम्पत्योर्भाव दायिकाम् ॥७॥
रसानां रस भावानां मर्मज्ञां शुभ दायिकाम् ।
वन्दे सखीं तां शुभगां सुकलनां प्रकाशिकाम् ॥८॥
वाद्य विद्या प्रवीणानां कुशलां पद्म गन्धिकाम् ।
वन्दे तां सुमहाप्रज्ञामुत्फुल्लोत्पल लोचनाम् ॥६॥

सीतारामयोश्चेतास्यु: सख्योऽष्टौ रसरूपिका: ।
मुख्यास्सर्वेषु कार्येषु दम्पत्यो: प्राणवल्लभा: ॥१०॥
एता सामनुगाः यास्तु सख्यश्च गुण भूषिता: ।
वन्दे तासाँ पदद्वन्दं यास्स्यु: नोकुल देवता: ॥११॥
एतासाँ यूथ मुख्यानामग्रदासेन वन्दनाम् ।
कृताँ यश्च पठेन्नित्यं सभाव सुखमश्नुते ॥१२॥

❀ सोरठा ❀

पूर्वाचार्य सहचरी, नित्य धाम बसि हेरिये ।
जनक लड़ैती के प्रिये, मोहि भरोसो तेरिये ॥ १ ॥
बन्दौं गुरु परमेश, जिनकी महिमा को कहैं ।
थके गनेश महेश, सारद शेष रमेश युत ॥ २ ॥

❀ दोहा ❀

जिनके पद नख प्रभा से, हृदय सुहोत प्रकास ।
नसत तिमिर सूझत हिये, सिय पिय विपिन विलास ॥ ३
बन्दौं श्रीचन्द्रकला अली, सकल सखिन सिरमौर ।
कृपा दृष्टि करि हेरिये, सूझै रहस हलोर ॥ ४ ॥
बन्दौं श्री आचार्यवर, श्री चन्द्रकला सुखदानि ।
जयति शक्ति सर्वेश्वरी, श्री चन्द्रकला महरानि ॥ ५ ॥
जयति शक्ति सर्वेश्वरी, श्री चन्द्रकला गुन खानि ।
दायिनि प्रेम प्रसाद की, रंक जिवावनि बानि ॥ ६ ॥

प्यारी तुम्हरे नयन में, काहु न अञ्जन दीन।
रसिक सिरोमनि साँवरो, सुख युत डेरा कीन ॥ ७॥

निज प्रीतम के प्राण धन, जनकलली मुद खानि।
प्रेम प्रवाह बिबर्धनी, अलियन जीवन दानि ॥ ८॥

जयति शक्ति सर्वेश्वरी, चन्द्रकला कमनीय।
जिनके कर विहरत सदा, बिना दाम सियपीय ॥ ९॥

बिना दाम सिय पीय को, लेन चहत जन जौन।
चन्द्रकला सेवत सुगम, अगम रहत रस भौन ॥ १०॥

बिनु श्रम भ्रम तिनके हिये, विहरत श्रीसिय लाल।
चन्द्रकलाजु की चरनरज, शोभित जिनके भाल ॥ ११।

कोटि कल्प श्रम करि मरै, भरै न हिय रस रास।
चन्द्रकलाजु के पद कमल, जब लगि हृदय न बास ॥१२

'सिय कान्तिलता' सब आस तजि, स्वास स्वास रटु नाम।
चन्द्रप्रभा जु की लाड़िली, चन्द्रकले गुन धाम ॥ १३॥

सर्वेश्वरि श्री चन्द्रकला, चरन कमल चित लाउँ।
जिनकी कृपा कटाक्ष ते, सिय सहचरि पद पाउँ ॥१४।

श्री प्रसाद सखि मदन कला, चारुशिला पिक बैनि।
सुभगा विमला विमल गुन, हेम क्षेम मृग नैनि ॥ १५

प्रमुख अष्ट यूथेश्वरी, रूप गुनन की खान।
नित्य टहल सिय महल की, देहु दया करि दान ॥ १६॥

यूथेश्वरि वागेश्वरी, कुंजेश्वरि सिर नाइ ।
सब सन मागौं सीय पिय, महल टहल रसदाइ ।।१७।।
किंकरि अनुचरि सहचरी, अली सखी जे बाम ।
कनक महल की बासिनी, सब कहँ करौं प्रनाम ।।१८।।
मधुर मंजरी नवउढ़ा, मुग्धा मध्या बाल ।
प्रौढ़ा अलि सिय लाल की, सब पद टेकौं भाल ।।१९।।
छन छन नव नव रंग चढ़ै, सिय पिय में अनुराग ।
सब मिलि करि करिये कृपा, पावौं अचल सोहाग ।।२०।।
वन्दौं श्री मन्मारुति, जिन सम रसिक न आन ।
दया दृष्टि मोपै करो, दरसावहु रस ज्ञान ।।२१।।
बन्दौं श्री मज्जगद्गुरु, रामानन्द महान ।
रसिकन पंकज के लिए, उदित भानु भगवान ।।२२।।
अनंतानन्दाचार्य जू, प्रनवउँ बारम्बार ।
दया करो दरसै हिये, सिय पिय रूप उदार ।।२३।।
श्री पयहारी पद कमल, बन्दौं बारम्बार ।
चिरजीवी अजहूँ दरस, कीन्ह जगत उपकार ।।२४।।
श्री मद् अग्राचार्यवर, सब रसिकन सिरताज ।
रसिक शालि हित मेघ ह्वै, वरसायो रसराज ।।२५।।
बन्दौं तिनके चरन रज, मम धन जीवन प्रान ।
निज लघु किंकरि जानि कै, दरसावहु रस ज्ञान ।।२६।।

श्री श्री तुलसी दास जो, भाविक महा उदार।
कलि कुटिल जीव निस्तार हित वाल्मीकि अवतार ॥२७॥
यहौ कहत सकुचत हिये, हैं सिय पिय अवतार।
जगद्गुरू विख्यात हैं, जिन रचि मानस सार ॥२८॥
तिनके पद अरविन्द को, बन्दौं बारम्बार।
करो कृपा दरसै हिये, सिय पिय रहस उदार ॥२९॥
बन्दौं तुलसी के चरन, जिन कीन्हों जगकाज।
कलि समुद्र बूड़त लख्यो, प्रगट्यो सप्त जहाज ॥३०॥
श्रीनाभा श्रीबाल अली, मधुराचार्य धुरीन।
रामसखे हरि रूप सखी, कृपानिवास प्रवीन ॥३१॥
श्री श्री बिन्द्वाचार्यवर, 'राम प्रसाद' सुजान।
रसिकन पर जिनकी कृपा, तिलक बिन्दु प्रगटान ॥३२॥
राम चरन हरि रसिक अली, जुगल प्रिया रसखान।
युगलानन्य प्रपन्न जू, रसिकन जीवन प्रान ॥३३॥
जानकि वर शरन जू, पंडित वर्य महान।
राम बल्लभा शरण जू, गुरु सेवी जगजान ॥३४॥
संत प्रवर सिय भूमि के, बाबा सिद्ध सु नाम।
जिनके भाव ते प्रगट भये, पीय गौर सिय श्याम ॥३५॥
श्री मती माधुर्यलता, महल टहल वर देहु।
आचार्या रसमोदलता, मोहि आपनि करि लेहु ॥३६॥

प्रेमलता जू के पद कमल, बन्दौं बारम्बार।
श्री सियराम सु शरन जू, पद रज सिर उर धार ॥३७॥
बन्दौं श्रीरसकान्तिलता, रसिक शालि रस खानि।
जुगल नाम सुखधाम निरन्तर, रटति रहति मस्तानि ॥३८
बन्दौं श्री रसरंग लता, सदगुरु जीवन प्रान।
सिय पिय सेवा में निरत, भाविक बड़े सुजान ॥३९॥
बन्दौं सबके पद कमल, सदा जोरि जुग पानि।
सब मिलि के करिये कृपा, लघु तर किंकरि जानि ॥४०
गुप्त प्रगट छोटे बड़े, और जे रसिक सुजान।
सबके पद बन्दन करौं, वर दीजै रस ज्ञान ॥ ४१॥
रहस चाव दिन दिन बढ़े, हरहु अरस अज्ञान।
मम अभिलाष पुरावहू, सब मिलि कृपा निधान ॥४२
बन्दौं जानकि जान पद, सखिन सहित रस रास।
नृत्य कला दरसाय के, पुरवहु सब विधि आस ॥४३।
'कान्तिलता' हित कारिणी, स्वामिनि हित नत पाल।
चेरी को रखिये श्री, चरनो में सब काल ॥४४॥
हे सिय बल्लभलाल जू, 'कान्ति लता' के प्रान।
नित्य टहल निज महल की, दीजै दया निधान ॥४५॥
रूप माधुरी चित चढ़ी, श्याम गौर सुख धाम।
रोम रोम रमने लगे, हृदय रमन सिय राम ॥४६॥

अलि विहारिणी के दोऊ, हिय के हरन स्वरूप ।
चिरजीवो जुग जुग सदा, रसिक सिरोमनि भूप ।।४७।।
जय जय जय मम स्वामिनी, जय जय अवधकिशोर ।
जय जय नटवर बेष जू, जय रसिकन सिरमौर ।।४८।।
राम रूप समरूप नहीं, राम धाम सम धाम ।
राम चरित समचरित नहीं, राम नाम समनाम ।।४६।।
वन प्रमोद सम वन नहीं, सरि नहिं सरयु समान ।
राम रास समरास नहीं, मुनि कोकिल कियो गान ।।५०।।
रमु क्रीड़ा के अर्थ से, रामहिं रास प्रधान ।
औरन में यह गौण है, रस कविकरत बखान ।।५१।।
मंगल श्री मिथिला अवध, कंचन विपिन प्रमोद ।
मंगल सीताराम जू, जो 'मोदहुँ' को मोद ।।५२।।
मेरे मिथिला देश में, धारे नौशय वेश ।
ताते यही उपासना, चाहिए हमें हमेश ।।५३।।
सिया माँडवी उर्मिला, श्रुति कीरति वर वाम ।
चारि कुवँरि चारो रतन, तुलसी करत प्रनाम ।।५४।।



❁ मंगल कुंज ❁

श्री गुरु चरन सरोज रेणु मस्तक निज धरिके।
वरणौं कछु संक्षेप चरित अन्हिक सियवर के॥
चन्द्रकला, विमला, सुचारु शुभगा, रसखानी।
मदन कला, रसमात चारुशोला, शुचि वानी॥
हेमा, और सुछेम, पद्मगंधा, सुखदाई।
अष्ट सखी ये मुख्य घटज निज शिष्य सुनाई॥
औरहुँ हैं जो अष्ट उपसखी गुनन प्रशंसी।
लक्ष्मणा सुठि नारि श्यामला हैं शुभ हंसी॥
सुगमा वंशध्वजा चित्ररेखा परमानी।
तेजोरूपा गुणाढय और इन्द्रावलि मानी॥
इन सबके लिये नाम ध्यान किये अघ की हानी।
सूझहि रहस ललाम पार जो मन क्रम वानी॥
अब वरणौं सखि मुख्य उपसखी धाम सुहाई।
निज निज यूथन लिये बसत जो जहँ मनभाई॥
हेम महल के चहूँ ओर सुठि कुञ्ज बिराजे।
विभव एक से एक कहत कवि मति गति लाजे॥
पूरब उत्तर भाग कुञ्ज श्री चन्द्रकला के।
पूरब दक्षिण भाग कुञ्ज है श्री विमला के॥
दक्षिण पूरब भाग कुञ्ज है श्री शुभगा के।
मदन कला के कुञ्ज याम्य पच्छिम दिसि लेइके॥

पच्छिम दक्षिण भाग कुंज श्री चारुशीला के।
पच्छिम उत्तर भाग कुंज जानो हेमा के॥
उत्तर पच्छिम भाग कुंज क्षेमा के जानो।
उत्तर पूरब भाग पद्म गंधा के मानो॥
इनके द्वितीया वरन चहूँ दिशि कुँज सुहाई।
अष्ट ऊप सखी बसति तहाँ लिये सखि समुदाई॥
लक्ष्मणा के कुँज जानु उत्तर दिशि माँही।
बसति श्यामला प्राचि दिशा निज कुँज सदाहीं॥
हँसी दक्षिण दिशा कुँज अति सरस सुहाई।
पच्छिम सुगमा कुञ्ज सुभगता को कह गाई॥
पच्छिम उत्तर मध्य कुञ्ज अति शुभ्र बिराजे।
वंशध्वजा निवास अहर्निशि बाजत बाजे॥
उत्तर पूरब मध्य चित्ररेखा के जानो।
पूरब याम्य सुकोण तेजरूपा के मानो॥
दक्षिण पश्चिम कोण सु इन्द्रावली सुवासा।
निज निज ठौर सु बसत अष्ट उपअष्ट हुलासा॥

अथ सेवा अष्ट सखी की :—

पान पवावति चन्द्रकला मुख चन्द्र निहारे।
विमला चँवर सुशुभ्र सुशुभगा छत्र सुधारे॥
मदन कला कहि कामकथा पिय मनहिं रिझावत।
चारुशिला सुठि गंध लगावत दंपति भावत॥

हेमा लिये कर झारि सुछेमा दरस दिखावत ।
पद्म सुगंधा गान अष्ट यहि विधि मन भावत ।।

अथ उपसखी सेवाः —

लक्ष्मणा रुचि बीरि लगावति अति सुगंधमय ।
मणिमय हार सुधार श्यामला लिये सुठि कर में ।।
हंसी युगल दुकूल सुधारति कहि रसवानी ।
सुगमा कर लिये व्यजन करति दम्पति मनमानी ।।
वंशध्वजा सुपीकदान लिये सुघर सयानी ।
अतरदान रसखान चित्ररेखा लिये पानी ।।
तेजोरूपा विचित्र रत्नमय छरी हाथ लिये ।
मुरछल इन्द्रावली सुकर लिये दम्पति रुख किये ।।
यहि विधि निज निज सौज लिये सखि सियपिय सेवत ।
दम्पति रूप निहार और सपनेहुँ नहिं लेखत ।।
इन सबके लिये नाम ध्यान अध दूर पराई ।
सूझै सिय पिय रहस महल सुख पाइ अघाई ।।
प्रातकाल उठि भक्त सुमिरि श्रीगुरु चरणन को ।
हनुमदादि जे भक्त और अनुजन रघुवर को ।।
पूर्व कहे जे सखिन सबन के पद सिरनाई ।
मागे सिय पिय महल टहल सबसों रसदाई ।।

पुनि एकाग्रचित होय मानसी सुरति दृढ़ावै।
निज स्वरूप जो दिव्य नित्य कृतकरि सचु पावै ॥ १

भूषन वसन विचित्र धारि अँग अँग में तिय के।
गावें सखिन समेत रहस प्यारी प्रीतम के ॥ २

मंगल थार सजाइ सखिन युत गुरु पँह आवै।
चन्द्रकलादिक साथ 'अग्र' मिलि महल में जावै ॥ ३

रचना तहाँ अनेक भाँति को वरनि सके अस।
शेष गणेश महेश शारदा बुद्धि थके नस ॥ ४

कोटि चन्द्र रवि कोटि तेज चहुँदिशि में भ्राजत।
रहन न पावत तिमिर निशहुँ में दिन सम भासत ॥ ५

तहाँ दिव्य परयंक सुप्यारी प्रीतम तापर।
छके सयन रसमत्त सुरति सुख आनन्द पाकर ॥ ६

परयंकहुँ के चहूँ ओर चौकी रतनन के।
ता ऊपर बहु सौज धरे सुख हित सिय पिय के ॥ ७

यूथ यूथ सखि आन जुरी तँह बैठि फरस पर।
मुग्धा मध्या प्रौढ़ और मंजरी प्रेम भर ॥ ८

गावति कोकिल वानि सखिन भैरव रागन में।
बाजत वीन मुचंग सुनूपुर शब्द स्वरन में ॥ ९

आचारज रुख पाइ 'अग्र' झाँझरि ह्वै झाँके।
यह सुख अद्भुत पाइ बहुरि दिशि कतहुँ न ताके ॥ १०

पुनि वीणादिक शब्द श्रवण सुनि दोउ उठि बैठे।
आलस युत जँभुआई लेत अँग-२ को ऐंठे॥
पुनः अंगजा अष्ट सुभूषण वसन सम्हारी।
भई रही विपरीत दोऊ के अंग सुधारी॥
पुनि दइ परदा खोलि सखिन सब निरखन लागीं।
कहुँ अञ्जन सिन्दूर कहूँ नखछत अँग रागी॥
निरखि-२ सखि हँसति व्यंगमय वचन परस्पर।
बोलति पियहिं सुनाइ देत आदर्स विहँसि कर॥
दरपन हाथ में लेइ पीय निज मुख को निरखत।
देखि लक्ष सकुचाय नयन नीचे को करषत॥
पुनि दोउ प्रीतम प्यारि उतरि पलका से आये।
बैठे मणिन जड़ाव चौकि तापर हरषाये॥
मुख मंजन करवाइ सखिन पुनि वसन उतारी।
नई वसन पहिराइ अल्प अँग भूषण धारी॥
धूप दीप करि पुनः मधुर मधुपर्क पवाई।
अचवन करि पुनि पान देइ सुठि गंध लगाई॥
अति विचित्र आदर्श दोऊ मुख दरस कराई।
पुनि आरति करि निरखि चन्द्र मुख वलि-२ जाई॥
यहि विधि मंगल ध्यान करे दूलह दुलहिनि के।
'अग्रअली' सोइ धन्य रसिक जग रस जेहि फीके॥

बिन रसिकन यह ध्यान और सपनेहुँ नहिं पावे ।
करि करि ज्ञान विराग योग भरि जनम वितावे ।।

(कवित्त)

चन्द्रकला विमला औ शुभगा मनोजकला
चारुशीला हेमा अरु छेमा पद्म गंध हैं।
प्रातकाल करि श्रृंगार लीन्हें सखि थाल
साज मंगल शुभ द्रव्य तामें उठत सुगंध है।।
यूथन अनेक साथ गान तान रस प्रकाश
चले जात पुलक गात लाजत गति गयंद है।
पहुँचे सब हेम महल पलका समीप जाय
दम्पति मुख हेरि 'अग्र' माच्यो रस जंग है।।

(मंगला)

मंगल करि श्रृंगार सुतन मंगल मई ।
मंगल थार सजाइ द्रव्य मंगल मई।।
मंगल यूथ बनाइ सखिन मंगल मई ।
मंगल कर लिये सौज चली मंगल मई ।।
पहुँची हेम निवास जहाँ मंगल मई ।
निज निज सखि लिये वाद्य बजावत रस मई।।
गावन लगि बहु नारि राग मंगल मई ।
आलस युत सिय प्यार जगे मंगल मई ।।

सखि सब झाँझरि माँह विलोकति सुख मई ।
देखत युग विपरीत रहस मंगल मई ।।
बिन दुकूल झलकात गात सब रस मई ।
लखिसखि सब सुख सिन्धु मगन मंगल मई ।।
निज निज वसन सुधार दोऊ मंगल मई ।
बैठे दिये गर बाँह रूप मंगल मई ।।
पुनि दइ परदा खोलि झाँकि मंगल मई ।
सखि सब रूप निहारि तन मन दई ।।
पुनि दोऊ बैठाइ चौकि रतनन मई ।
मंगल द्रव्य दिखाइ प्यारि प्रीतम नई ।।
पुनि दोउ के शृंगार करी मंगल मई ।
मंगल भोग लगाइ शेष सखियन लई ।।
आरति करि पटवारि वारि मंगल मई ।
अँग अँग छबि अवलोकि सखिन वलि वलि गई ।।
मंगलमय यह ध्यान 'अग्र' जे गावई ।
पिय प्यारी रस महल टहल सुख पावई ।।

पद — १

सब तजि होइहौं महल उपासी ।।

स्वर्ग मुक्ति बैकुण्ठ बिसारौं, गुरु पद रज की दासी ।
सतगुरु बचन महारस मानौं, परौं न भ्रम की फाँसी ।।

सेज विहार रास रस लूटौं, त्यागि वियोग उदासी।
युगल बिहार भावना करिहौं, भटकौं न तीरथ काशी ॥
और ठौर उझकौं नहिं नयनन, राम सिया छबि प्यासी।
गुरु प्रसाद भइ रसिक छाप अब, नाहिं न बटु सन्यासी ॥
भाव कुभाव धरे कोइ मन में, कोइ करे उपहासी।
लोक लाज कुल मान बड़ाई, आस त्रास सब नासी ॥
'कृपा निवास' कृपा करि सियजू, करिहौं युगल खबासी ॥

(२)

नमो श्री सतगुरु रसिक नरेश ॥

बड़े भाग अनुराग जाग जोहि, गुर पद पदुम परेश।
जासु कृपा लवलेश पाइ जन, रहस देश परवेश ॥
रस मोद बिनोद सुलभ तेहि जनको, साधन बिनहिं कलेश।
'कांति' सकल सुख शांति लहे गुरु, ध्यावत हृदय हमेश ॥

(३)

नमो श्री अग्रस्वामि पदकंज ॥

प्रिय वानी रसिकन मन मोदक, बोधक विपुल रास रस मंजु।
रसिकवर्य रसिकन मत मंडन, खंडन असद् विषय भ्रम पुंज ॥
नमो श्री जयति जयति प्रमोदवन, पिय प्यारी रस रहस निकुंज
नमो श्रीजयति जानकी बल्लभ, नाम रसिक रसना वलि गुँज॥
प्रीति रीति परतीति लली पद, 'युगलप्रिया' हिय तमसि विधु ज

(४)

श्री चन्द्रकलाजू आश तिहारी ॥

नवल नेह सिय वरषा अनुदिन, बढ़ै इहै इक अरज हमारी ।
नित्य बिहार नवल कुंजनि को, लखूँ बनूँ सेवा अधिकारी ॥
खास महल की टहल देहु नित, सीथ प्रसाद स्वाद सुखकारी
'सियाअली' सहचरी विहारी, पुरवहु आश जाउँ बलिहारी ॥

(५)

हमारे भाई प्रभा ललीजू कौ राज ॥

जाकी रुख लखि रसिक रसिकनी, सजत सु रसमय साज ।
कबहुँ युगल कर धरि प्रिया प्रिय के, करन रास रस काज ॥
सुन युग बैन नैन भरि स्वामिनि, मधुर वीन वर बाज ।
उद्दीपन रस रास करन को, जुरवत सकल समाज ॥
कबहुँ मान रस केलि रचावत, कर नत पिय सिरताज ।
युगल ललन रस रीति 'बिहारिनि', बिस्तारत्ति रस राज ॥

(६)

सब सखियन सरदार दुलारी चन्द्रभानु की ॥

श्रीनिमिवंश जन्म सिय संग में, कीन्ही बाल विहार ।
व्याह उछाह भयो सियजू संग, अवध कियो उजियार ॥
सिय पिय सदा बिके जिनके कर, चन्द्रकला सरदार ।
लीला ललित लली लालन की, रुचि लखि करत सम्हार ॥

जिनके कर विहरत पिय प्यारी, किये हिये को हार।
युग रस रसी फँसी सियपिय छबि, रहत न देह सँभार॥
शरणागत पालिनि रस मालिनि, सर्वेश्वरी हमार।
श्रीरसमोद 'कान्ति लतिका' की, जीवन प्राण अधार॥

(७)

अब मोहि चन्द्रकलाजू की आशा॥
जनकललीजू की मुख्य सहेली, बिहरति सकल बिलासा।
चौरासी भव फन्द छुड़ाके, रसिकन संग दियो बासा॥
'युगलप्रिया' अब नहि कछु संशय, विपिन प्रमोद निवासा॥

(८)

स्वामिनि तोर सुहाग मनाऊँ॥
श्री मिथिलेश किशोरी सेवा, जब जब यहि जग आऊँ।
इतर फुलेल अरगजा सुन्दर, पिय प्यारी उपटाऊँ॥
मज्जन पान शृंगार शृंगारूँ, दरपन धै दिखराऊँ।
बीरी ललित लगाय पवाऊँ, रस के बैन सुनाऊँ॥
प्रीतम सों नित लाड़ लड़ाऊँ, सहचरि ह्वै अपनाऊँ।
'श्याम सखे' दरबार रहूँ नित, जूठनि आस धराऊँ॥
सेज विहार रास रस लूटूँ, हिय की आश पुजाऊँ॥

(९)

हे बल्लभ पिय प्राण पियारी॥
राउर चरन कंज जीवन मम, और न आश तिहारी।

सब विधि विशद भलाई दश दिश, फैलि रही भ्रमहारी ॥
अग जग नेक नजर के हेरत, होत विरंचि पुरारी ।
तव करुणा कटाक्ष चाहत सिय, जेते जग तन धारी ॥
तिहूँ काल मुद मोद तिन्हें निज, नूतन अमल अपारी ।
पल पल प्यास चरन पंकज रस, लीजे सुधि सुकुमारी ॥
'युगल अनन्य शरन' दासी निज, समुझत प्रीति विचारी ।

(१०)

प्रथम उपासक भाव विचारे ॥

सतगुरु कृपा सखी तन करि निज, रंगमहल रस रहसि निहारे
तन कृत करि गुरु प्रेम भावना, आयसु पाय महल पगुधारे ॥
मधुर मधुर गति मधुर भाव सों, मधुर मनोहर सेज संवारे ।
सोये सजनी रजनी उनींदे, सुरति विनोद प्रमोद अपारे ॥
निरखि झरोखनि सकुचि जगावति,
उन्मत छबि लखि प्राण विसारे ।
मंगलादि श्रृंगार सेज सुख, चिद विलास रस टहल संवारे ॥
'कृपानिवास' श्रीरामप्रिया की, कृपा अगम सब सुगम हमारे ॥

(११)

बाजत कौशलेश जू के द्वार ॥

घनरव दुन्दुभी शंख शहनाई, रैन रही घड़ी चार ।
उठो सखी अब मज्जन करिये, सजि सोरहो श्रृंगार ॥

भूषन रचि अंग धारिकै चलिये, चारुशिला 'चन्द्रकला' दरबार
महल महल प्रति जागि उठी सब, निज निज सौज सुधार ॥
'रसिकअली' परिकर स्वामिनि ढिग, बैठत करिके जुहार ॥

(१२)

महल पौरि बाजत शहनाई ॥

मधुर यन्त्र बाजत तिहि संग मिलि, मन्त्र मनोज भराई ।
कुंज कुँज सखियन दासी गन, जागि उठी अतुराई ॥
सेवा सौज सँवारन लागी, सुमिरत सिय रघुराई ।
सिय पिय प्रीति पगी रस माती, दरशन कौ अकुलाई ॥
'कान्ति' स्वामिनी लगी जगावन, गावत बीन बजाई ॥

(१३)

उठी सखी तीन बजै सब सोय ॥

शयन भवन की ध्यान छकी सुठि, युगलनाम धुनि होय ।
निज २ कुंज सखिन संग गवनी, नित्य कृत्य मुख धोय ॥
मज्जन करि श्रृंगार सकल विधि अंग अंग सब जोय ।
रंग भवन के द्वार युगल सखि भेंट कीन्ह सब कोय ।
रसाचार्य आचार्य संग मिलि 'प्रेमलता' सुख होय ॥

❀ दोहा ❀

नौबत धुनि सुनि दासियाँ, मोहि जगावति आइ ।
चारु चरन चापत लगी, पिय प्यारी गुन गाइ ॥

जागि उठो सुमिरन लगी, गुरु कोमल पद कंज।
सरयू अवधहि ध्यान धरी, पुनि सिय चहचरि पुंज॥

(१४)

चली सखि निजकृत सार संभार॥

रसाचार्य पग लागि, पुनि चलि चन्द्रकला दरबार।
परमाचार्यं 'अग्र' सुखदायिनि, सेवें युग आचार॥
नव सत सजि पुनि षोडस, विधि सकल सखिन सरदार।
संग 'विहारिनि' सुख सरसाइये, जीवन प्राण अधार॥

(१५)

विविध विधि पूजेसि पद जलजात॥

पाय सुआशिष अतर पान लहि, उर अनन्द अधिकात।
पुनि समाज सह अग्र अलिन संग, सर्वेश्वरि पँह जात॥
पंचम भैरव राग अलापत, नूपुर धुनि सरसात।
'रस राजन' विनु रसाचार्य के, यह सुख नहिं दरसात॥

(१६)

आरति करिये गुरु सखि की। अंग अंग प्रति छबि की॥

चरन कमल तल अति झलकत हैं,जानु जंघ शोभा छलकत हैं।
कटि प्रदेश अदभुत राजत हैं, किंकिनि रव कल को॥
अवलि तरंग गंग लहरत हैं,कुच उतंग पिय मन करषत हैं।
तापर कंचुकि झीन लसत हैं, बीच नयन अंधियारि बसत हैं॥

खुलतहिं पिय मन झपट लैत हैं, सुधि न रहत तन की ॥
मुख मंडल शोभा राजत हैं, देखि सखि छबि दमकत हैं।
कानन कर्णफूल लटकत हैं, नयन कमल दल की ॥
सिन्दुर बिन्दु भाल दमकत हैं, शीश चन्द्रिका अति चमकत हैं।
पृष्ठि वेनि नागिन झलकत हैं, सारी छबि वर की ॥
जो यह आरति हित नित गावत,
प्रेम भक्ति तेहि सिय बकसत हैं।
जय जय जय 'रसमोद' भनत हैं, सब सुख साजन की ॥

(१७)

आरति सर्वेश्वरि की करिये।

चन्द्रप्रभा जु की राजदुलारी, सिय दुलार वपु धरिये।
लाड़िली लाड़ की ओढ़े सारी, श्याम भुजा लर गरिये ॥
जुगल प्रीति आभूषन अंग अंग, शोभा कहि नहिं परिये।
रसिकन के मन पद में नूपुर, बाजि पिया मन हरिये ॥
प्रीति मोद हिय लावन वारो, नित रस बीन उचरिये।
रस तानन उद्दीप दुहुँन हिय, नित नव केलि उघरिये ॥
'स्नेहय' कर चरन महावर, पूर मनोरथ करिये।

❀ दोहा ❀

नृत्य गान कैंकर्य की, शिक्षा विविध प्रकार।
दै करके सर्वेश्वरी, वरखासेउ दरवार ॥

(१८)

यूथेश्वरि सब ठाढ़ी करत प्रनाम ।।

जय जय चन्द्रकला सर्वेश्वरि, स्वामिनि शुचि सर नाम ।
करुणा भरी रसीली चितवनि, रसिकन पद विश्राम ।।
सजि सजि सौज मौज भरि 'मधुरी', चली संग सुख धाम ।।

(१९)

चली सखि रंगमहल रस ऐन ।

रस विलसत जहँ प्रीतम प्यारी, पगे सुरति रस मैन ।।
लली लाल रस जाल फँसे तहँ, निसि भरि निकसि सकैन ।
रजनी गत सजनी सेवा सजि, लखि लहिये चित चैन ।।
जागन समय भयो मन भावन, सखियन को सुख दैन ।
नृत्य गान करि 'कान्ति' रिझैये, सिय पिय राजिव नैन ।।

(२०)

चली सब शयन भवन को जात ।।

अग्रभाग श्री चन्द्रकला अलि, संग सखिन के व्रात ।
अष्ट अष्ट मिलि साज बजावत, मंगल सजि नव सात ।।
'प्रेमलता' नूपुर झनकावत, भैरव राग सोहात ।।

(२१)

चली सखि रंगमहल को जात ।।

परिकर स्वामिनि संग विराजत, गजगामिनि की व्रात ।

नेह भरी रस छाकी अँखिया, दरशन को अकुलात ॥
'रसिकअली' पिय प्यारि रूप गुन, गावत पुलकित गात ॥

(२२)

सखी री चलिये सिय पिय पास, जहाँ आनंद निवास ॥
भाग सुहाग उदय हम सबके, नित नव हिये हुलास ।
पाई स्वामिनि श्रीसियाजू अस, अब न रही कोइ आस ॥
सो सब श्रीगुरुदेव कृपा तें, भयो अमंगल नास ।
हिल मिलि चली सुशयन कुँज को, 'मधुर लता' अभिलास ॥

(२३)

बाजत वीन प्रवीन सुहागिन केकर रंगमहल के द्वारे ॥
उचरत तान तरंग अनंग भरि, मनु झर रंग फुहारे ।
सुनत लाल जगे सुरति रंग पगे, सिय जीवन सुख रहसि उघारे
'कृपा निवास' सखी नूपुर रव, सुनि मन मोद अपारे ॥

(२४)

सयन कुँज के द्वार प्रात ही चारुशिला अलि यंत्र बजावैं ॥
रूप विलास विनोद विविध सुख,
सहचरि निरखि हरषि हिय गावैं ।
सुनि मृदु गान मनोहर वचननि,
सारिका सिय रघुवरहिं जगावैं ॥
जागो मेरे प्यारे सिया वर, 'रसिकअली' दरशन अब पावैं ॥

(२५)

रंगमहल के द्वार भोर ही, चन्द्रकला सखि बीन बजावें।
सिय रघुबरको परम पियारी, रूप भरो मधुरे स्वर गावें॥
दम्पति गान सुनत उठि बैठे, सहचरि दर्शन करि सुख पावें।
'राम सेवक' के प्रभु सुख सागर,
निरखि हरखि सिर चवँर ढुरावें॥

(२६)

भोरे श्रीचन्द्रकला अलवेलो, वीन बजावति प्यारो।
विमलादिक निज कुंज कुँज तें, आनि जुरी इक सारी॥
कनक निकुंज भवन पलँगे पर, पौढे श्रीयुगल विहारी।
उठि अलसात जंभात रंग भरि, अँखिया सुरति खुमारी॥
विपुल थार सेवा सौजन कर, कंजनि मंजु सुधारी।
अग्रभाग 'श्रीअग्र सहचरी', 'युगल प्रिया' वलिहारी॥

(२७)

महल में सोवत हैं दोउ प्यारे॥
रतन जटित पलँगा अति सुन्दर, मयन मनहुँ तनु धारे।
ताके ऊपर विस्तर पय के, फेन लजावन हारे॥
तापर पौढे युगल विहारी, हर रिपु कला सुधारे।
करत केलि नाना विधि दम्पति, सखियन नैन निहारे॥
हँसि हँसि बातें करत परस्पर, वर्षत मोद अपारे।
'अग्र' स्वामिनी स्वामी दोऊ, जीवन प्रान हमारे॥

(२८)

सेज पर दोउ चंदा दरसात ।।

लपटानें पटताने पौढे, पान खवावत खात।
अधरामृत रस पान करत दोउ, मंद मंद मुसुकात ।।
विहंसि कपोलन परसि रसिक दोउ, आनंद हिय न समात।
'मोहनि' जनकलली प्रीतम संग, विहरति सिगरी रात ।।

(२९)

निरखोरी छबि युगल अंग की ।।

फूल माल मोतिन की माला, उरझि रहे अनुराग रंग की।
कुच केशर तन में लपटानी, छलक छटा रति रंग जंग की ।।
सुमन सेज कुम्हलानि सयानी, रैन करि केलि अनंग की।
'सरस माधुरी' मगन भई लखि, सखी सहेली सकल संग की।।

(३०)

रंग रंगीले दोउ शयन करे री ।।

रंगमहल नव रंग पलंग पर, रवि शशि जनु रस रंग भरे री।
सुरति खेत रस हेतु जोति कैं,
युगल सुभट लरि श्रमित परे री ।।
अद्भुत तेज सेज छबि निरखत,
अमित मार रति शान झरे री।
'मधुरी' दम्पति प्रेम सुपागे, सोय रहे उर सुभुज धरे री ।।

(३१)

दोऊन की अरुझनि आली मोहि भावैं ।।

भुज से भुजन गरे गरबहियाँ, विहँसि २ बतरावैं ।
दोउ मुख चंद निहारि परस्पर, ललित कपोल मिलावैं ।।
उरझि रहे दोउ मुकुट चन्द्रिका, अलिगन मुकुर दिखावैं ।
'सिया अली' मेरो जीवन धन, छबि पर वलि वलि जावैं ।।

(३२)

नवल सखि रंग भवन में रंग ।।

जनक दुलारी छबि उजियारी, विहरत प्रीतम संग ।
उरझे नील पीत घन सजनी, मनसिज वात प्रसंग ।।
उगलिय उड़गन अवलि विराजत, कंज कली तन रंग ।
उझपनि झपनि सरस रस सारत, पट घट लाल तरंग ।।
मारनि स्पंदन रस रंजित, 'रसिक अली' रस जंग ।।

(३३)

अबहीं नेक सोय अलसाय ।।

काम केलि अनुराग सु रस भरे, जागे रैन विहाय ।
बार बार सपनेहुँ सूचत सुख, सुरत रंग के भाय ।।
यह सुख निरखि अलीगन प्रमुदित, 'नागरिदास' वलि जाय ।।

(३४)

भोर भये जागिये पिय प्यारे ।।

पिय रस रंग रंगी सिय स्वामिनि,

सिय अनुराग पगे पिय प्यारे।

रति रंग रंगे पगे मिलि सब निशि,

शिथिल भये दोऊन अंग सारे ॥

अब जागहु सुख देहु अलिन कँह, 'गुनशीला' नयनन के तारे॥

(३५)

जागु जागु जागु श्याम जानकी विहारी ॥

कुन्दमाल पीतमाल कमल केतकी गुलाब,

विकसित प्रमोदवन विचित्र वन विहारी।

बोलहिं सारो मयूर कोकिला मराल कीर,

कुंजहिं अलि रटहिं नाम जनक की दुलारी ॥

उचित बिविध साज सजि सखि कोटिन,

शिव शेषादिक यश गावें जागे लाल प्यारी।

जागे करुणानिधान निज निज कृत सखि सुजान।

'राम चरन' दम्पति पर तन मन धन वारी ॥

(३६)

जगो जानकी जान जीवन हमारे ॥

विलोको विपुल भीर, अलियन की द्वारे।

निशा सव सिरानी विहंग बोलते हैं,

लग्यो वाजने रौशन चौकी नगारे ॥

नवल नायिका नाचती गावती हैं,

कोलाहल मच्यो मोद मन्दिर अपारे।

'मधुर' रस वचन सुनि उठे दोउ प्यारे,

महामोद मंगल निरखि हीय हारे॥

(३७)

सिय शुक कहत उठो पिय प्यारे, सखियन टेरत द्वारे।

चन्द्रकला श्रीचारुशिलादिक, निज निज सौज सवाँरे॥

गुनिजन मोर चकोर शोर करि, गावत सुयश तिहारे।

भानु प्रकासे कमल विकासे, नासे तिमिर अपारे॥

निशि बिछुरनि दुख दुखित सकल हैं, जीवन प्रान हमारे।

'अलि प्रिया' वचन सुनत सिय प्रीतम नयन सरोज उघारे॥

(३८)

भोर भये जागिये जानकी जीवन प्यारे॥

मंगलमय छबि दिखरावहु, तरसत आतुर नयन हमारे।

भोर भये तमचुर बोलन लागे, रवि लखि खिल रहे अंबुज सारे

पक्षिन कलरव होत गई निशि, कुमुद मलिन मुखचन्द निहारे।

'मधुर प्रिया' वीना कर लीन्हें, सखियन मुदित सुर तान उचारे

दरशन अभिलाषी मग हेरत, रंग महल के द्वारे॥

(३९)

प्रात अलि पुंज मिलि रंग भवन गावें।

तीन ग्राम सप्त सुर सुराग मधुर भावें॥

ललित वीन झीन गति नवीन वीन ल्यावें।
मंद मंद कोउ मृदंग संग रंग छावैं॥
नूपुर झन झनकि झनकि रमकि रमकि आवैं।
स्वल्प तान भान भरी आन सों जमावैं॥
विविध रहसि गहसि विहसि विहसि पावैं।
चन्द वदन रमनि चपल चातुरी चलावैं॥
जुगल नेह देह मोहि लोचन ललचावैं।
माधुरी सुहाग रहसि लगि लगि सुनावैं॥
केलि सरस रेलि मानो काम रति लजावैं।
'कृपा निवास' आस लली लाल को जगावैं॥

(४०)

जागिये दोऊ मेरे जीवन प्रान॥

प्रात भई सब रजनि विगत भई, शशि दुति गई कुम्हलान।
सखि सरोज ठाढ़ी मग जोवति, उदित होउ जुग भान॥
नींद नेह तजि निज प्रेमिन कौ, पागिये प्रेम निधान।
'सियाअली' पिय छबि दरसाइये, मिलि दोउ रसिक सुजान॥

(४१)

मोरे प्रान के पियरवा जागो हो॥

सारी रैन तलफत मोहि बीती, छबि दरसावो भई अब भोरवा
तरसावो जनि इन अंखियन को, हौ तुम या दृगनि के दुलरवा

छबि रस प्यावो प्यास बुझावो, सरसावो सुख बसिके हियरवा
'सियाअली' शीतल करूँ छतियाँ,अंक भरूँ लिपटै दोउ गरवा।।

(४२)

जागिये सुन्दर सलोने प्रान के प्यारे पिया।
हे रसिक सिरताज मेरे नयन के तारे पिया।।
हैं खड़ीं ललना बिपुल सुठि सौज सब कर में लिये।
दर्शकों की भीड़ भारी देखिये द्वारे पिया।
मोद में रजनी सिरानी लालिमा नभ छा गई।
हो गये दुति हीन तारे चन्द सह सारे पिया।।
सुनि विमल वानी'मधुर'जिय जान के सम्हलो सुघर।
नव नागरी आनन्द हित,मुसकाय पट टारे पिया।।

(४३)

भोर भये जागहु दोउ रसिया, सखियन जीवन प्रान अधारे।
बंदी विरद वेद धुनि महिसुर, करत हृदय अति होत सुखारे।।
चहुँदिसि तें जुरि आईं अलियाँ, रसमय अनुपम राग उचारे।
शुक सारिका हंस दर्शन हित, रहे निहार सैन के द्वारे।।
युगल सुछबि दरशाय रसिकवर,कीजिये लोचन सुफल हमारे।
सदा रहो अनुराग पगे दोउ 'गुनशीला' मम हृदय सिरावै।।

(४४)

सखी मसहरी उठाये शीश नवाये, सियावल्लभ को जगावै।
चरन तल सोहरावें सिर में लगावै, निज भाग कौ मनावै।।

उठो प्राननाथ भोर भयो,

रजनी को तिमिर गयो अँखिया ललचावै।

प्यारे अब खोलो नयन मूँदें झपैं जनु, भोर कमल सुहावै ॥

अंखियाँ उनींदी री बार बार जमुहाई लेइ, झपि झपि जावै॥

'राजलता' तव कियो प्यारे को सावधान होय, प्यारी को जगावै

(४५)

चाँपत पाँय मुदित मन सखियाँ ॥

धीरे धीरे चरन पलोटत,

करत परस्पर युगल रस बतियाँ।

शीतल मन्द पवन लागत हिय,

ढौरत शीतल विजन लगि अँखियाँ ॥

मंद मुसकान युत सोवत छबि लखि,

'मधुर प्रिया' जुड़वत हैं छतियाँ ॥

(४६)

भोरहिं छबि पीतम के मन भाई ।

सब रस भरी उमंग बढ़ावत, हँस २ लाल जगाई ॥

अंजन खंजन सुकर बनावत, बसन सुगंध भिगाई ।

चोल सकेल सुभग तन बैठी कुच द्वै पान लजाई ॥

पोंछत वदन मदन रस सरसत प्रीतम प्रीत सवाई ।

कुच कुम्हिलाई कली उठावत, चुटकी चटक जमाई॥

अलक सवाँरत पलक उघारत सकल सौज अलसाई ।
पिय की गोद विनोद विहारिनि चमक अंग अंगराई ।।
नैन उघार सखिन सों बोलत वल्लभ सों मुसकाई ।
'कृपानिवास' जानकी प्यारो प्यार प्रिया उर लाई ।।

(४७)

गावति चन्द्रकला सिय प्यारी छवि छकि २ मतवारी ।
वीन बजावत मधुरे स्वर से मधुर ताल सुठिकारी ।।
सुनि जागे सिय प्यारी प्रीतम, आलस भरे खुमारी ।
बिनु दुकूल बैठे पलँगा पर, काहू सुधि न संभारी ।।
प्यारी लट छुटि सोह उरज पर, जनु नागिन दुतिकारी ।
भरि अनुराग परस्पर दोऊ अधरामृत रस पियत खिलारी ।।
दन्त नखों छत दोउ अंग झलकत,
मनो युग द्विरद बैठि लड़ि भारी ।
कबहुँ प्रेम भरि लपटि झपटि दोउ,
करि विपरीत क्रिया रसकारी ।।
प्रीतम प्यारी को कह प्यारे,
प्यारी प्रीतम को कह प्यारी ।
चन्द्रकला रुख पाइ 'अग्र अली'
यह सुख झाँकति झाँझरि द्वारी ।।
जो यह सुख निरखै नहिं नयनन,
जप तप योग व्यर्थ श्रमकारी ।।

(४८)

जीति आई काम केलि राम रंग राती ।
जागी निशि चारि याम बार २ जम्हाती ॥
पलटै पग धरनि धरत अधर सुधा माती ।
मंडल भुज जोरि मोरि अंग अंग अंगुड़ाती ॥
टूटे उर हार चिकुर कंचुकि उलटाती ।
अधरनि छत कल कपोल बनी पीक पाँती ॥
नख सिख हरसात गात वानी तुतराती ।
स्वामिनि छबि निरखि निरखि 'अग्रअली' जुड़ाती ॥

(४९)

रसमाते पिया उठि प्यारी जगावैं ॥
निजकर अंग सवाँरत प्यारे प्यारी कर छुटकावै ।
केश सुधारि कंचुकी सारी कर गहि अंक लगावैं ॥
चरन चापि पुनि चूमि चूमि मुख करतल पद सोहरावै ।
'प्रेम मोद' यह गुप्त महारस हिय बिच राखि दुरावैं ॥

(५०)

प्यारी को जागि जगावत प्यारे ।
जागु जागु मेरी प्राण प्राणनी, रैन गई हो रहे सकारे ॥

ठोड़ी पकरि कपोलन चूमत, वरवस कुच पर हाथ पसारे।
सुरति समर श्रमित अति प्यारी, निज कर श्रमहिं उतारे ॥
जागि परी जानकी तेही छिन, तब प्यारे अंक बैठारे।
करत परस्पर वार्ता रसमय, छिन २ करे मनुहारे ॥

(५१)

प्राण प्यारे दोऊ जाग उठे ॥

छिन जागत छिन सोवत सजनी, छिन डरपि पिय हिय लागे।
छिन अंगरात प्रिया इत उत चित, प्रेम रंग रस पागे ॥
छिन अलसात जंभात मदन बस, छिनहिं सवाँरत रति सांगे।
छिन भूषन छिन बसन संवारत, छिन रस गैलनि राग उठे॥
छिन २ अंग उमंग भरत रस, 'मोहनि' मनसिज जाग उठे ॥

(५२)

लखो सखि युगल नवल छबि आज ॥

आलस भरे लेत जमुहाई, अंग खुले लखि लाज।
अंसुक फेरि बदलि दोउ पहिरे, भूलि गये तन साज ॥
पिय पिय कहत उठी सिय प्यारी, प्यारी कहि रघुराज।
'प्रेमलता' सिय पिय छबि निरखति, गावत साज सुबाज ॥

(५३)

परी वलि कौन अनोखी वान।
ज्यों ज्यों भोर होत है त्यों त्यों पौढ़त हौ पटतान॥

आलस तजहु अरुनई छाई निशा विगत भइ आन ।
‘श्रीहरिप्रिया’ प्राण धन जीवन सकल सुखन की खान ॥

(५४)

दोउ सुख झांके झरोखें अलियाँ ॥
सैन किलोलत लोल रसिक मनि, मैन बढ़यो रस रैन सुघुलियाँ।
उघरे अंग संग जुग राजत, जनु सर पंकज कंचन कलियाँ ॥
उर २ अरत ढरत केसर वर, करत विनोद विपुल मदरलियाँ।
‘कृपा निवास’ बिलास विलोकत,
आस सखीजन मन की सुफलियाँ ॥

(५५)

आज दोउ अरुझि २ मुसुकात ।
कर कपोल गहि अरस परस दोउ नैनन सों बतरात ॥
अंश भुजा दिये प्यारी प्यारे, शोभा किमि कहिजात ।
दम्पति अधर सुधारस लोभी पीवत नाहिं अघात ॥
मद के भरे सियवर अरुझे उर, कर कठोर सरसात ।
‘प्रीतिलता’ यह छबि अवलोकी, आनंद उर न समात ॥

(५६)

आज सखी छबि प्रात समय को, वरनि कौन पै जावै ।
आलस भरे जंभात लाल दोउ, मलयज सेज सुहावै ॥
झुकि २ परत प्रिया प्रीतम तन, प्रीतम प्रियहिं जगावै ।
अरुझे बसन अरुझि रहि बेनी, मन अरुझे सुख पावै ॥

सखियन की अंखियां अरुझानी, अरुझनि कौन छुड़ावै।
यह छवि 'मोहन' नहि सखि सोहन, अपने हिय में बसावै ।।

(५७)

रजनी अल्प राम उठि बैठे, सोय गई स्वामिनि ह्वै गयो भोर
बार २ बिधु बदन बिलोकत, मानो पीवत सुधा चकोर ।।
बार २ चमकन डर कर सों, चिबुक चारु टकटोर।
जागि परी जानकी तेही छिन, आलस पगे नयन की कोर ।।
बहुरि अंक अरोपि प्रिया को, गौर श्याम सोभित इक जोर।
'अग्रअली' ऐसी छबि छाड़े, धिक जाको आवै उर और ।।

(५८)

प्रात प्यारे प्यारी को जगावै, प्रात समय सु बिचारी।
चरन कमल परसत कर कमलनि,बारहि बार सिहावहिरी।।
मधुप नैन लोभी सुख दीजै, मुख वारिज दिखरावैरी।
विहँसि उठी सिया लाय हिया पिय,आनंद उर न समाबैरी।।
विमल मयंक अंक लै बैठे, अमृत मयंक लजाबैरी।
दम्पति छबि सम्पति श्रीगुरुप्रद, 'युगलविहारिनि' पावै री।।

(५९)

सोय गई प्यारी भोर जगावत प्रीतम प्यारो।
कर सरोज फेरत मृदु गातन,मुद्रित नयन निरखि सुख भारो
लै लै कर कर धरत हिये पर,नेह बढ़ो उर अधिक उदारो।।

कीजै रस बतियाँ उठि प्यारी,सोय रही का नयन उघारो।
प्रीतम वचन बाल रविकर छुइ,प्यारी दृग सरोज उजियारो॥
वदन सरोज बिलोकि उठी हँसि,प्यारो हँसि कह बसन संभारो।
लै दर्पण ढिग गई अली इक,बदन विलोकत रति सुख सारो॥
चारुशिला (चन्द्रकला) उत्थापन आरती,
करत 'रसिक' उर मोद अपारो॥

(६०)

प्यारी लगत प्यारी बात रसीली,
प्रात समय बतरात ललन सों।
कछुक जनावत कछु विसरावत,
सकुचावत कछु कहत छलन सों॥
तुतरावत मुसक्यावत मद भरि,
सतरावत हँसि हेरि पलन सों।
'कृपा निवास' विलास छकी सिय,
पियहिं रिझावत केलि कलन सों॥

(६१)

दम्पति भोर उठे अलसाते।

जनकलली रघुवर पलँग पर, दोऊ झुकि झुकि जाते॥
बिखरि रहीं अलकें मुख ऊपर, झूमत दृग मदमाते।
'मोहनि अली' धन्य जग सो नर, जो यह दर्शन पाते॥

(६२)

पिया हिया लागि रहो न्यारे जनि जाउरे ।

गुरुजन की लाज काज हेरो जनि भोरे पिया,

सुमन की सेज सिया रस बस छाउ रे ।

पइयाँ परों तोहि मैं तो निसिपति निसदिन,

राका युत हित नित अवध बसाउ रे ॥

कुल गुरु नित हम पूजन सुकरिहौं,

उदय जनि होउ मैं तो हिया दुख पाउ रे ।

'नवल विहारी प्रिया' विछुरत पिया प्यारी,

मरनों सों भलो जनि जिया पछिताउ रे ॥

(६३)

मोरे पियरवा मैं तोरे संग जागी,

अब न टरौं लगि रहिहौं गरवा ।

रैन करी बस अब हमरे बस,

करिहौं कुवँर वर उर कर हरवा ॥

भोर भयो नहि चौंकि परचो कस,

कगवा हो वनमोरवा ।

'कृपा निवास' श्रीराम रसिक अब,

रस विलसो तजि लाज निडरवा ॥

(६४)

जागे रघुनाथ जानकी आलस भारी ॥

सस्मित ह्वै सुरत राग अरुन लोचन अति जम्हात,
ग्रीवा भुज उभय मेलि प्रीतम पिय प्यारी।
लटपटी सिर पाग लाल कुमकुम विन्दु मध्य भाल,
वर्षा ऋतु दिनकर मानो अर्भक उन्हारी॥
जाल रन्ध्र निरखति मुख कुवँरि के नकबेशरि सों,
अटकी लट श्री हाथ आपने सवाँरी।
सुन्दर सुहागनिधि जस पूरि रह्यो विश्व मध्य,
सुबस किये रामचन्द्र नहिं त्रिभुवन ऐसि नारी॥
गौर श्याम मनोभिराम वारि फेरि कोटि काम,
जीवन फल देखि देखि 'नाभौ' वलिहारी॥

(६५)

आज सखी दम्पति राजत भोर।
दशरथ सुत अरु जनकनन्दिनी विश्व विलोचन चोर॥
अलसानी दीन्हें गलबहियाँ अति सनेह दोउ ओर।
मायल करत करत हिय घायल चपल चखन की कोर॥
नयन कटाक्ष हास मृदु उज्ज्वल बाँकी भौंह मरोर।
'रामप्रसाद' प्रिया प्रीतम दोउ विलसत नवल किशोर॥

(६६)

प्रीतम प्यारी सिया सुकुमारी, जागे दोउ भोर।
आलस भरे ऐड़ात परस्पर, अँखियाँ अति चितचोर॥

नासामनि बेसरि अधरन पर, सरस हलत दुहुँ ओर।
मनहुं शुक्र सुरगुरु विचरतु हैं, कंज कोस की कोर।।
रूप गर्विता नव नागरि सिय,नागर नवल किशोर।
'युगलप्रिया' दोउ अवध छबीले जो कछु कहिय सो थोर।।

(६७)

सजीवन जीवन जुगल किशोर।
रैन ऐन मद नैन चैन चय, चखत चतुर चितचोर।।
हँसत हँसावत होस जोस बिन, बोस लेत रस बोर।
सुधि बुधि बिशद विहाय छाय छबि,होय रहे चन्द चकोर।।
आस पास सहचरी सोहागिनि, सिखवहिं मदन मरोर।
'युगल अनन्यअली' रसिया दोउ,उरझि रहे निसि भोर।।

(६८)

आजु विराजत पिय घनश्याम।
अलसोहैं झपकोहैं लोचन, सुन्दर ललित ललाम।।
सुरत समर बाढ़्यो जु परस्पर, लजित मनोज निरखि सुखधाम। विथुरी अलक कपोलन रद छद, श्रमकन झलकत भाम।। पिय नख छद अंग अंग बिराजत, छबि छाजत अभिराम। 'मोहनि' तन मन धन सब वारत निरखत श्यामा श्याम।।

(६९)

झुकत दोउ रसिया आलस माते।

कहुँ सिय पिय पर कहुँ पिय सिय पर, झुकि उठि पुनि मुसुकाते ।। तोरत बदन लेत अँगराई, छिनही छिन जमुहाते । पिय कच सिय श्रुति फूलन अँटक्यो, हँसि हँसि दोउ सुरझाते ।। प्रेमारस में छके छवीले, अति ही पलंग सुहाते । 'मधुरलता' ते धन्य धरातल, जो यहि छबि हिय ध्याते ।।

(७०)

गावो री सखि भोर बधाई ।

भरि लीजै दृग निरखि भोर सुख, बरसत है रस पीओ अघाई
रैन जगे रस रंग छके दोउ, भोर भये भोरी छबि छाई ।
अलसाने दृग झूमि रही कस, जनु निसि के रस देत बताई ।।
'सियाअली' किय प्रान निछावर, जब चितये दोउ मृदु मुसुकाई।।

(७१)

भोर भये जनि बिछुरो प्यारे, तुमको मेरी सौहैं ।
लागि रहो उर मेरे प्यारे, सुख को मानि समोहैं।।
'कृपानिवास' श्रीराम तिहारो, मोसी और न कोहै ।।

(७२)

उठे दोउ अलसाने परभात ।

दशरथ सुत अरु जनकनन्दिनी सौंधे भीजे गात ।
विमलादिक सखि चवँर ढुरावति हरषि निरखि मृदु गात ।
'अग्रअली' को श्रीरज दीज सकल भुवन के तात ।।

(७३)

भोर भये नव रंग महल में राजत जनक लड़ैती लाल।
श्याम गौर अंशन भुज दीन्हें कछु आलस युत नयन विशाल।।
प्रेम मगन दोउ उरझि रहे हैं कनकलता जनु डार तमाल।
'अग्रअली' तन मन धन वारति उझकि झरोखें झाँकति बाल।।

(७४)

हँसि हँसि सिय तन हेरत प्यारो।
भूषन वसन सुधारत सिय के, रसिकराज रस राजदुलारो।।
व्यजन करत देखत सिय मुख छबि,
करगहि सिय पिय अंक सुधारो।
'युगल अली' जीवत जीवन कल,
पिय लीला पर तन मन वारो।।

(७५)

दूनो बतिया मेरे श्रवन लगे री।
लाड़ लड़ी और लाल लाड़िले, बतरावत रस रंग मगे री।।
तुमसी सुन्दरि पाय प्रानिनी, मेरेहि भाग जगे री।
हमरे नयन सवादी हम सों, तुव छवि रहत पगे री।।
तुम ते अधिक रससागर को है, मोसे रसिक न गैरी।
तुमसों चपकि चतुर चित चौकस, चावरि चहन चिगे री।।
आज सलोनी सँग सहेलिन, सकल सु सौज सगे री।
'कृपानिवास' श्रीसिय सों पिय हँसि, बोलत बचन ठगे री।।

(७६)

प्रानिनी मैं तुव प्यार पल्योरी।

जागत स्वप्न सदा श्री जाचक प्रन गहि पल न चल्योरी॥
अपर नारि भासति नहि भावति, अब छन मन न छल्योरी।
सदा सुदृष्टि रावरी जापर, कामानल न जल्योरी॥
मन बांछित प्रद सरन सुखद सिय, सुरत स्वभाव ढ्रचोरी।
'कृपानिवास' लजीली मुरकनि, निरखि सुभाग फल्योरी॥

(७७)

प्यारी रसिक राम सों बतियाँ करत मुख मोर हंसत।
रस भरे भाव विनोद बिलोकत, प्रीतम को मन रंग रसत॥
बोलत कलित किलोकत बोलत, गरबीली गुनगान गसत।
'कृपानिवास' सिया स्वामिनि छबि, लालन परकर प्रान बसत॥

(७८)

सेज पर प्रेम भरे बतरात।

सुरति विनोद पगे पिय प्यारी, विहँसि चलावत हात॥
उर सों उर मुख मुखन मिलावत, श्याम गौर मृदुगात।
'प्रेमलता' ढिग मधुर मंजरो, बार २ बलिजात॥

(७९)

निरखु सखि दम्पति की छबि आज।

प्रात समय अलसानी छबि पर, बहु रति मनमथ लाज॥

वदन कमल पर अलकें छूटीं, जनु अलि माला राज।
किलकि २ कर अंगन परसैं, उठत नहीं कर नाज॥
काम उमगि तन सुधि कछु नाहीं, रसना स्वर से बाज।
घन ऊपर जनु दामिनि बिलसे, 'प्रेमलता' सुख साज॥

❀ कवित्त ❀

आसपास सहचरी नूपुर झनकार करे,
चम्पे की कली मानो फूली वेप्रमान की।
सौंधें की लपटें भरि भौंरन की,
वीनादिक बजन लागे उघटे कलगान की॥
गोखनि झरोखनि के परदे उघार दिये,
शोभा उमड़न लगी कोटि शशि भान की।
मिटि गये अमंगल भये मंगल 'किशोर सूर',
जगमगाइ उठी महल जागी श्रीजानकी॥

(८०)

सखि री कहा तप कियो सिया ने, जाके बस नृपराजदुलारो।
रंगमहल ऐकान्त सेज पर, होत नहीं कबहूँ पल न्यारो॥
करि श्रृंगार प्रिया छबि हेरत, पल न लग्यो सब भाँति सवाँरो
सिय संकल्प अनुगमन पिया को, रसिकराज यौवन मतवारो॥
जनकनंदनी मुख सो चन्द्रमा, राम चकोर पलक नहि टारो।
'युगलअली' सु भजो सिय प्यारी, तजो रूप यौवन कुल गारो॥

(८१)

जागे दोउ जिय के जीवन भोर ॥

बलिहारी सखि हँसि हेरनि पर, अलसाने दृग कोर।
बिथुरी अलकें छुटी कपोलन, चित चोरन वर जोर॥
ये प्राणन को प्यारो सजनी, किय मो दृग बिच ठौर।
'सिया अली' अब छके रहो नित, भोरी छबि लखि भोर॥

(८२)

सखि इक परदा दीन उठाय।

मनिन जटित जुग कोपर रूरे, छाया दरस दिखाय॥
पग प्रछालि मुख धोय कमल कर, सेवा सौज सजाय।
'प्रेमलता' उत्थापन आरति, करि सब माथ नवाय॥

(८३)

उठि बैठे दोउ सुभग सेज सखि, आरति करे मोद मन छाई।
जनकलली रघुलाल बदन छबि, निरखति दृगनि अघाई॥
बिहँसि चितयचित सुभगप्यारि तन, झुकि २ ऐंड़ि जँभाई।
बिथुरी अलक बिराजत अद्भुत, उपमा बरनि न जाई॥
मानो सुरति विजयी नृपति की, नील ध्वजा फहराई।
सोइ रस युगल 'रसिक अली' गावत, मृदु कर वीन बजाई॥
परिकर स्वामिनि संग मिलित स्वर, सुनि २ पिय मुसकाई॥

(८४)

देखरी दिखाऊँ तेरे मुख की निशानी।

मुकुर धरो कर वदन विलोको,
रैन की कमाई करी परै तोहि जानी ॥
रदन परस कछु दरस कपोलन,
काजर मध्य पीक लपटानी ।
'कृपा निवास' श्रीजानकी सयानी,
कपट चातुरी बोलत बानी ॥

(८५)

दीजै हमें या सुख की बधाई ।
बलि जाऊँ रस चिन्ह कपोलन, युगल नयन रस रंग समाई ॥
या रस की हौं लैहौं न्योछावर, विहँसि दुराबनि बात बनाई ।
'सियाअली' मुख चुम्बन पाऊँ, जो नित निसि या सुख दरसाई ॥

(८६)

रसिक दोउ प्रात उठे जमुहात ।
अलसाने दृग कमल अमल भरे, जुल्फ भँवर दरसात ॥
दोउ दुहुँन की छवि अवलोकत, नव सुखमा सरसात ।
'कान्तिलता' झाँकी अस माधुरि, को अस जेहि न सोहात ॥

(८७)

ललन जागे लखु आली किशोरी ।
पलंग पोश पै दोउ उठि बैठे, बिथुरि माल मोतीन लरी ॥
अरुझनि अलकैं झपकैं पलकैं, रस बस बतियाँ है पागी ।
'गोप्य अली' लगी अवलोकन, एक टक पल लप को न टरी ॥

(८८)

राम रसिक सों रस करि प्यारी, लसि रहि नैन खुमारी।
झुकि झुकि आवैं पलकैं अलकैं, मुख पर बिना सँवारी॥
'कृपानिवास' विलासिनि सियजू, पिय भायक मादक मतवारी॥

(८९)

नव रंग भीने भोर भावते, राम सिया संग सोहैं।
रैन जगौहैं नैन लगौहैं, मैन महा रस जोहैं॥
'कृपानिवास' विलासी दम्पति, रसिकन के मन मोहैं॥

(९०)

रंग रंगीले दोऊ सोय जगेरी।

बिथुरी अलकैं अलसी पलकैं, रंग सनेह सुरंग मगेरी॥
मद रस छके विराजत लालन, ललना के रस रंग ठगेरी।
'कृपानिवास' श्रीजानकीबल्लभ, सखियन के दृग निरखि पगेरी॥

(९१)

निरखु सखि दम्पति की छबि आज।

प्रात समय अलसानी छबि पर, बहु रति मनमथ लाज॥
बदन कमल पर अलकैं छूटीं, जनु अलि माला राज।
किलकि किलकि कर अंगन परसैं, उठत नहीं कर नाज॥
काम उमग तन सुधि कछु नाहीं, रसना स्वर से बाज।
घन ऊपर में दामिनि बिलसैं, 'प्रेमलता' सुख साज॥

(६२)

भोरहि भाव भरे प्रिया प्रीतम, जागे जीवन जान।
पल पल प्रेम पगे आलस बस, नैन बैन मुसकान॥
सैन चाव चित चैन मैन मद, सुधि सजि मौज महान।
'युगलअनन्य अली' दम्पति विधु, बदन दृगन अरुझान॥

(६३)

जागें पिय प्यारी मुसकात।

भूषन बसन सम्हारी सहचरि, दृग सरोज अलसात॥
भृकुटी विकट नैन अरुनारे, शिथिल रसीले गात।
'मोहनि' ललित तमाल श्याम पट, गौर बेलि लपटात॥

(६४)

आलस नैन आवत घूम।

लाल चुटकी दै जगावत, खुले ताकत घूम।
खसत भुज पिय अंश ते, सम्हराय लै कर चूम।
'मोहिनी' हित रूप घूंघट, वदन पर रह्यौ झूम॥

(६५)

प्रात भये जागे दोउ रसिया, अवध छैल मिथलेश लली।
मुख सरोज मकरन्द सुछबि हित,आइ जुरी सब नवल अली॥
गूँजि उठेउ वर कुंज मनोहर, मानहु सुचि रसधार चली।
छूम छननन छमकत पग नूपुर, झमकत भूषन बसन मिली॥

हीरक मनिमय सुभग पलंग पर, बैठे दिये गलबांह भली।
नीन्द बिबस चख मूंदत खोलत, रवि शशि लखि जनु कमल कली।
एक सखी पूछत मृदुबानी, सुनिये प्रीतम छैल छली।
जागि कहाँ सब रैन गँवायो, जाते अवहुँ न आँख खुली॥
वचन हास रस सुनि पिय मुसुकत, कहाँ गयउ मैं तोर गली।
सुनि 'रसराज' वचन अस पिय के,
विहँसत अलिगन सकल मिली॥

(९६)

पलंग ते उतरे अवध विहारी।
झूमत झुकत चलत जमुहाते, दोउ गलबहियाँ डारी।
आगे सखी पांवडे देवे, गेंद उछारत लखि पिय प्यारी॥
हास विनोद करत नानाविधि, आये महल के द्वारी।
'श्रीरसमोदलता' दोऊन को, सिहासन बैठारि आरती उतारी॥

(९७)

अंखिया मदन मद छाके सियावर।
झूमत झुकत जमुहात परस्पर, प्यारि प्रेम रस पागे।
घुंघरारी अलकें मुख ऊपर, जनु नागिनि लहराते।
पलंग पोसते उतरि चले दोउ मद, हंस गति लजाते।
गलवहियाँ दोउ दीने परस्पर, मंद मंद मुसुकाते॥
आये विराजे मनिन सिहासन, 'अग्रअली' वलि जाते॥

(९८)

रजनी जागे भामिनि आवत, संग मधुप उचरत जय गान ।
डगमगात पग परत धरनि पर, राम अधर रस कीन्हो पान ।।
आलस भरे ऐंड़ात जानकी, मुदित मगन राखो पिय मान ।
अंग अंग औंघाहि देत सुख, सर्वस अरपि लियो रतिदान ।।
सुवस किये सुन्दर वर रघुपति, त्रिभुवन युवती नहिन समान।
सहचरि सबै विलोकि विबस भइ, 'अग्रअली' वलि वारत प्रान।।

(९९)

युगल नैन छई अलसान ।

घूमत झूमत झुकत छबीले, प्यारी प्रीतम प्रान ।।
उठि जमुहात सिथिल पट भूषन, सुन्दरता की खान ।
अधरन अंजन रेख सुहावन, लागे पीक लीक सुखदान।।
करत निरन्तर प्रगट प्रेम रस, आलिगन चुम्बन सम्मान ।
'सरस माधुरी' अधर सुधा रस, पीवन की नित वान ।।

(१००)

चले दोउ रंग महल ते डगमगपग ।

प्यारी अंश पिया भुज दीने, पग धर धरनि निहाल ।
नेह मगन रस सिन्धु सुभगतन, अंगन छवि झलकत सुख जाल।।
छत्र चवँर व्यजनादिक चहुँदिशि, राजत राज तनय प्रिय बाल।
विरदावलि वर बन्दि बाल सब, गावत 'अग्र' विरद प्रिय पाल।।

(१०१)

आज प्रात रघुनन्दन की छबि,
सखिगन देखि २ हँसहि परस्पर।
जावक भाल लाल के लालित,
जनु बिधि अंक कलंक मयंक कर॥
वाहि कौ हार पहिरि हरि वर उर,
कुच को अंक जुगल सोभा वर।
'राम चरन' फूलेउ तमाल तरु,
ता बिच सुभ जनु उदँ युगल गर॥

(१०२)

कहो श्याम रतिया विताई कहाँ है।
अधर रेख काजर की पाई कहाँ है॥
दसन दाग संयुत युगलवर कपोलन,
निशा के जगे युग नयन में छबीले,
नवल नायिका छबि समाई कहाँ है।
'मधुर' रस बताओ सकुच छाड़ि प्यारे,
सुधा प्रेम धारा बहाई कहाँ है॥

(१०३)

राम लला निशि कहाँ गवाँयो,
किन कीन्हों यह हाल सुभग तन।
कंकन लीक पीक पट भूषन,
सकल विपर्यय कहँ तुम्हार मन॥

आलस त्याग लखो दर्पन मुख,
लाल लाज बड़ वेद लोक जन।
'राम चरन' खंडिता मध्य रस,
गावति राग विभास तीनि गन।।

(१०४)

होललन तुम कँहवा से आये जगे।
मैना पिछानी थारी अँखियाँ खुमारी, प्रेम रंगन में पगे।।
अंजन अधर कपोल महावर, नैना तमोल लगे।
'कृपानिवास' गवनो वा भवनें, जहँवा तुमारी सगे।।

(१०५)

❁ प्रिया जू का मान ❁

मानवती ललना को हँसि २, राघवलाल मल्हाई मनावत।
चादर छोर पोछ मुख वीरी, निजकर ताहि पोल्हाइ पवावत।।
सुमन माल पहिराय दुलारत, निजकर विजन डुलावत।
जबसे तुम बोलो नहि हँसि हँसि, तबसे नैक चैन नहिं पावत।।
अस कहि चिबुक गहे प्यारी के, चरन गहन को हाथ बढ़ावत।
'काँति' उठी हँसि मान त्याग के,
भुज भरि पिय को हृदय लगावत।।

(१०६)

चले दोउ मंगल कुँज सुहाये।
अरस परस कर गहि वर गति से, हंस गजादि लजाये।।

दोउ दिशि सखी खड़ीं मग माहीं, मंगल सगुन बनाये।
बहु सखि चक्रवाक लिये केकी, सारस हंस सुहाये॥
भूषन बसन आदि बहु साजे, बरनत पार न पाये।
'प्रेम' आरती करि कुँजेश्वरि, सिंहासन पधराये॥

(१०७)

सखि निरखु सु मंगल कुँज, रचना अजब बनी।
रतन जटित मनि खम्भ सु ऊपर, चन्दन सुभग तनी॥
फर्स मखमली लाल सिंहासन, अनुपम ज्योति घनी।
बैठे पिय प्यारी तेहि ऊपर, रति पति मान हनी॥
करहिं सिंगार नवल ललना मिलि, रचि २ नेह सनी।
'रसराजन' वलि जात निरखि छवि, सुख नहिं जात भनी॥

(१०८)

करैं सखी मंगल विधि सुविचारी।
मंगल कनक कलश सरयू जल, भरि लाईं अलि चारी॥
दूब हरद दधि जव अंकुर नव, श्री तुलसीदल धारी।
भरि मनिथार जुगल अलि सुन्दरि, कर कंचन सुकुमारी॥
कोउ मधुपर्क पवाय गाय मृदु, कोउ नाचत दै तारी।
बाजहिं बीन मृदंग मधुर सुर, जय जय सुमुख उचारी॥
सुमन बरषि 'ज्ञाना अलि' बहु सखि, लेत खड़ीं बलिहारी॥

(१०९)

दरसावो सखि मंगल थार॥

मंगल सरजू जल भरि झारिन, मुख प्रछालि भरि प्यार।
मंगल छबि दरपन दरसावो, करि मंगल श्रृंगार॥
धूप दीप मंगल दधि मिसरो, फल मेवादिक सार।
जल युत अरपि करो अचवावन, वीरि मसालेदार॥
मंगल अतर सुगन्ध लगावो, पहिरावो उरहार।
'सियाअली' करि मंगल आरति, गावो मंगलचार॥

(११०)

राम सिया पग धोवति अलियाँ।
मृग मद मलय कपूर सु केशर,
सुरभित जल झारी कर भरियाँ॥
विहँसि मलति धोवति हिय लावति,
चूमति शीश नैन परसतियाँ।
गोद राखि 'सौंन्दर्य' चरन दोउ,
चिन्ह विलोकति निज सुख थलियाँ॥

(१११)

सेवा सौज लिये सब नारी, मुख परछालत कंचन झारी।
कोइ रद मज्जति पटु पट परसति, कोइ सखि अलक सँवारी॥
कोइ बेसर बल गुञ्ज सुधारति, कोइ कुण्डल झुमकारी।
कोइ पगिया के पेंच बनावति, कोइ झलकावति सारी॥
कोइ दृग अंजन तिलक तमोलनि, कोइ कुच कंचुकी धारी।
कोइ तकिया पर गेन्द बिछौना, पधरावति पिय प्यारी॥

कोइ मृदु भाय जनाय लड़ावति, सुकुमारति सुकुमारी।
'कृपानिवास' श्रीजानकी वल्लभ, छबि पर भइ बलिहारी॥

❁ छन्द ❁

कोइ सखि धूप सौज सजि दिव्य सुगन्ध मई।
श्री रामाय नमः पढ़ि धूपारपन कई॥
आनन्द युत सखि धूप सीय रामहि दई।
दुइ सखि पुनि मुख पोछत पट उज्ज्वल लई॥
दुइ बाती को दीप अनूप सँवारि कै।
सीय राम रुख पाइ कमल कर धारि के॥
कोइ सखि दीपक दिव्य करति चख जोरि के।
नख सिख अंग २ लखि रहि चन्द चकोरि कै॥
कोइ सखि दीपक मन्त्र उचारहिं गाय कै।
मानिक दीप लिये दुइ सखि अति भाय कै॥
करि दीपक मुख पोछि राम सिय मन लई।
'राम चरन' सखि भोजन मंगलमय दई॥

(११२)

मंगल मूरति सिय रघुराई। मंगल सखि मधुपर्कं लै आई॥
श्री सीताराम सु पाई। जुगल मंत्र करि अर्पित भाई॥
पावत सियाराम मनभाई। मंगल भोजन अतिहि सुहाई॥
दधि मिश्री मिश्रित रुचि राई। अपर स्वाद रस आदि मंगाई॥
रस २ पावत सिय रघुराई। तस २ देखि सखी मन भाई॥

पुनि दुइ सखि जलपाल कराई।
कछु चीनी करि दूध पवाई॥
पावत सखि रस गारी गाई।
प्रीति राम सिय बरनि न जाई॥
दुइ सखि जल लै बदन धोवाई।
दुइ सखि मुख पोछहिं सुखदाई॥
'राम चरन' तब पान पवाई।
मंगल आरती दिव्य बराई॥

(११३)

मंगल भोग समय सुखकारी, जोवत प्रीतम प्यारी।
मंगल मेवा मगद सुमोदिक, लड़ुवा लाड़ लड़ारी॥
कछुयेक चाट सलोने लोने, दोने कनक सुथारी।
फैनी फैन मलाई दधि सों, लपटी सुभग सोहारी॥
कछुक दिखावति रुचि उपजावति, हरषि जिमावति नारी।
सुभग कटोरें सलिल पिवावति, कर धरि कँचन झारी॥
अचवन करि भरि बीरी मसालनि, गरी कपूर सुपारी।
'कृपानिवास' उपास प्रसादी, बाँटति सब अधिकारी॥

(११४)

मंगलिका मनिथार कटोरनि, लै मधुपर्क सु आई।
निज कर कमल सिया रघुवर मुख, देत महा सचुपाई॥
सुचि सुषमा मूरति मनु पूजत, रमा प्रीति अधिकाई।
जब पिय प्यारी अरस परस मुख, देत उपर उपमाई॥

जनु सुषमा श्रृंगार सुमूरति, बिलसत प्रेम बढ़ाई।
मंगल चौक साथिया गजमनि, पूरन कुम्भ धराई॥
मुक्तामनि भरि थार आरती, वारत सुख उरछाई।
लखि लखि जुगल सुछवि मन मोहनि, देह दसा बिसराई॥
कल कंठनि गावत रस छाकी, बाजे मधुर बजाई।
'रसिकअली' बरसत कुसुमावलि युगल जयति धुनि छाई॥

(११५)

भोजन मंगल सखिन करावत।
दरस परस षटरस व्यञ्जन नव, पिय प्यारी रुचि पावत॥
चुम्बन चोष्य लेह्य आलिगन, प्रेम मनोज मौज मन आवत।
दसन कपोल भोग भोगत दोउ, 'मोहनि' हरषि निरखि गुन गावत

(११६)

अधर अमी अचवत नट नागर।
मत्त मुदित अनुराग परस्पर, बढ़ो सरस रस सागर॥
विथुरी अलक झलक मुख ऊपर, कोक कला अति आगर।
'मोहनि' उरझि रहे हिलि मिलि दोउ, करत बिनोद उजागर॥

(११७)

नट नागर रुचि वीरी पावत।
करत कटाक्ष परस्पर दोऊ, दृग अंजन खंजनहिं लड़ावत॥
कंचुकि बन्ध छोड़ि पिय करसों, हृदय सरोज उरोज लगावत।
'मोहनि' उमगि उमगि बिलसत दोउ,
यह रस सखि जन जीव जिवावत॥

(११८)

मंगल आरति करति सहचरी।
कंचन कोपर मंगल भरी ॥
मंगल रूप धरे पिय प्यारी।
गावति सब मंगल अधिकारी ॥
मंगल समय विराजत लोने।
मंगल राम सिया छबि सोने ॥
मंगल गान बजै मंगल धुनि।
मंगल मंदिर नाचत रुनझुनि ॥
मंगल पवन सुगंध महल में।
मंगल माती रूप गहल में ॥
मंगल धूप दीप न्यौछावरि।
मंगल रंग अभंग अमावरि ॥
मंगल 'कृपा निवास' उपासी।
भये सुमंगल विगत उदासी ॥

(११९)

मंगल राम जानकी जोरी।
मंगल आरति सखिन सजोरी ॥
मंगल थार रतन भरि पूरन।
बाती घृत कपूर रुचि बोरी ॥
निरखहिं रूप श्याम श्यामा को,
घन दामिनि उपमा अति थोरी।

बहु सखि ताल मृदंग बजावहिं,
बहु सखि मंगल गान करोरी ॥
वहु सखि सुमन माल बरषत भईं,
'राम चरन' वहु नृत्य रचोरी ॥

(१२०)

कुंज में जय जय धुनि रही छाय ।
कोइ बोलहिं जय सिय प्यारी की, कोइ कहे जय रघुराय ॥
सिय पिय की परिकरमा करहीं, सब सहचरि गुन गाय ।
करहिं नाम धुनि नाचि २ सब, पग नूपुर झमकाय ॥
चहुँ दिशि ते प्यारी प्रीतम पर, सुमन माल बरसाय ।
दम्पति छबि 'रसकान्तिलता' लखि, बार बार वलि जाय ॥

❀ दोहा ❀

चरनोदक सियलाल के, प्रेम सहित करि पान ।
युगल ललन पर वारहीं, अलि तन मन धन प्रान ॥
अतर पान माला कबहुँ, भूषन वस्त्र प्रसाद ।
पिय प्यारी से पाय 'अलि', छकी रहै सुख स्वाद ॥

(१२१)

सदा मंगल सदा मंगल, सदा जोड़ी की मंगल हो ।
हमारी सिय सुहागिन की, सदा पिय संग मंगल हो ॥
सदा मंगल प्रमोदवन की, हो मंगल रास मंडल की ।
सिहासन छत्र का मंगल, चंवर दुहुँ ओर मंगल हो ॥

सखा प्रिय दासों का मंगल, सिया सखि रासि का मंगल ।
अली श्रीचारुशीला (चन्द्रकला) की, सदा मंगल सुमंगल हो ।।
सदा बाजा बजे मंगल, सखी सब गावही मंगल ।
जो नृत्यति हैं अलीगन की, सदा संगीत मंगल हो ।।
न होवे मान प्यारी को, दुखावे दिल न प्रीतम का ।
सदा अंग अंग से अरुझे, निहारें 'नेह' मंगल हो ।।

(१२२)

छबि माधुरी सिय श्याम की मंगल मनाती हूँ ।
मंगल मनाती हूँ दिठोना लगाती हूँ ।
युग चन्द्र की सुखमा लखी अँखियाँ जुड़ाती हूँ ।।
जैसी लावण्यता निधी मिथिलेश नंदिनी ।
वैसे सलोने लाल की उपमा न पाती हूँ ।।
धन दामिनी सकुचाइके नभ दूर ही रहे,
रति काम की छबि वारते मन में लजाती हूँ ।।
छबि सिंधु में लहरें उठें छिन छिन नवीन ही,
तामें डुबूँ लहराऊँ कभी ना अघाती हूँ ।
बड़भागिनी अलियाँ सभी पद कंज सेविका,
धन भाग 'नेहशीला' जो इनकी कहाती हूँ ।।

(१२३)

जय जय कुँजविहारिनि प्यारी, जय जय अलक लड़े सुकुमार
जय जय नित्य किशोरी गोरी, जय जय जीवन प्रान अधार ।।

जय जय प्रीतम की उरमाला, जय जय श्रीस्वामिनि सरदार।
जय जय 'श्रीहरिप्रिया' युगलवर, बार बार बलिहार॥

(१२४)

निज नव कुँज बिलासी की जय जय।
नवलकिशोर गौर मम स्वामिनि, नवकिशोर सुखराशी की जय जय
नवलनागरी नागर दोऊ, नवल विहार विलासी की जय जय
नवलप्रिया 'हरिप्रिया' हिये में, नव आनन्द प्रकाशी की जय जय॥

(१२५)

मंगल मूल दोऊ पिय प्यारी।
पगे परम अनुराग परस्पर, मंगलमय अंशन भुजधारी॥
निरखत नेह भरित दृग कोरन, मंगलमय निरखत बलिहारी।
मंगलमय लगि कंठ मुदित मन, करत केलि कल मंगलकारी॥
मंगल मोद विनोद विविध विधि, मंगल हँसनि लसनि मनहारी
मंगल 'सीतासरन' निरन्तर, युगल सुछवि लखि तन मनवारी॥

❀ नजरवाग में झूला ❀

शयन भवन से बाहर चहुँदिशि प्रांगन सोहै।
नगरवाग तहँ प्रगट राग जनु तनु धरि मोहै॥
पूरब दिशि तहँ डोल कुँज छवि पुंज सोहावन।
वाग तड़ाग विभाग सहित अति मनहिं लुभावन॥
सोभा यात्रा सहित वालगन लालन ल्याये।
सोभा तहँ की निरखि २ प्यारी हरसाये॥

ऊँघत युगल विलोकि उनीन्दे नयन निहारी ।
सजग करावन डोल विठायउ सखि पिय प्यारी ।।

❁ दोहा ❁

कनक महल के अजिर में, नजर वाग छवि छाय ।
डोल कुञ्ज राजै तहाँ, सिय पिय झूलत आय ।।
हिलि मिलि झूलत डोल दोउ, अलि हिय हरने लाल ।
लसत जुगल गल एक हो, सुसम कुसम मय माल ।।

(१२६)

रतन हिंडोर विचित्र पलँग पर,
रूप रासि सिय पिय दोउ राजत ।
गौर स्याम तन छवि आभा लखि,
कोटि कोटि दामिनि घन लाजत ।।
भूषन वसन दीप्ति अंगन लखि,
ध्याता रसिकन हिय तम भाजत ।
'युगलअली' गीतावलि गावत,
दम्पति निरखि सेवा सुभ साजत ।।

(१२७)

झूलन पधारो जी श्याम सुजान ।
सुनि वानी रस सानी प्रीतम चले झूलन को चढ़ि सुख भ्राज ।।
कुँजेश्वरि मग जोहति प्यारे सेवा सौज सकल सुख साज ।
'कृपा निवास' अली को जीवन गर लागी तजि लाज ।।

(१२८)

झुलन पर मन्द मन्द मुसुकात ।
प्यारी अंस सुभुज धरि प्रीतम,
अवलोकत अलसात ॥
छिनक मुँदत दृग छिनत खुलत छवि,
उदधि अधिक अधिकात ।
अलिगन तत्सुख झीन लीन नित,,
लहि अँग अँग पुलकात ॥
यक सखि चतुर सुतुर आतुर ह्वै,
अतर घ्रान बरसात ।
आलस गयो भयो नित नव मुद,
जुगल सुवलि वलि जात ॥
गान तान रसखान होन लग्यो,
सुखमा रस रसि बात ।
प्रभा 'मोहिनी' मोहन छवि पर,
निरखत मन न अघात ॥

(१२९)

हिंडोरा आज अनोखो रंग ।
कनक भवन आन्दोल कुंज बिच, छाई तान तरंग ॥
विमला कमला चन्द्रकलादिक, झोंका देत उमंग ।
सारंगी स्वर मंडल वीना, झांझ मृदंग उपंग ॥

आनन्द छाय बजावत अलि बहु, कोउ गति लेत मृदंग।
'रसिकअली' सिय पिय विलास लखि, मोहे रती अनंग ॥

(१३०)

झूलत रसिक मनि रघुचंद।
संग सखी अलबेली नागरि, वदन छबि बहु चंद ॥
रतन जड़ित हिंडोलना लखि, सूर्य शशि दुति मंद।
'रसिकअली', अलिगन झुलावत, फँसी छबि के फंद ॥

(१३१)

झुलन पर अरुझि गये पिय प्यारी।
भूषन से भूषन पट पट से श्याम गौर मनहारी ॥
जंघा जानु उरु कटि कटि से नवल अंग छवि भारी।
उर उर से मुख मुखनि मिलाये भुज से भुज अँकवारी ॥
तन मन प्रान जीव एक कीन्हे प्रीति सुरीति अपारी।
'प्रेम मोद' यह अनुपम अरुझनि निरखत अलिन सुखारी॥

(१३२)

झुले दोउ रसिया आलस माते।
कहुँ सिय पियपर कहुँ पिय सिय पर, झुकि उठि पुनि मुसुकाते॥
तोरत बदन लेत अँगड़ाई छिनहि छिन जमुहाते।
पिय कच सिय श्रुति फुलन अटके, हँसि हँसि दोउ सुरझाते ॥
प्रेमालस में छके छवीले गलवहियाँ लपटाते।
'मधुरलता' ते धन्य धरातल जे यह छवि हिय ध्याते ॥

❀ दोहा ❀

लखि श्रमित झूलत पिय, प्यारी भरि लइ अंक ।
लै गोद पिय झूलन लगे, लखि छवि बदन मयंक ।।
सन्मुख सरस झुलवन लगी अलि, झमकि झोंक देत ।
प्यारी छबि पिय कंठ लगि, अली सो रस लेत ।।

(१३३)

रसिक दोउ ह्वै रहे चंद चकोर ।
भूषन पट प्रतिबिम्ब परत तन, श्याम गौर चित चोर ।।
नेह सिन्धु उमगत उर उज्जवल, अरस परस रस बोर ।
नाना भाव भेद दरसावत, नयन कोर दोउ ओर ।।
सहि न सकत विन देखे पल पल, वीतत बरस करोर ।
'प्रेम मोद' विछुरन के भय से लिपटै युगल किशोर ।।

(१३४)

झूलैं प्यारी झुलावैं प्यारो ।
मधुर मधुर कर कंज मंजु गहि, रेशम रजु सुकुमारो ।।
नैनन निरखि नवेली विधु मुख, मंद हँसनि नृप वारो ।
उरझि रहे अंग अंग रंस रस, सुरझनि अगम निहारो ।।
'युगलअनन्यअली' दोउ नेहिन, ऊपर सरवस वारो ।।

(१३५)

झुलावत राम रसिक पटरानी ।
नेह नाह को निरखि नागरी, नैनन में मुसकानी ।।

कर गहि डोर चकोर दृगन करि, चितवनि चंद लुभानी।
'कृपा निवास' बिलासिनि प्यारी, प्रीतम को रस दानी ॥

(१३६)

झूलत राम राजिव नैन ॥
अतिहिं झूलत मनहिं फूलत, रसहिं तोषत मैन।
लाल के उर लागि शोभा, सुख की रेखैं ऐन ॥
परस्पर अनुराग दम्पति, बदत मधुरे बैन।
जाल रंध्रनि निरखि वनिता 'अग्र', आनन्द दैन ॥

(१३७)

झूलन पर लाल लली की करत आरति।
कंचन थार कपूर की बाती, सखि हिंडोर कुंज की आरति ॥
झालरि झाँझ मृदंग विना धुनि, छाय रह्यो जल पट मनि वारति
वन विहार हित चले गल भुज दिये, पुष्प पाँवड़े डारति ॥

(१३८)

सदा सुख सरसो श्यामा श्याम ॥
ऐसे अचल राग अनुरागन, अरुझैं अंग अभिराम।
पिय प्यारी की प्रीति परस्पर, पगो रहे वसु याम ॥
मिसरी मिलित मीठ मृदु माखन, शब्द धातु धन दाम।
युग युग जियो युगल जोरी यह, 'मधुरी' पूरन काम ॥

(१३९)

प्रात समय दोउ विहरत बाग ॥

नृपनन्दन अरु जनक नन्दिनी, अलसाने सुख पाग।
उरझनि हार वसन की विखरनि, अटपट अलियन लाग॥
मीन मृगन गज हंस विलोकत, भ्रमर कंज अनुराग।
कोकिल कीर चकोर सोर कर, मोर 'अग्र' पिय जाग॥

❀ वन विहार ❀

मोपै रस की चितवन डारी, प्यारे दशरथ जू के लाल॥
विहरत फिरत प्रमोद विपिन में, श्याम वरन मनहारी।
कटि पीताम्वर धोती सोहै, लाल पाग सिर न्यारी॥
तापर तुर्रा अधिक मनोहर, मोतियन झालर दारी।
नासामनि की लटक चाल पै, 'युगल प्रिया' वलिहारी॥

(१४०)

ठाढ़ो रे प्रमोदवन अवध दुलारो रे॥
लटपट चाल अनोखी झाँकी,
देखत हिय ठगि जात हमारो रे।
बोलत वचन सुधा जनु वरसत,
चितवन में टोना पढ़ि डारो रे॥
यहि निकुंज वन कहँ तू आई,
कहि मोतन हँसि नेक निहारो रे।
'मोहनि अलौ' सुनत पिय वतियाँ,
नैनन छुटत नेह जल धारो रे॥

(१४१)

दृगन भरि छवि लखु सिया रघुवीर।
कनक भवन विहरत प्रिया प्रीतम, श्यामल गौर शरीर॥
अंग अंग नवरंग रँगे वर, लसत सुरंगी चीर।
फूलछड़ी प्यारी कर राजत, पिय कर सुचि धनु तीर॥
नजर वाग अनुराग लाग फल, नचत मोर गन कीर।
नर देही सुमिरन वैदेही, हेतु वदत मुनि धीर॥
हृदय पत्र लेखनी प्रीति करु, तत्त्वमसी मुद नीर।
'जानकी वर' दम्पति सुख सम्पति, लिखले सखि तसवीर॥

(१४२)

घूमि घूमि देखत फुलवाई की निकाई।
फूली लता चहुँदिशि शोभित, त्रिविध समीर बहत सुखदाई॥
फूलन की क्यारी बहु न्यारी, सुरुचि सुगंध रही मँहकाई।
'सरस माधुरी' रस मतवारे, पीवत अधर मधुर मुसकाई॥

(१४३)

सियाजू हंसनि मोती चुगावें।
अति हितकारी चुचकारी कर, बार बार दुलरावैं॥
प्रिया कर प्रभा मिलित प्रवाल उर,
गहत न मुख छवि लखि रहि जावै।
तब स्वामिनि लै गोद मोद जुत, कहत मुक्त ही है यहि पावै॥
हंसनि तू सब भाँति प्रसंसिनि, जेहि लाड़िली निज हाथ पवावै
'युगल विहारिनि' धन्य २ तव, भाव विभव प्यारी हिय भावै॥

❀ अथ दन्तधावन कुञ्ज ❀

दूती प्रार्थना–

पद–१

विनय सुनिये महराज कुमार ।
दूती दतुअन कुंज से आई, देखिये करत जोहार ।।१।।
कुंजेश्वरि मग जोहति प्यारे, सेवा सौज सुधार ।
'कांतिलता' स्वामिनि संग चलिये, जीवन प्रान अधार ।।२।।

दतुअन कुँज प्रस्थान

मनिमय मनोहर ताम दान में विराजे लाल,
प्यारी संग ददुअन कुंज चले उमगाय के।
देव गन्धर्व यक्ष किन्नर कन्यायें जाय,
गगन से सुमन वरषाती हरषाय के।।
मार्ग की दुहुँ ओरी पाँती से खड़ी हैं गोरी,
मंगल कलश लिये आरती सजाय के।
रंभों के खंभो से सजे हैं उभय भाग,
नहरों में सरयू धार बहती छहराय के।।
प्रीतम सहित समाज कुंज द्वारे पर आये,
जनु उछाह के सिन्धु उमग सोहत लहराय के।।

(२)

चले दोउ दतुअन कुंज सोहाये ।
ताम दान चढ़ि के पिय प्यारी, सखियन कान्ह लगाये ।।

दुहुँ दिशि सखी खड़ी मग माहीं, मंगल सगुन बनाये।
बहु सखि चक्रवाक लिये केकी, सारस हंस सुगाये॥
चमर छत्र बिजनादिक सौजें बरनत, पार न पाये।
'प्रेमलता' करि आरति कुंजहिं, चौकी पर पधराये॥

(३)

❀ स्वागत आरती ❀

स्वागत में सियलाल की सखि आरति करिये।
छवि लखि युगलकिशोर की हिय आनन्द भरिये॥ १॥
मंगलमय शृंगार किये मंगलमय सोहैं।
अरुनारे अलसान नयन, निरखत मन मोहैं॥ २॥
वीरी रंजित लाल अधर मुसुकनि मन हरनी।
नासामनि यकि यन्त्र धरे सबके बस करनी॥ ३॥
युग युग लौं जोवे सदा मनभावन यह जोड़ी।
'कान्तिलता' निरखत रहौं निसदिन तृन तोरी॥ ४॥

दोहा :—

स्वागत पूर्वक ले चली, कुंजेश्वरि ललि लाल।
चली पाँवड़े डालती, रंग रंगीली बाल॥१॥

(४)

दतुअन करत दोऊ मिलि जोरी।
दशरथ सुत श्रीजनक किशोरी॥

मृगमद मलय कपूर सुवासित,
युगल दतुन सखि दइ गोरी।
इक प्यारी इक प्रीतम के कर,
मंजन लगे दंत सुखसोरी॥
हँसि हँसि मंजन करत परस्पर,
बातें करत मधुर मुसकोरी।
दंतावलि झलकत दोऊन के,
छिटकि रही कर चंद्र करोरी॥
दोउ के दंत धोवावत हँसि हँसि,
'अग्रअली' सन्मुख रसबोरी॥

(५)

दतुअन करत सिया रघुराई।
सुन्दर सुखद रसीली दतुअन, रदन धरत छबि छाई॥
सखि कर जल परसत दोऊ, मुख प्रक्षाल अँगुछाई।
'अग्रअली' उरझी चितवनि में, मंद मंद मुसकाई॥

॥ वल्लभ कुंज ॥

(६)

रसिक दोउ वल्लभ कुंज सुहाते॥
मनिन जड़ित चौकी पर बैठे, मन्द मन्द मुसुकाते।
सरयू जल झारी कर लीन्हे, युग सखि डारत जाते॥
कोउ सखि मुख पोछन पट लीन्हें, युगल ललन बतराते।
चन्द्रकला सखि सौज सवाँरे, 'नेहलता' वलि जाते॥

॥ कवित्त ॥

अष्टगंध धूप जामें रुचिर सुगंध उठे,
भाव सों रंगीली लली लाल को सुंघावती।
गो घृत कपूर डारि अतर में भिजाइ बाती,
सुरंग सुदीप मंगल हेतु दरसावती॥
मेवाचूर केसर कपूर आदि गंध डारि,
माखन और मिसरी भरि प्यार सों।
लाड़ को लड़ावे लाल प्यारी को रिझावे,
सो रंगीली ललनाऐं 'रसकान्ति' मनभावती॥

॥ कवित्त ॥

कागजी बदाम ताको घिस कर महीन करे,
कामधेनु दूध आधा औंटि के मिलावती।
मिश्री मलाई रुचि अँतर सोंधाई,
धरि मनिन गिलास लाल प्यारी को पिवावती॥
केवड़ा गुलाब जल झारी में सुगन्धित,
पुनि दम्पति कमल कर वदन को धोवावती।
इतर सुँघाइ फूल माल पहिराइ,
अली वीरी सु रसीली लली लाल को पवावती॥
छत्र को फिरावे सिर चवँर ढुरावे,
कोइ मुर्छल कोइ विजन कर सारती।

भूषन वसन मनि रतन सुवारि वारि,
सिय पिय छवि लखि राई लोन वारती ॥
'लता रसकान्ति' खड़ी लेती हैं बलैया,
सिय पिय मुख चंद तृन तोरि के निहारती॥

(७)

पिय वल्लभ भोग विनोद लहे ।
आम अंगूर अनार अमित फल, दाख छुहारा स्वाद लहे।
कदली सेव बदाम नारंगी, श्रीफल कर गहि मदन दहे॥
भक्ष्य विलोकनि भोज्य सुपरसन, अलिन अधर रस पान चहे।
चुम्बन पोष्य सुगंध सकल अंग, रसना वीरी बदन गहे॥
विविध पान भरि धरे सुधासम, पाय मदन ज्वर दूर दहे।
'रसमाला' प्रिय पान जीवन धन, नैनन बीच बसाइ रहे॥

(८)

करैं दोउ वल्लभ भोग सुहाते ।
विविध भाँति मेवा पकवानें, पावत सुख सरसाते ॥
अरस परस मुख दैं कर सोहैं, मोद बिनोद बढ़ाते ।
चहुँदिशि सखी निरखि सुख पावति, 'प्रेमलता' मुसकाते॥

(९)

अचवन करत नवल सिय लाल ।
विविध सौज लिये ठाढ़ी चहुँदिशि, नवल रंगीली बाल ॥
पानदान पिकदान लिये कोउ, कोउ कर भूषन माल ।
कोउ दरपन कोउ अतरदान लिये, बलि २ 'रसिका' वाल॥

(१०)

रंगीले लाल बीरी लीजै मेरे करसे।
नागर पान सुगन्ध सुपारी, मधुर मसाला सरसे॥
मोतीक चूना मनहर कत्था, पावत अति हिय हरसे।
'अग्रअली' सिय पिय मुख दीन्हीं, अधरन पर रंग बरसे॥

(११)

जानकी वल्लभ लाल की सखि आरती कीजै।
सुन्दर वदन विलोकि कै, लोचन फल लीजै॥
कुंडल ललित कपोल पर, छुटि अलक विराजै।
कंठा कंठ सुहावनो, गज मुक्ता राजै॥
पाग बनी जरतार की, दुपटा जरतारी।
पटुका है पचरंग की, मनि जटित किनारी॥
सियाजू की सोहै पीत चूनरी, जरि ज्योति किनारी।
'रसिकअली' की स्वामिनी, अद्भुत छवि न्यारी॥

(१२)

सदा चिरजीवो रंग भरी जोरी।
सदा विहार करो रंग मन्दिर, रंग किशोर किशोरी॥
सदा सुहागिन के अनुरागिन, रँगे रहो बड़भाग बढ़ोरी।
पिय के प्रान बसो सिय सुन्दरि, सिय मन स्याम बसोरी॥
पिय की चाह सुचात्रिक लों रहो,
सियाजू की मया स्वाति बरसोरी।

सिया मुखचन्द सुधारस द्रवो नित,
पिय के नैन चकोरी ॥
हमरे नैन प्रान के सर्वस,
अधिक अधिक सुख रस सरसोरी।
'कृपानिवास' उपास महल की,
टहल लगी सो लगोरी ॥

(१३)

जय जय अलक लड़े सुकुमार।
जय जय नित्य किशोरी गोरी, जीवन प्रान अधार ॥
जय २ प्रीतम की उर माला, जय २ श्रीस्वामिनि उर हार।
जय जय 'श्रीहरिप्रिया' युगल पर, पीवत पानी वार ॥

॥ इति वल्लभकुंज ॥

❁ स्नान कुञ्ज ❁

अहो प्रान प्यारे कौशलेश के दुलारे,
नेक विनय तो हमारे लाड़िले जू, सुनि लीजिये।
भयो अति काल सबै कीजिये निहाल,
लिये संग लली बाल, मंजन चलि कीजिये ॥
स्नान कुंज की दासी युगल रूप की उपासी,
तव छवि सुधा प्यासी उन्हें दरसन सुदीजिये।
खग मृग मीन तृन लता तरु मलीन,
चलि प्रफुल्ल कीजिये ॥

पूर्व द्वार दतुअन सुकुंज से चली सवारी।
जा पहुँची स्नान कुंज के पूरब द्वारी ।।
स्वागत आरति करि कुंजेश्वरि युगल लाल को।
सादर विनय करतु है कुंजविहार के हेतु चलन को।।

पद-१

चले सिया प्यारे मज्जन साल ।
चढ़ि सुखपाल प्यारि प्रीतम सँग, चली सखिन की जाल ।।
छत्र चवँर कर व्यजन सुधारे, रंग रंगीली वाल ।
हास बिनोद केलि कौतुक मग, करत सुरसमय ख्याल ।।
चहुँदिशि कुंजन ते वहु अलियाँ, बरसावत फुल माल ।
'कान्तिलता' निरखत यह शोभा, हरषित होत निहाल ।।

❀ दोहा ❀

पिय प्यारी आये वहुरि, बंगला के दालान ।
उपटन मज्जन हेतु जहँ, सजे सभी सामान ।।
मसनद गद्दे से सजी, चौकी पर पधराय ।
सखिन श्रृंगार उतारेउ,सिय पिय के हरषाय ।।
साड़ी धोती पीत रंग, लली लाल पहिराय ।
लगीं तैल मर्दन करन,समय समुझि सचुपाय।।

(२)

चले सिया प्यारे मज्जन साल ।
गौर श्याम वर वरन हरन मन, संग सखिन के जाल ।।

चहुँदिशि कुंजन ते वहु अलियाँ, वरसावति फुल माल।
सहज पुनीत शौच सब कीन्हें, उपटन कीन्हीं वाल॥
उष्ण सिसिर जल डारि सुगन्धें, समय सुरस करि ख्याल।
'प्रेमलता' स्नान करावति, संख सहस गज घाल॥

(३)

सिया प्यारे के सखियाँ लगावति उवटन।
पद्मराग मनि को चौकी पर दुग्ध फेन सम, बिछे बिछावन॥
तापर श्यामा श्याम बिराजै, कोटि मदन रति दुती लजावन।
अति सुगन्धमय तेल नरायन, तामें और मिलाय सुगन्धन॥
सिरिस कुसुमहूँ ते अति कोमल, अंग अंग सुकुमार निरखितन।
लै उवटन कर चहत लगावन, करज कठोर समुझि हिय धरकन॥
अति भयभीत सहमि सखि लगवति,
लखि अद्भुत छवि वारत तन मन।
कोइ सखि प्रीतम अंग लगावति,
'अग्र' लगावति प्यारी सुभग तन॥

❀ कवित्त ❀

प्यारी ओर चन्द्रकला चारुशिला प्यारे ओर,
अगन सुगंधमय सु उवटन लगावती।
दोऊन के खुले गात अंगन छबि झलमलात,
मानो शशि कोटि सुधा किरन को लजावती॥

निरखि निरखि सुभग गात आनन्द उर में न मात,
कोटिन रति काम अलि दोऊन पर वारती ।
दोऊन सखि हँसत भाव भावन में भरत,
'श्रीअग्र' हस्त देती रस भावती ।।

(४)

उपटन करत सिया रघुराई ।
सरस सुगन्ध को बन्यो उपटनो, लेकर उर सरसाई ।।
जोइ जोइ अंग लगावत प्यारे, प्यारी सोइ मन भाई ।
'अग्रअली' के जीवन धन दोउ, निरखत नैंन सिराई ।।

❀ दोहा ❀

सो छवि उघरे बदन की, निरखहिं अलि बड़भागि ।
लै प्रसाद उपटहिं वहुरि, निज निज तन अनुरागि ।।

(५)

सजी सकल सुख सौज सखीजन ।
कोउ जो बुलावति अरध सुहावति,
कोइ पधरावति चौकी चौकनि ।।
प्रथम फुलेल लगावति अंगनि,
कोमल सुभग युगल परसैं तन ।
पट अन्तर मंतर रस उचरति,
निगम सु तंतर मोहि सुनत धुनि ।।

सौंधे सनी सौज वहुविधि सौं,
करत हरषि सहचरि तन उपटनि।
गावत राग सुहाग विलावल,
नाचत नागरि आगरि बनि ठनि॥
कंचन कलस अमल जल पूरित,
समय सुहावनि सुख उपजावनि।
सरयू गंग मंदाकिनि कमला,
सेवति सकल सखी बनि रुचि मन॥
मृदुल अगोंछनि अंग अंगोछति,
वारति जल पट निरखि तोरि तृन।
'कृपानिवास' श्रीजानकी वल्लभ,
सोहत सुन्दर करि सुख मंजन॥

(६)

मंजन करत लाल सिय प्यारी॥
मनिमय चौकी तकिया चहुँदिशि,
सुन्दर लगी कनक किनारी।
तापर बैठे पिय प्यारी दोउ,
अंगन प्रति झलकत दुति भारी॥
चहुँदिशि ते जलधार एक होय,
नालिन से वरषत सुठि वारी।
उमगि उमगि जलधार लेत सिर,
हँसि २ दोउ मिलि करत खिलारी॥

अंग अंग मलि २ सखियां न्हावति,
निरखि २ तन मन बलिहारी।
मंजन कर अंग पोंछि 'अग्रअलि',
दोउ अंग भूषन वसन सुधारी ॥

(७)

मंजन करत रसिक मनहारी ॥
सुभग सरोवर तामें दोऊ,
करिनी संग करि इव पिय प्यारी ।
सखिन सहित विहरत जल माँही,
बहु विधि करत केलि रसकारी ॥
अंजलि भरि जल लेत परस्पर,
अँखियन में मारत पिचकारी।
वसन महीन अंग सब झलकत,
निरखि २ दोउ रस मतवारी ॥
करि मज्जन दोउ तट पर आये,
'अग्र' समय सम वसन सुधारी ॥

(८)

मंजु कुंज सुखपुंज सदन में, पिय प्यारी स्नान करे री।
वे उनको वे उन्हें न्हावत, हँसि २ प्रीतम भुजन गहे री ॥
किलकत पुलकत प्रेम पगे दोउ, निज सखियन के चित्त हरे री।
'सरस माधुरी' अंग युगल को, लखि छवि टारी नाहि टरे री॥

(६)

करि जल केलि निकसि भये ठाढ़े,
भीजे लट लटकत छबि पावे।
चुवत बून्द रहि २ छतियन पै,
शोभा अस अनुपम दरसावे॥
जनु ससि तिय अमृत लै नागिन,
सादर शिव कै शीश चढ़ावै।
झलकत मदन मरोर दृगन बिच,
'मोहनि' छबि नव अँखियन भावै॥

॥ कवित्त ॥

मंजन निकुँज बैठे मंजन करि सियालाल,
चहुँदिशि रंगीली बाल सौज सजि ठाढ़ी हैं।
कोउक मुकुर कोउ अतर फुलेल लिये,
सुरमा सिन्दूरदान बसन सैला सारी हैं॥
कोउ कर कंघी लीन्हें लाल प्यारी के सुधारे वाल,
मक्का कपोल लिखत प्रीति नई वाढ़ी है।
'रसिकअली' नवल लाल प्यारी को विलास देखि,
काम कामिनी के हिये उठी पीर गाढ़ी है॥

॥ इति स्नान कुंज ॥

❀ कलेवा कुञ्ज ❀

चढ़े सुखपाल लाल लाड़िली, कलेवा कुंज चले जात।
नागरी अपार सौज रक्षिका सुअग्र आय, चलि लिवाय जात॥

चढ़ि सुखपाल अलिन संग लीन्हे, चले मखशाल सुभाये।
चहुँदिशि अलिगन सौज लिये कर, युग सेवा मन लाये।।
पहुँचे जाय यज्ञ वेदो ढिग, अलियन हिय मुद छाये।
श्रुति अलियन श्रीयुगल मन्त्र सों, पढ़ि आहुतिहिं दिवाये।।

यज्ञ सु करत रसिक सिय प्यारो।।
सुरतरु तर मनिमय वेदी बिच, दाहिन सिय पिय बाम निहारो।
दाहिन इक अलिथार लिये कर, पायस लै सियपिय करधारो।।
द्वादश आहुति युगल मन्त्र सों, जात वेद तिर्पित किय भारो।
हवन कुन्ड परिकरमा कीन्हें, 'अग्रअली' के प्रान अधारो।।

सिय जू पिय पूजत प्रीति पली।
यज्ञ दान करि हर्ष हृदय भरि, जन जिय रंग रली।।
मंगलमय श्रृंगार किये अलि, प्रीतम प्यारि भली।
निज निज सौज सजी सखियन युत, पास पिया के चली।।
चन्दन अतर धूप दीपादिक, फूलन माल ढली।
परिकरमा करि पिय बैठाये, सिय मुख वेलि फली।।
पुनि सखियन पूजे दोउ प्यारे, गान विनोद छली।
आरति करि सौन्दर्य विलोकत, बलि सुषमा सुथली।।

दोहा–तब सिय सहज सुभाय हँसि, प्रीतम सनमुख आय।
चरण धोय चरणोदकहिं, लेत भई हरषाय॥
विविध भाँति के सुमन दल, चन्दनादि लै गंध।
पाद पद्म पूजति भई, सह परिकर सम्बन्ध॥

एक रतन सिंहासन लै सँवारि, मखमल गद्दे सखि दीन्ह डारि।
कंचन केले के थंभ चारि, चारो कोनो में सफल गारि॥
धरे मंगल कंचन कलश चारि, चित्रित मणि पूरित सुरभि वारि।
कोउ गज मोतिन के चौक पूरि, लै आई मंगल वस्तु भूरि॥
प्रेम सहित सिय पिय बैठारि, लगी पूजन करने नवल नारि।
कोउ धूप सुँघावहिं सहित प्यार, कोउ दीप दिखावहिं करि दुलार॥
कोउ कंचन थाली में सजाइ, रस पूआ दोउ लालन पवाइ।
जल पिलाइ आचमन कराइ, करकंज बदन अंचल पोछाइ॥
कोउ पान पवावति सुघर बाल, पहिरावति दोउ के सुमन माल।
कोउ नारि करावति अतर घ्रान, तहँ नृत्य करैं कोउ उघटि गान॥
सुकुमारलि कोउ कहि सुधा बैन, कोउ सुमुखि हँसहिं करि नैन सैन।
रँग भरि आरति कोउ करति नारि, मणि भूषण पट बहु रही वारि।
'रसकान्तिलता' अंचल पसारि, सियपिय मंगल मागहिं पुरारि।

कनक द्वार आगार रचना न जात कहि,देखहिं बनत लखात।
'ज्ञानाअलि'नवला लिवाय लाई,कुंजेश्वरी मन मनमोद भात।।

(१)

आरती प्रीतम प्यारी की।
बने रहो दोउ प्रान पियारे, सखियन मन बसकारी की ।।
स्वागत करि पुनि पाँवड़े डारत, तन मन धन वलिहारी की।
वेगि लिवाइ चलो दोउ प्यारे, 'रसिक'सु प्रीतम प्यारी की।।

(२)

रथ ते उतरि चले सिय श्याम ।।
आरति करि पुनि कीन्ह निछावर, डारि सुमन गले दाम।
जात लिये कुंजेश्वरि कर गहि, पिय प्यारी निज धाम ।।
परत पाँवड़े वसन अनूपम, किये मनिन के काम।
चहुँदिशि ते पुष्पांजलि बरिसहिं, अलियन पद अभिराम ।।
यहि विधि आय बिराजे दोऊ, संग सखी निज ठाम।
'रसराजलता' सुख सिंधु समानी, रस हित आठो याम ।।

(३)

नवल कलेऊ कुंज में राजत पिय प्यारी ।।
मनि चौकी पर बैठे दोऊ, घनदामिनि अनुहारी।
कोऊ सखी कर कंज लिये, सरयू जल झारी ।।
पान दान कोउ पीकदान लिये, बदन निहारी।
भरि भोजन पकवान के षटरस, उपरस सौज सवाँरी ।।

लाइ सखी सिय लाल कँह, परसत मनि थारी।
चहुँदिशि अलि मंडली बिराजत, रसमय वचन प्रचारी॥
गावत कोउ सखि सुभग यंत्र लै, मधुरे स्वर उच्चारी।
'रसिकअली' प्रीतम प्यारी के, आगे धरि मनि थारी॥

(४)

करन कलेऊ नवलकुँज में प्यारी संग पिय आये जू॥
विविध सौज लिये भीड़ सखिन की,
चहुँदिशि आनन्द छाये जू।
मनि चौकी को सजि कुंजेश्वरि,
लाल लली पधराये जू॥
चहुँदिशि कंचन झारि लिये सखि,
दम्पति चरन धुवाये जू।
समय समुझि सखि कोमल पट लै,
चरन कमल अँगुछाये जू॥
पुनि दुइ सखि करकंज धुवावहिं,
कोउ विधु वदन धुवावहि जू।
कोमल पट करकंज पोंछि मुख,
परसि अधिक सुख पावहि जू॥
चिन्तामनि चौकी दम्पति के,
सन्मुख धरहिं सम्हारी जू।
वालभोग पुनि आनि सजहिं भरि,
मनिन कटोरनि थारी जू॥

तुलसी पत्र डारि अर्पहिं पढ़ि,
युगल मन्त्र सुकुमारी जू।
दुहुँदिशि ते अलि लगी पवावन,
कौर सुधारि सुधारी जू ॥

(५)

जेंवत रसिक राम सिय प्यारे। समय कलेऊ भोग सुधारे ॥
दधि चिउरा पकवान मिठाई, पगे पाग वहु सक्कर पारे।
मगद मखाने मठरी मीठी, वरफी फैनि स्वाद न्यारे न्यारे ॥
हरषि परस्पर लै लै आवति, ललचावति हँसि हाथ पसारे।
मुसकावति कर केलि किलोलत,सो सुख जानत प्रान हमारे ॥
सरयू सखिन नीर झारी लिये,प्यावति रुचि भावति सुकुमारे।
'कृपानिवास' अचवाय देइ मुख, पान मसाले डारे ॥

(६)

करत कलेऊ संग दोउ प्यारे। जनक नन्दिनी अवध दुलारे ॥
वर्फी मोदक तपत जलेबी, खाजा घेवर अति रुचिकारे।
बीजपाक रसगुल्ला खुरमा, मोहनभोग पूप रसदारे ॥
पुरी कचौरी मठरी पापर, गुझिया गोझा मिसरी डारे।
और अनेक भाँति के भोजन, कनक कटोरन 'अग्र' सुधारे ॥

(७)

अचवन करत लाल सिय प्यारी।
सरजू नीर सीर अमृत की, नागरि कर वर झारी ॥

हास विनोद परस्पर दोऊ, बाढ़ी मदन खुमारी।
'कृपानिवास' अली कर अँचरा, परसत हेतु संभारी॥

(८)

अचवन करत मुदित पिय प्यारी ॥
निर्मल नीर मधुर सरयू को, भरि शुचि कंचन झारी।
करि आचमन सिंहासन बैठे, सखियन सौज सवारी॥
हँसि हँसि पान खवावहिं विमला, तन मन धन वारी।
'मौन'सकल त्रिभुवन की शोभा,हरषि निरखि सखि बलिहारी॥

(९)

सखियन वीरी सरस सम्हारी।
नागर दल सुकपुर चूना कथ, सुखप्रद लौंग सुपारी॥
दाल चिनी सु चुनि वर मेवा, सुघर समय अनुसारी।
मन की जान श्याम कर दीनी, स्वकर खवावत प्यारी॥
अधर दसन रसना की उपमा, खोजि खोजि कवि हारी।
'कृपानिवास'अली सिय पिय की, अधरामृत अधिकारी॥

(१०)

करति आरती सखि जनकलली रघुवर छबि पागी।
आनंद सिंधु उमगि उर छायो,गावति नृत्यत तन मन रागी॥
बार बार कुसुमाञ्जलि छूटति,जयति महाधुनि घोष सुजागी।
'रसिकअली'रससिंधु मनोरथ, भँवर तरंग उठत चय लागी॥

❀ शृंगार कुञ्ज ❀

पद-१

चलो चित चाये कुंज शृंगार।
रसमाती अलियाँ संग सोहैं, सेवा सौज सुधार ।।
अलि शृंगार कुंज के द्वारे, भेटि आरती उतार।
अर्घ पाँवड़े डार लै आई, अति आदर बैठार ।।
अति विस्तार मनोहर रचना, चहुँदिशि भवन अपार।
ताके मध्य विशाल वेदिका, शोभित द्वार सुचार ।।
चौंसठ वत्तिस षोडस दल के, आसन ललित सुढ़ार।
'प्रेमलता' मनिमय मंजूषा, खोलि धरे रुचिकार ।।

(२)

लाल प्यारी करन चलो शृंगार ।।
भयो समय सुखसागर सुनिये, हे पिय राजकुमार।
'मदनकला' भेजी है मोको, देखि रहीं वे वार ।।
सुनि अलि वचन चतुर चूड़ामनि, नयनन शयन खुमार।
चले मुदित गरबाँह दिये दोउ, अलिगन संग अपार ।।
कोइ गावे कोइ चमर छत्र लिये, करत सबै जयकार।
'मधुरलता' पहुँचे सुकुँज मधि, कुंजेश्वरि वलिहार ।।

(३)

❀ स्वागत आरती ❀

मचाई धूम स्वागत की, श्रंगारी कुंज सुकुमारी।
पेन्हाती फूल के गजरे, वसन सु सुखकारी ।।

निरखि मुखचंद लालन के, हरषि होती है बलिहारी।
रंगीली आरती करती, ललन छबि रस दृगन भरती।
सुधि भी नहीं तन की, नचै कोउ प्रेम मतवारी॥
न्यौछावर की झड़ीलाई, मनोहर रंग फूलों की।
सुकोमल मखमली गद्दे, ललन हित पाँवड़े डारी।
पगी नव प्यार सुकुमारी, चँवर कर छत्र सिर धारी॥
लिवाये ले चली बंगले, मध्य छवीले लाल सिय प्यारी।

(४)

चतुर सखी सब मिलि के आज।
पिय प्यारी को कर शृंगार॥

वेनी अलक सुधार अतर सों,
मनि हीरन मोतिन लगे तार।

साड़ी नील पीताम्बर सुन्दर,
ललित चन्द्रिका मुकुट सुधार॥

केसर तिलक विन्दु की रचना,
दृग अंजन कर अति सुकुमार।

नकवेसर झुमका नक मुक्ता,
कंठा कंठ श्री पदिक सुहार॥

वाजु विजावठ चूरी कंकन,
किंकिनि वर ओ कटि सूत्र धार।

पायजेव नूपुर वर चरननि,
'प्रेमलता' को बरने पार॥

(५)

सखियाँ सरस शृंगार सवाँरे ।
प्यारे जानकी रसिक सावँरे, नख सिख भूषन वसन सुधारे ॥
कर कमलन कल भृकुटि विलोकत, वदन मदन मद गारे ।
'कृपानिवास' रूप छबि सागर, नागर नयन निहारे ॥

(६)

करत दोउ अरस परस शृंगार ।
गौर वरन तन राजकुमारी, श्यामल राजकुमार ॥
धरत चन्द्रिका क्रीट सिरन पर, पहिरावत उर हार ।
अँखियन बिच अंजन आँजत जनु, सान धरत सरमार ॥
नकवेसर मोतीजु सम्हारत, दर्पन वदन निहार ।
'रामसखे' या युगल रूप पर, वार वार वलिहार ॥

(७)

पिय को सीय करत शृंगार ॥
जुल्फ गुल्फ भलि खोलि प्रीति सों, अतर लगावति वार ।
पुनि सवाँरि सुकुमारि सुमन गुहि, ताज भ्राज सिर धार ॥
भाल विशाल सुललित लाल के, विरचित तिलक लिलार ।
कुंडल श्रवन कवन छबि वरनै, प्रभा खान बलिहार ॥
लोल कपोल गोल युग शुभ तरु, सुषमा दाड़िम डार ।
ता विच बैठे घ्रान मनहुँ शुक, लै बुलाक सु अहार ॥
अरुन अधर दोउ वोर वीर रस, मानो मिलनि अपार ।
'युगलविहारिनि' अरस परस दोउ, निरखि सखी वलिहार ॥

(८)

सिय जु की छवि पर बलि बलि जाय ।
अपने कर पंकज सिगार करि, परम चतुर रघुराय ।।
केश सवाँरि लगाय अतर शुभ, वेनी सुमन बनाय ।
बेंदी भाल विशाल लली के, माँग चन्द्रिका चन्द्र लजाय ।।
केशर तिलक खिलक जनु पिय कर, चित्रित चित्त चुराय।
करनफूल अनुकूल शूलहर, नकवेसर पहिराय ।।
नाक बुलाक अधर अरुनाधर, वीरी सरस सुहाय ।
'युगलविहारिनि' हँसनि प्रिया की, फँसनि फँसे रघुराय ।।

(९)

अलि श्रृंगार भवन मधि राजत ।
ललित विभूषन अरस परस दोउ, अंग अंग प्रति साजत ।।
बैठे चारु रतन चौकी पर, सुषमा शील अपार ।
जनकलली रघुलाल सलोने, रूप अमित रतनार ।।
नवल २ सखि कर कंजन लिये, दिव्य विभूषन ठाढ़ी ।
कोउ दर्पन कोउ अंगराग लिये, प्रीति अलौकिक बाढ़ी ।।
सजि श्रृंगार दिव्य सिहासन, बैठे छवि रस रासी ।
चर्वन पान दसन की चमकन, मृदुल वचन रस रासी ।।
छकी सखी पिय प्यारि रूप रस, गावत कोकिल वानी ।
भोजन मधुर करावहिं सखि सब, अँचवायो सरि पानी ।।
'रसिकअली' आरति सजि ल्याई, चौक साथियाँ पूरी ।
मंगल कुंभ रुचिर दीपावलि, सौज सकल रुचि रूरी ।।

(१०)

सकल सुनारी प्यार भरि करत सिगार सवाँरि युगल वर ॥
लहँगा ललित कलित कटि धोती,
कुच कंचुकि वागो वर नागर।
युगल कमलपद विमल महावर,
रचित सुघर लखि अरुन नयन कर॥
पद पावन पदपान मनोहर,
पदज विभूषन पायल नूपुर।
गुल्फे कमल जानु कटि किंकिनि,
छुद्र घंटिका माल करनि कर॥
उदर रोम राजी त्रिवली वर,
नाभि सुभग सौंधी सींचत तर।
मलय कपूर सुकेशर लेपन,
प्रिया उरोज सु प्रीतम उर पर॥
पदिक हार माला मोतिन की,
चम्पकली दुलरी तिलरी ढर।
मनिमाला मुक्तावलि कंठी,
चौकी चौक सुराम सुभग धर॥
भुज प्रलम्ब अंगद युत भूषन,
चारि चारु चूरी मुदरी पर।
युगल वदन सुख सदन मनोहर,
चित कपोल चिबुक वेंदी थिर॥

दसन दमक दुति वीरी रोचक,
बिम्ब विलज्जित मृदु अरुनाधर।
श्रवन तरौने फूले झुमका,
कनकलता मनु फूल फरी फर॥
लाल श्रवन कुंडल धरि सुभ्ररनि,
शशि मंडल मनोकीन मकर घर।
नासा लटकनि सहित नथुनियाँ,
दृग अंजन खंजन तिमि नासर॥
माल विशाल युगल श्री सोहत,
अर्धचन्द उपमा जग की हर।
टीको वन्दी शीश फूल मनि,
क्रीटि चन्द्रिका जटि मुक्ता लर॥
मुक्तन माँग भरी गुहि वेनी,
कछु उपमा आई मेरे उर।
शीश सुहाग पाँति मनु उघरी,
परी सुपाटि गुमान गहर टर॥
दोउ कर सुमन छड़ी उपरना,
सारी सरस फैल फबि सुन्दर।
'कृपानिवास' श्री जानकीवल्लभ,
दुलरावति सहचरी रंग भर॥

(११)

करन लगि अलियाँ प्यारो पियहिं सिंगार॥

श्याम गौर तन खौर लगाये, रचि रचि अंग अनुहार।
अलकें अतर फुलेलन बहुबिधि, उठत सुगंध अपार।।
तिलक ललाट नयन विच अंजन, अधर राग दुतिदार।
ललित कपोल चिबुक पर बिन्दू, कोउ अलि रचति सवाँर।।
कर सरोज मेंहदी पग जावक, बहत जहाँ रस धार।
कोउ भूषन कोउ वसन अंग प्रति, रहि 'रसराज' सवाँर।।

(१२)

रघुवर पिय सिय जनक दुलारी।
निज कर भूषन वसन सवाँरत, बार २ मुखचंद निहारी।।
घूम घुमारे लहँगा सोभित, ओढ़े नील वरन तन सारी।
बेंजंती झुमका सु मनोहर, गज मोतियन कर माँग सुधारी।।
पाटी श्याम सुगंध सिचाई, तापर मुक्तालर दुतिकारी।
सीस चन्द्रिका फूल मनोहर, अलक सवाँरत हैं घुँघुरारी।।
बेंदी बनी वेंदा की छबि करन फूल, झुमका रुचिकारी।
नासामनि सोभा की सीमा, लटकन अधर मधुर रसकारी।।
चिबुक चारु शोभा अपार सखि, श्याम बिन्दु रतिराज सुधारी।
मोती लर दुलरी विच युग युग, कंठपोत पिय भुज अनुहारी।।
चम्पकली चम्पा अद्‌भुत छबि, चन्द्रहार मनु चन्द्र उजारी।
मुक्तामाल हमेल हिये बिच, कंचुकि कसनि बंद जरतारी।।
उदर रेख रोमावलि राजत, नाभि गंभीर पिया मनहारी।
कटि किंकिनी मनिनमय सुन्दर, क्षुद्र घंटिका है शुभ कारी।।

बाजुबंद अति सुन्दर छाजत, पछेली है अति चित चारी।
छल्ला मुदरिन सोहत नख दुति, कर मेहदी माँड़ी रंगदारी॥
पग पायजेव अनवट बिछिया, कमलाक्त पग पान सुचारी।
पिय अनुराग सिया पग जावक,'सरयु सखी' तिनकी वलिहारी

(१३)

करत दोउ अरस परस श्रृंगार।
गौर वरन तन राजकुमारी, श्यामल राजकुमार॥
धरत धन्द्रिका क्रीट सिरन पर, पहिरावत उर हार।
अँखियन में अंजन आंजत जनु, सान धरत सर भार॥
नकबेसर मोती जु सम्हारत, दर्पन वदन निहार।
'रामसखे' या युगल रूप पर, बार बार वलिहार॥

(१४)

परस्पर पिय प्यारी करत सिंगार।
चन्द्रकला अरु चन्द्रमुखी दोउ, देत सुधार सुधार॥
क्रीट चन्दिका ललित मनिनमय, सिर पर धरत सुढ़ार।
जनु धनदामिनि ऊपर राजत, रवि शशि ज्योति अपार॥
कुंडल करनफूल बुलाक नथ, और त्रिविध मनिहार।
नटनि वेष यह सिय रघुवर को, 'रसिकअली' वलिहार॥

(१५)

किशोरी जू के सुधर सवाँरत केस।
वेनी पीठ गुही निज कर सों, चतुर कुवँर अवधेश॥

फूल नवीन झीन रचि रचि के, भूषन सकल सुदेश।
बेसर माल विसाल वर बेंदी, लाल करन नृपनेश ॥
श्याम बिन्दु पर पीत बिन्दु छबि, केशर मनि नकवेश।
अतर तरातर चुये कपोलन, उर पोंछे सीतेश ॥
कौतुक शान गात अस अद्भुत, ललि जू श्रीमिथिलेश।
जय जय रहस पार नहिं पावत, शेष महेश गनेश ॥
'स्नेहलता' लखि अति सुख मानत, सेवहिं अमित रमेश।
पंडित मूढ़ गूढ़ किमि जानहिं, जो प्रभु अहहिं परेश ॥

(१६)

आज सिया छबि अधिक बनी ॥
निजकर श्री नृपलाल सिंगारे, अंग अंग शोभा अतिहिं बनी।
मुक्ता माँग सुभग वेनी रचि, शीश चन्द्रिका रचित मनी ॥
बेन्दी भाल वंदि अति भूषन, जटित विविध विधि हीर कनी।
नथ मुक्ता अधरन पर राजत, मनहुँ सुधाकर कीर चुनी ॥
श्याम करन कंचुकी कलित छबि, अंग भूषन सुकुमार तनी।
भुज सुकुमार सुहाय आभरन, ललित मुद्रिका जटित कनी ॥
लहँगा सुभग किंकिनी कटिमें, करत सु हंस कल ललित धुनी।
'युगलअली' सीता अंग सुषमा, निशिवासर हिय नैन सनी ॥

(१७)

प्रिय पाहुन चिबुक सम्हारू, कोमल छथि प्यारी हमर।
मनि कंघी सँ नहुँ नहुँ झारू, कोमल छथि प्यारी हमर॥

रेशम सँ बढ़ि केश अधिक छैन्हि,
तेल चमेलिहुँ डारू, कोमल छथि प्यारी हमर।
मनिमुक्ता केर चोटी गुहू,
कनि अपनो कला सँ सम्हारू, कोमल छथि प्यारी हमर॥
वेनी गुहि सिंदुर बिंदी दै, ललि मुखचन्द निहारू,
कोमल छथि प्यारी हमर।
'पद्मलता' ई माधुरी मूरति, तन मन धन न्यौछारू,
कोमल छथि प्यारी हमर॥

(१८)

वेष कुंज अति ललित छबीले, करत परस्पर दोऊ सिंगार।
सर्वगन्ध अंगन अनुलेपन, गौर सुतन के छबि अनुहार॥
भूषन वसन अंग अंग अनुपम, लाजत कोटिन रति वो मार।
वीरा राग अरुन अधराधर, नथ मुक्ता सुखमा सु अपार॥
गौर वरन सिय जनक कुमारी, श्यामल सुन्दर नृपति कुमार।
'युगलअली' आदरस दिखावति, लखि २ मोहे रूप उदार॥

❀ दोहा ❀

कवहूँ निज भुषन वसन, अपने ही कर लाल।
लाड़िलि अंग वनाइ छवि, निरखहिं नयन विशाल॥
यद्यपि दम्पति परस्पर, सदा प्रेम रस लीन।
रहै अपन पौ हारि कै, पै पिय अधिक अधीन॥

श्याम वरन अम्बरन को, सुकृत सराहत लाल।
हरा हरा अंग राग भो, चाहत नैन विशाल ।।

(१६)

राजत रतन महल मधि, श्री मिथिलेश किशोरी।
सु कर श्रृंगार करत रघुनन्दन, निरखत पलक न फेरी ।।
मुकुर दिखावत मृदु मुसक्यावत, ललनागन भ्राजत चहुँओरी।
'दम्पतिअलि' सियवदन चंद पै, प्रीतम मन चित चोरी ।।

(२०)

राजत कनक भवन मधि, रघुवर जनकदुलारी।
चपलासी चहुँओर सहचरी, सेवत चतुर सुघर सुकुमारी।।
भूषन वसन परस्पर सजि अंग, लसत मुकुर कर धारी।
अरस परस दम्पति सुख लखि २, 'रसिकअली' वलिहारी।।

❀ छन्द ❀

हँसि कै 'रसकान्तिलता' बोली सुनो प्रान प्यारे,
ऐसी सुघराई लाल आप कहाँ पाओगे।
प्रिया मुखचंद कमनीयता को देखो तो,
बस देखते ही रह जावोगे ।।
पुनि आपनी ओर देखि २, आप ही लजाओगे।
प्यारी जू की जैसी लुनाई लाल, आप कहाँ तुलवाओगे ।।
तुलेगी न आप मुखचंद से, चाहे कितना हूँ तुलवाओगे ।।

(२१)

बैठे दोउ सुकुमार शिरोमनि, आरोगत हैं भोग सिंगार।
चामीकर चौकीपर सुँदर आनि धरे, सहचरि भरि प्यार॥
आदर सहित देत करि कौरन, कमल वदन लखि करि मनुहार।
'श्रीहरिप्रिया' प्रसंसि परस्पर, प्रेम पुलक अंग २ अपार॥

(२२)

जेंवत राम जानकी प्यारे, समय सिंगार सु भोग सुधारे॥
दधि सौंधो पकवान मिठाई, पगे पाग बादाम छुहारे।
मगद मखाने मठरी मीठी, मनु बनाय स्वाद सों न्यारे॥
कंद कटोरन थार सौज धरि, कहि २ नाम जिमावति सारे।
हरषि परस्पर लै लै आवति, ललचावति हँसि हाथ पसारे॥
मुसकावनि कर केलि कलोलनि, सो सुख जानत प्रान हमारे।
'सरयू सखी' नीर झारी लै, प्यावति रुचि भावति सुकुमारे॥

(२३)

अचवन करत सिया रसिक विहारी।
खासा मलमल विसद अंगोछा, सुभगा लै करकंज सुधारी॥
विमला अतर गुलाब लगावति, सहजा सुभग माल उर डारी।
चारुशिला कर पान मसाला, सिया श्याम मुख दै मनहारी॥
चन्द्रकला वर वीन बजावति, मदन कला करि आरति उतारी
'सियाअली' हँसि हँसि मुख जोहत,
राजत जहाँ लाल सिया प्यारी॥

(२४)

सुघर परस्पर पान पवावत ।

पिय को प्यारि प्रियाजू को प्रीतम,

देखि अलीगन मन अति भावत ।।

वीरी दसन दवी दृग दम्पति,

शशि मुख मंद मंद मुसुकावत ।

'रूपलता' अनुपम छबि लखि २,

तत्सुख सखियाँ सब वलि जावत ।।

❀ दोहा ❀

अति सुगंध रचि धूप दै, दीप युगल अति जोति ।

निरखि मनोहर युगल छबि, वारति मनिगन मोति ।।

(२५)

सखि आरती उतारु मनमोद भरी ।

पिय प्यारी को सिंगार करी ।।

कंचन थार सखी कर राजत, युगल पुनीत छटा छहरी ।

बाजत बिविध बाजने सुन्दर, दुन्दुभि ढोल मृदंग घरी ।।

नाचति सुर वनिता मन मोहति, होत व्योम से सुमन झरी ।

'शरन अनन्तराम' छवि निरखत,

तन मन सुधि सवहीं बिसरी ।।

(२६)

आरती साजि सखी जन ल्याई ।।

कनक थार सुकुमार ज्योति छबि, जगमग मन्दिर छाई।
बाजत ताल तान वीनादिक,
नाचत गावत कंकन किंकिनि, नूपुर मुखर सुहाई॥
विजन चमर गजगाह करे कोइ, सुघर सुछत्र फिराई।
सूरजमुखी मुकुर कर कोई, प्रेम प्रमोद भराई॥
वारहि जल पट प्रान निछावरि, हरषि निरखि बलि जाई।
'कृपानिवास' श्री जानकीवल्लभ, जय २ धुनि सरसाई॥

(२७)

सदा चिरजीवो युगल किशोर।
प्रीतम प्रिया प्रेम रस पागे, वनि दोउ चन्द चकोर॥
दै गलवाँह हृदय लगि मृदु हँसि, लखत दृगन की ओर।
मंद मंद बतरात परस्पर, चितवनि में चित चोर॥
पुनि २ हो बलिहार तोरि तृन, प्रेम में अतिहिं विभोर।
'गुनशीला' यहि भाँति रसिक दोउ, वने रहे रसवोर॥

(२८)

ये दोउ अरुझि रहे रिझवार।
क्रीट चन्द्रिका नथ सों बेशर, उरझी हिय मनिहार॥
उरझे नैन बैन सों बैना, उरझी भुज सों भुजनि निहार।
उरझे पग पायल झनकारत, लखि २ 'सियाअली' वलिहार॥

(२९)

युगल छबि आज अनूप बनी।

कनक भवन श्रृंगार कुंज में, राजत रघुवर जनकलली ॥
निरखि रूप रितुपति लखि राजै, उपमा काम वली ।
'युगलअली' छबि देखि मगन मन, शोभा भाँति भली ॥

(३०)

युगल छबि आजु अनूप वनी ।
कनक भवन श्रृंगार कुंज में, बैठे बनी ठनी ॥
कोटिन सखि सहचरी अमित लिये, ठाढी सौज घनी ।
'रसिकअली' उर यह समाज बसो, लीला ललित मनी ॥

(३१)

❀ आशीर्वाद ❀

खुश रहो जीते रहो, जुग २ हमारे प्रानधन ॥
सदा भाग सुहाग पूरित, रहो दीदी औ प्रानधन ।
नित्य नव सुख भोग नित, विहार नव करते रहो ॥
मोद मंगल नित लहो, ये दोनों प्रानधन ।
रंगे रहो अनुराग में, ललना गनो के लाड़ले,
छिनहिं छिन रति वृद्धि पावो, लाल प्यारी प्रानधन ॥
रमकि झमकि चलती भई, सब गज गामिनियाँ ।
परिकरमा करने लगी, रंग भरी सब कामिनियाँ ॥
नाचि नाचि के चले ठुमुकि नूपुर छमकावै ।
नयन सैन से हेरि पिये दिशि, भृकुटि चलावै ।

मधुरे स्वर से राग में दो नाम उचारे ।
पिय प्यारी ढिग आइ कै, पग लागि जुहारे ॥
प्रदक्षिना सिहासन दहिन दिशि आवहीं ।
पाँच अंग झुक टेक सीय पग लागहीं ॥
आचार्या पग लाय जुहारहिं श्री सर्वेश्वरी को ।
सहित 'सनेह' नवावहिं सिर श्री यूथेश्वरी को ॥

॥ दोहा ॥

वन्दौं रसिक समाज को, यह माँगे वर देहु ।
नित नव नव बढ़ते रहें, पिय प्यारी पद नेहु ॥

॥ इति शृंगार कुंज ॥

❁ चौपड़ कुञ्ज ❁

पद-१

समय अब हो गई सजनी, प्रिया प्रीतम के चौसर की ।
चलो सब संग हिलिमिलि कर, लखो आनन्द चौसर की ॥
विहँसते मोदमय दोनों, अलिन मुखकंज को हेरैं ।
हुये तैयार सुन करके, सुभग सम्बाद चौसर की ॥
गहे करकंज आपस में, मधुर वर चाल से चलकर ।
लिये रस्ता सु रथ चढ़कर, सुखद सुभ कुंज चौसर की ॥
पहुँचते ही सु फाटक पर, लगी सुभ आरती होने ।
रखी थी सज सु ललना गन, उधर सुभ साज चौसर की ॥

पड़ी है पाँवड़े नीचे अलिन सुमनाञ्जली छोड़े।
बिराजे मच गई खेलैं 'लता रसराज' चौसर की ॥

(२)

चले दोउ चौपर कुंज में आये ॥
तहँ की अलिन आरती किन्हीं, आदर करि बैठाये।
चौकी पाँच मनोहर रचना, तापर खेल सजाये ॥
सिय पिय मध्य परस्पर खेलें, चहुँदिसि सखि चित चाये।
'प्रेमलता' सिय स्वामिनि ओरी, गावति चाह बढ़ाये ॥

(३)

चले दोउ चौपड़ कुंज मुसुक्याये ॥
गहे करकंज आपस में मधुर वर चाल दोउ आये।
तहँ की अलिन आरती कीन्हीं, आदर करि बैठाये ॥
फूलमाल पहिराय पान दै, अतर सुघ्रान कराये।
चौकी पाँच मनोहर रचना, तापर खेल सजाये ॥
सिय पिय मध्य परस्पर खेलैं, चहुँदिशि सखि चितचाये।
'प्रेमलता' सिय स्वामिनि ओरी, गावति चाह बढ़ाये ॥

(४)

चौपर खेल रच्यौ पिय प्यारी।
फेंकत पासा प्रेम परस्पर, मारत सार रसिक रिझवारी ॥
झगरत निज २ दाँव नवल वर, कर गहि हँसि २ भरि अँकवारी
'सरस माधुरी' होड़ा होड़ी चलत चाल युग बारम्बारी ॥

(५)

पासा खेलन खेल ठई ।
श्री मिथिलेश लली लालन पिय,
निज निज अलि भलि बाँटि लई ।।
छल बल निपुन कौतुकी दोऊ, सोभा निधि भरि मोद ठई ।
मृदु मुसुकात चबात पान मुख, दुहुँ हिय हरष भई ।।
जीते प्रथम लाड़िले रघुवर, लाड़िली हारि गई ।
प्रीतम मन भो चाव चौगुनो, छिन छिन छटा नई ।।
कनक भूमि नग खम्भ मनिन छिति, सोभा विपुल छई ।
मनहुँ मदन तिय विविध सु तनु धरि, देखत सुख सु भई ।।
हारे जब सारे पिय प्यारे, सिय जु की जीति भई ।
'युगलविहारिनि' जय जय जय करि, रसिया आप दई ।।

(६)

खेलत जुआ जानकी रघुवर ।
मधुर सखी सब लसत राम दिशि,
सिय दिशि लसहिं सखीगन बुधिवर ।
धरत पेंत मन रतन अमोलक,
जीति लेत दोउ दुहुँन प्रेम भर ।।
सिय बस होंहि हरषि हारे पिय,
सीय हरहिं वलि जाहिं पिया पर ।
लखि सखि 'श्री रसरंमनी' सुख,
लहहिं निरखि बस युगल परस्पर ।।

(७)

होड़ हार की मांगत प्यारी।
सुनहु ढीठ मन मोहन प्यारे,
अब काहे मौन कौन विधि धारी॥
सकुच रहै कछु कहै न मुख सों,
सखियाँ विहँसि बजाई तारी।
'सरस माधुरी' चूमि लाल मुख,
प्रिया लई पिय को अँकवारी॥

(८)

मुदित दोउ चौपर खेलि रहे।
लखि सखि हिय उमगे॥
बहु छल बल करि चलै चालि पिय, अपनी जीत चहे।
हारि जात हर बार लाड़िले, तब हँसि बचन कहे॥
हे प्यारी कहँ सिखी चतुरता, हमरे मान दहे।
सिय हँसि दीन न ऊतर एको, सखि सब अति आनन्द लहे।
'मधुरलता' यह सुख सु मिले तब, जब सिय सरन गहे॥

(९)

पासा खेलत हैं पिय प्यारी।
रतन रचित चौकी पर ढारत, हँसत करत किलकारी॥
पहिले दाव परो श्यामा को, लिन्हों छोरी पीत पिछोरी।
अबकि बेरि पिया दाव लगावो, तो खेलोंगी धनुधारी॥

जानत हो छल बल कर छूटो, कहे लाल हम हारी।
'रसमोदलता' लखि रूप माधुरी,
छाकी जीती जनकदुलारी ॥

(१०)

पिय प्यारी की आज लगी बाजी ॥
मनिमय चौपर साजि सलोनी, खेलि रही आनन्द दाजी।
अंगन की छबि उरझि रहे दोउ, एक टक निरखत सुखमा जी॥
गावति अलिगन साज बजावति, हिय उत्साह बढ़न काजी।
'प्रेमलता' सिय जीत मनावति, प्रीति महारस दाजी ॥

(११)

चौसर खेलत रसिया लाल। प्यारी संग सुख आल।
सारी फल जरिदार मखमली,
सारी श्याम हरित पीत लाल ॥
पासा हीरा को अति सुन्दर, दोउ दिशि सखि युग चाल।
इत में चन्द्रकला सखि चतुरी, चारुशीला उत वाल ॥
गनि २ गोटी मारत दोऊ, कौतुक करि सियलाल।
वहुविधि करि चतुराई दोऊ, खेलत नयन विशाल ॥
जब प्यारी पासा को फेंकत, कुच युग इन्द्र को जाल।
देखि लाल ठकवक से रहि गये, कर से न पासा चाल ॥
भूलि गई चतुराई अपनी, जीत लई सिय वाल।
हारि लाल सिय अधर चूमि लई, 'अग्र' धूर्त बड़े लाल ॥

(१२)

समय लखि आई नवल नवेली करि सिंगार अलवेली ।।
चौसर खेलि रहे जहँ दोऊ, पिय प्यारी सहित सहेली ।
नाय चरन सिर करी प्रसंसा, कहे तजहु यह केली ।।
चलिये सभा सुकंज लाड़िले, समय सुखद अब भेली ।
'मधुरलता' सुनि वचन प्रेममय, चले सु गरभुज मेली ।।

।। इति चौपड़ कुंज ।।

❀ सभा कुञ्ज ❀

दूती :—

दूती सभा कुंज की वैदेहि विहारी ।
भरी उमंग देश देश की नव राजकुमारी ।।
नव सप्त साजि साजि सभा भवन में पधारी ।
गन्धर्व नाग किन्नर सुर यक्ष की कुमारी ।।
नव गोप कुमारियों की जुटी भीर है भारी ।
कुंज कुमारियाँ भी सहित सौज धारी ।।
द्वारे प्रतीक्षा में खड़ी कुंजेश्वरी प्यारी ।
चलिये सभा सु कुंज में संग प्रान पियारी ।।
आतुर दरस को हो रही सुकुमारियाँ सारी ।।

❀ गजल ❀

कुवँर अवधेश नन्दन जू, सजि सिंगार राजे हैं ।।

बिराजे हैं बड़े रथ पै, जुते गज आठ मतवाले।
रंगीले परिकरों के संग, प्रिया गर हार जाते हैं॥
सड़क के दोनों भागों में, सजी सुकुमारियाँ पाँती।
सबों के प्रान मन मोहे, मयन मन हार जाते हैं॥
सड़क दुहुँ ओर कुंजों की, अटारी में खड़ी नारी।
सबों के नयन मन हरते, छयल दिलदार जाते हैं॥
रसीले गान वाद्यों की, अनेकों टोलियाँ संग में।
सबों को देखते सुनते, पगे नव प्यार जाते हैं॥
गगन से देव कन्यायें, सुमन की झड़ि लगाती हैं।
सुमन की वृत्ति में भींगे, सुघर सुकुमार जाते हैं॥

❀ स्वागत ❀

पद-१

रथ ते उतरि चले सिय श्याम॥
आरति करि पुनि कीन्ह निछावरि, डारि सुमन गले दाम।
जात लिवाय कुंजेश्वरि कर गहि, पिय प्यारी निज धाम॥
परत पावँड़े वसन अनूपम, किये मनिन के काम।
चहुँदिशि से पुष्पाँजलि अलियन, वरषहिं प्रद अभिराम॥
यहि विधि आय विराजे दोऊ, सखी संग निज ठाम।
'रसराजलता' सुख सिंधु समानी, रस हित आठो याम॥

(२)

सभा भवन सुख समय तैयारी।
अवध ललन ललना सिय प्यारी॥

लाल पिया सुखपाल पालकिन,
चारुशिलादिक सहचरि सारी।
अपर सखी रथ यान विमानन,
चली संग सब राजकुमारी॥
दोउ समाज प्रमदा गन सुन्दरि,
सभा भवन रत्नाकर भारी।
मिलि वगमेल चली संगम हित,
पिय प्यारी संग न्यारी न्यारी॥
सुभग दिव्य सिंहासन सुन्दर,
बैठारे सब सौज सवाँरी।
चमर छत्र व्यजनादिक दुहुँ दिशि,
विविध यन्त्र तन्त्रादिक धारी॥
अष्ट खण्ड सुख सभा कचहरी,
बैठी तहँ जो जहँ अधिकारी।
आठ प्रथम सोरह पुनि बत्तिस,
पुनि चौंसठि निमि वंश दुलारी॥
चारि खण्ड जे अपर कहे तहँ,
बैठी देश देश वर नारी।
सात द्वीप नौ खण्ड तिहूँ पुर,
सुर नर नाग नृपन की वारी॥
देश देश की नकल गान करि,
लै लै युगल चन्द वलिहारी।

नाचन लागी झुन्ड झुन्ड मिलि,
हाव भाव करि बैठि जुहारी ॥
साजि आरती मनिन थार बहु,
मनहुँ मची यह दिव्य दिवारी ।
'ज्ञानाअलि' पुष्पाँजलि वारहिं,
खड़ीं लखी बड़ भाग हमारी ॥

(३)

पिय प्यारी की आज सभा लागी ॥
मण्डप उच्च विशाल मनोहर, लक्ष खंभ की द्युति जागी ।
अमित सिंहासन मनिमय सोहै, तापर अलिगन रस पागी ॥
विविध वेष धरि कौतुक करहीं, नट नर्तकी राग रागी ।
'प्रेमलता' सद्गुरु की करुना, सभा विलोके सब त्यागी ॥

(४)

सभा में राजत हैं पिय प्यारी ।
सिंहासन अति उच्च मनोहर, रचना विविध प्रकारी ॥
आस पास ललना गन शोभित, चहुँदिशि मंडल कारी ।
साज अनेक मिलाय सखी गन, गावत हैं सुरधारी ॥
चवँर छत्र अति व्यजन मनोहर, पान दान कर धारी ।
हँसत हँसावत रस उपजावत, सखियन मोद अपारी ॥
सियाराम बतरात परस्पर, आनन्द अमित प्रकारी ।
चन्द्रकला श्री चारुशिला मिलि, सखियन आज्ञा कारी ॥

नाचत गावत भाव बतावत, सखी करत बलिहारी।
'नेहलता' सखि करत आरती, जय जय शब्द उचारी।।

(५)

राम सिया राजत रंग मन्दिर,
राजसभा सोभित सुख सुन्दर।।
रतन जटित कंचन सिंहासन,
कीमखाप वितान तने तर।
अद्भुत बिछे गेंद बहु तकिया,
कंचन कलश सु छत्र युगल सर।।
मनि मुक्तनि की लूम लुभावति,
झालरि कोर जड़ी परदा पर।
'जयति प्रसाद' सु चन्द्रकला सी,
करति खवासी चमर विजन धर।।
मुकुर दिखावति छत्र फिरावति,
सूरजमुखी चले दिस गुन भर।
सकल साज सजि गुनिन गननि सों,
समय विलोकत खरी सुधर वर।।

(६)

रंगीले दोउ रंग भरे मुसुकावे।
रूप राशि रसिकन के जीवन, मंद मंद बतरावे।।

अति आलस अंशन भुज दीने, नैन सों नयन मिलावे।
'सरस माधुरी' अधर सुधा रस, हिलमिल पीवे पिआवे॥

(७)

सलोने लागे नवल किशोर किशोरी।
सुन्दर श्याम कमल मद मोचन, सुमुखि सुलोचनि गोरी॥
मिलि बैठे दोउ रतन सिंहासन, हँसि लीन्हे चितचोरी।
'सरस माधुरी' इनके सम कोउ, त्रिभुवन में नहिं जोरी॥

(८)

सभा कुँज के भोग सुहाये,
निरखि हरखि हिय आनन्द छाये।
नाना विधि भोजन अति पावन, देश देश के थार धराये॥
पिय प्यारी पावत मनभावन, छबि विलोकि अतिसुख सरसाये।
शीतल जल पीवत सुरभित जल, वीरी स्वर्णतपक लपटाये॥
कामिनि आरति तन मन वारति, जयति जयति पुष्पन वरसाये
युगलचंद मुख शोभा लखि सखि, पावत 'प्रेमनिधी' लहराये॥

(९)

झमकि करैं आरती अलवेली॥
सभा कुंज सुख पुँज मंजु लखि, सु छबि अली अलवेली।
भूषन वसन चमाचम चमकन, गमकन सुमन चमेली॥
कोउ जल वारि उतारि लखत कोउ, लेति बलैया हथेली।
'मधुरलता' या छवि पर वारौं, तन मन धन सब हेली॥

(१०)

अरुझे दोऊ बसो दृग ऐसे, पै बिच माखन जैसे।
नयनन नयन बैन बैनन मिलि, सुमन सुगन्ध सु जैसे ॥
अलि अलियाँ भलियाँ औसर लहि, कलरव करत अभै से।
चन्द्रकला कलवीन बजावैं, गान कला गावै लय से ॥
युगलप्रिया सु मृदंग थाप दै, जुरी समाज समय से।
हेमलता श्री प्रीतिलता मिलि, प्रिय तमाल तरु तैसे ॥
बैठे सभा निकुंज लाल लली, गलबहियाँ वर वैसे।
'युगलविहारिनि' लखै युगल छवि, भखै अकथ मुख कैसे ॥

—०—

तेहि अवसर तहँ जितो सखी, तित रूप बनावहिं।
विलग विलग मिलि सब कहँ, सिय पिय कंठ लगावहिं ॥
भूषन वस्त्र प्रसाद देहिं, माला पहिरावहिं।
पाव पवावहिं भाँति भाँति से, लाड़ लड़ावहि ॥

(११)

समय लखि आई नवल नवेली। करि सिंगार अलवेली ॥
सभा मध्य जहँ राजे दोऊ, सिय पिय सहित सहेली।
जाय चरन सिर करि प्रनाम पिय, कहेउ तजहु यह केली ॥
चलिये भोजन करन लाड़िले, समय सुखद अब भेली।
'मधुरलता' सुनि वचन प्रेममय, चले सु गरभुज मेली ॥

(१२)

दूती मैं भोजन कुंज से आई प्यारे ॥

सभा सदन सुख सरस पगे हो, भोजन सुधिहुँ बिसारे।
जानकी जीवन भूख सहो किन, सिरस सुमन सुकुमारे॥
सहित समाज बेगि पग धारहु, जेंवन प्रान अधारे।
जेवनार झाँकी निरखन को, तरसत नयन हमारे॥

❀ दोहा ❀

प्यार सने दूती वचन, जानि प्रिया रुख लाल।
चले सभा वरखास करि, जोरि प्रिया भुजमाल॥

॥ इति सभा कुंज ॥

❀ भोजन कुञ्ज ❀

पद–१

छवीले दोउ आवत भोजन साल।
झूमत झुकत चलत मतवारे, रसिक रंगीले बाल॥
करत कटाक्ष परस्पर लपटत, दीन्हें गर भुज माल।
हँसत हँसावत रस बरसावत, संग सहचरी जाल॥
प्रानप्रिया कछु कहत नवेली, हरषित होत निहाल।
'अग्रअली' बैठे दोउ प्यारे, निरखत भोग विशाल॥

(२)

सभा कुंज से सिय रघुनन्दन, भोजन कुंजन चलत भये।
बसु घोड़े के रथ पै चढ़ि कै, सिंह पौर ढिग आय गये॥
सभा श्रृंगार उतारि नवीनो, करत भई अलि ऋतु समये।
मुख कर कमल धुलाइ सहेलिन, चरन पीठ चढ़ि विजोलये॥

चौक विशाल मध्य पगु धारे, सखियन युत अति मोद छये ।
मनि चौकी पर दम्पति राजे, 'प्रेमलता' युग थार दये ॥

❁ छन्द ❁

देखो सखि अवधचंद चन्द्राननी सिया संग,
आय मिलि पाक शाल सखियन संग सोहे री ।
चन्दन चौकी विशाल बैठे सिय रसिक लाल,
निरखत छवि दृग निहाल ठाढ़ी मुख जोहे री ॥
व्यंजन विधि चारु चारि षटरस सखियन सवाँरि,
परसत हिय रुचि विचारि चातुरी चित पोहेरी ।
पावत पिय प्यारि संग निरखत ललना उमंग,
'ज्ञानाअलि' लखि सिहाय सब मन मोहे री ॥

❁ चौपाई ❁

पंच कवल करि जेंवन लागे ।
गारि गान सुनि अति अनुरागे ॥
भाँति अनेक परे पकवाने ।
सुधा सरिस नहिं जाइ बखाने ॥
परुसन लगे सु आर सुजाना ।
व्यञ्जन विविध नाम को जाना ॥
चारि भाँति भोजन विधि गाई ।
एक एक विधि वरनि न जाई ॥

छरस रुचिर व्यञ्जन वहु जाती।
एक एक रस अगनित भाँती ।।
जेंवत देहिं मधुर धुनि गारी।
लै लै नाम पुरुष अरु नारी ।।

(३)

भोजन करत जानकी वल्लभ, परिकर युत रसकारी जू।
दधि ओदन घृत मिसरी मिश्रित, मेवा विविध सुडारी जू ।।
विविध पाँति सखि पीढ़िन बैठी, आगे थार सवाँरी जू।
पंच कवलि करि पावन लागे, दूसरि थार सुधारी जू ।।
चारि भाँति षटरस श्रुति गाई, ताते भेद अपारी जू।
छप्पन भोग छत्तीसो व्यञ्जन, बरनत शारद हारी जू ।।
वहु सखि साज बजावति गावति, मधुर गधुर सुर गारी जू।
सुनि सचुपाय विनोद बढ़ावे, निरखत अलिन सुखारी जू।।
प्यारी मुख कर प्रीतम देहीं, प्रीतम के मुख प्यारी जू।
चहुँदिसि से सखिगन लै फैरे, नूपुर की धुनि भारी जू ।।

(४)

भोजन करत भावते जी के।
अरस परस दोउ खात खवावत, सो सुख जानत लोचन ही के।।
कीन्हें कछुक मनोरथ प्रीतम, देत बनाय ग्रास मुख सिय के।
हँसि चितई भरि नयन माधुरी, रहि गये कौर हाथ ही पियके।।
पंच भाव तर यह रस दुर्लभ, सो सुख जानत अलिगन नीके।
'हरिसहचरी' मनोरथ मन के, कृपा साध्य मिथिलेशलली के।।

(५)

मिलि जेंवत श्री रघुनन्दन सिय,
हिय निरखि २ सखि मोद भरे।
बैठे रतन जड़ित मनि पीढ़िन,
घन दामिनि दुति मंद करे ॥
व्यन्जन विविध सुधारि सुघर सखि,
कर कमलनि मनि थार धरे।
परसत गान करत पिक बैनी,
मधुर मधुर मृदु सप्त स्वरे ॥
कोउ कर पान पात्र मनि झारी,
सुन्दर सरयू नीर भरे।
पिय प्यारी मुख चितवत अलि सब,
देत जबै चित चाह करे ॥
कौर सुधारि परस्पर शशि मुख,
देत जबै छबि कहि न परे।
'रसिकअली' यह रस अद्भुत लखि,
निरखि निछावर प्रान करे ॥

(६)

दोउ जेंवत हास विनोद मगन,
रस अंग उमंग अंग अंग बरसै।
परसि परस्पर स्वातिक मातिक,
ग्रास उठै मुख ना परसै ॥

सुकर सुधारि सुकौर सिया को,
राम जिमावति हित दरसै।
दृग छोर सिहाय सु भाग भरे,
कर चूमि महा मन में हरसै॥
गीत वाद्य नव तान तरंगनि,
संग सुहागिनि सुख सरसै।
'कृपानिवास' प्रसाद मिलै मोहि,
जाको महामुनि मन तरसै॥

(७)

जेंवत कुवँर रसिक रघुनन्दन,
रस सागर नागरि सिय प्यारी॥
छप्पन चार छऊ रस उपरस, भोग सौज सुखकारी।
चिंतामनि चौकिन पर कोमल, दुग्ध फेन सम सारी॥
तिन ऊपर रुचि जान युगल की, रचना न्यारी न्यारी।
फल रसमय अंकुर कंदाली, मेवा मधुर सुधारी॥
चटनी निकर अँचार मुरब्बा, अमित भाँति तरकारी।
परसत परम किशोर नागरी, जानि युगल रिझवारी॥
सुरभित शीतल जल सरयू को, मन्त्रित कंचन झारी।
रस भीनी बतियन विरमावत, प्यावत निज कर वारी॥
दम्पति एक थार महँ जेंवत, मोद कन्द मुद भारी।
'अग्रअली' के जीवन दोऊ, तृन तोरत वलिहारी॥

(८)

मिलि जेंवत प्रीतम संग पिया, दोउ मंगल मोद बढ़ावै हो।
कौर परस्पर देत चन्द मुख, मंद मंद मुसुक्यावै हो॥
भोजन विविध परोसति विमला, कमला विजन डुलावै हो।
शोभा सिंधु कहो न परै कछु, माधुरी कुंज सुहावै हो॥
चन्द्रकला सखि झारी लिये कर, सरयू जल अचवावै हो।
'राम सखे' प्रभु थार प्रसादी, रह्यो अवशेष सु पावै हो॥

(९)

मिलि जेंवत श्री रघुवीर बने,
सखि संग लिये मिथलेश लली।
भुज अंश दिये बहियाँ जु लसे,
विहँसे मृदु मंजु अनंग रली॥
करि कौर सिया मुख देत पिया,
कहि स्वाद सराहत भाँति भली।
रस के निधि दम्पति रंग भरे,
निरखें चहुँओर किशोर अली॥
मनि मन्दिर में झलकें प्रतिबिम्ब,
मनोज के मानो विहार थली।
अवधपुर नित्य विहार करैं,
लखि 'अग्रअली' जू की आस फली॥

(१०)

रघुवर जेंवत जानि एक सखि, अंचल दै हँसि बोली जू॥

सुनहु लाल तुम काके जाये जाये, सत्य कहहु सब खोली जू।
सुनहु प्रिया हम नृप दसरथ के, जासु सुयश श्रुति गावे जू॥
भूपति गौर श्याम तुम लालन, हम कैसे पतिआवें जू।
सुनहु चतुरि हम श्याम न होते, को सिंगार रस गावे जू॥
हमरे श्री जनकलली रस के रस, विन बोले पिया आये जू।
कहहु कवन मकरन्द मधुर हित, भवँरहिं कौन बुलावे जू॥
'रामचरन' सखि मधुर वचन सुनि, सब सखियाँ मुसुक्यावें जू॥

(११)

भोजन करत लाड़िली लाल॥
रतन जड़ित कंचन चौकी पर,
आनि धरे सहचरि भरि थाल।
छप्पन भोग छत्तीसो व्यंजन,
भक्ष्य भोज्य लेह्य चोष्य रसाल॥
जेंवत जाहिं सराहिं सरस अलि,
परसत रंग रंगीली बाल।
जे जे व्यञ्जन कर पल्लव ते,
छुवति छबीली छाई छबि जाल॥
ते ते व्यञ्जन ताहि ठौर ते लेत छबीले,
प्यारी मुख दे दे होत निहाल।
यह विधि राजभोग आरोगत,
लखि सुख भोगत नयन विशाल॥

(१२)

मिलि जेंवत श्रीरघुनन्द सिया, दोउ नवल माधुरी कुंज लसे।
रसमत्त परस्पर रूप छके, करकंज कौर मुख देत हँसे॥
वहु व्यंजन भाँति अनेक प्रकारन, परिचारिकागन रसलै परसे।
नव वयस किशोरी वाल चहूँदिशि, खड़ी अनुशासन को तरसे॥
अनुराग भरी रस रंग छकी, मुसुकान मनोहर चित्त ग्रसे।
सुख सिंधु अमी बिच 'रामसखे',
मन मीन रसिक बबि जाय फँसे॥

(१३)

राजभोग दम्पति मिलि पावें।
निज निज हाथ सुधारि नवेली, वे उनको वे उन्हें पवावें॥
नैन निहारि रहे मुख दोऊ, हँसि २ पानि कपोल छुवावें।
'सरसमाधुरी' नैनन माँहीं, पियत रूप रस नाहि अघावें॥

(१४)

पाहुन अहाँ क जेवनार यौ, देखि किछुनँय फुरै ए।
व्यञ्जनक अछि भरमार यौ, कियो गनिनँय सकै ए॥
कुंद पुष्प सन भात लगै यै, राहरिक दालि स्वर्ण झलकै ए।
ताहि पर देल घृत ढारियौ, कतेक गमगम करै ए॥
अदौरी दनौरी तिलौरी फुलौरी,
मिथिला में सब सँ प्रसिद्ध कुम्हरौरी।
बड़ा वड़ीक संचार यौ, सेहो देखिते बनै ए॥

रंग विरंगक भुजिया भाजा,
पापर लगैए जेना टटके खाजा।
अगनित चटनी अँचार यौ, जी चटपट करैए॥
भाँति भाँति के साग रुचिकारी,
षटरस मधु रस सब गुनकारी।
मिथिलाक येह व्यवहार यौ, कियै अचरज लगैए॥
मालपूआ हलुआ ओ पूरी कचौड़ी,
दही चीनी खोआ सकरौरी।
मधुरक लागल कतार यौ, आँखि अहुँके गरैए॥
रुचि २ जेमू किये सकुचाइ छी,
चारु भैया कँय हम चकिते देखै छी।
छी अहाँ भदेसक गवाँर यौ, 'पटरानी' कहैए॥

(१५)

तुम सकुचत कस चितचोर, दुलहा रामजी लला॥
जेंवहुँ व्यञ्जन रुचिर हमारे, व्यंग वचन सुनि मोर। दु०
तुम तो श्याम काम छबि लाजत, मातु पिता कस गोर। दु०
गारि ससुरपुर सुनि रघुनन्दन, हँसत सुलखि मुख मोर। दु०
'कृपानिवास' हरषि सखि गावें, जुरि २ सियाजू की ओर॥ दु०

(१६)

जनि मनहि लजाउ कने और पाउ औ।
बनल अलोन सलोन जेह किछु,
जानि गवाँरिन छमा छाउ औ॥

प्रेमी जन चितवन मुसुकन हित,
तरसति छथि जनि तरसाउ औ।
भेटली स्वामिनि दुहुँ कुल तारनि,
हिनक आदर भाव मन लाउ औ॥
भेंटत दहेज मांगब जेजे से,
ताहि लै उदासी जनि लाउ औ।
हँसि मुख पाहुन नीक कहवै छथि,
हँसति 'मोद' हिय बसि जाउ औ॥

(१७)

छयलवा को देहौं चुनि चुनि गारी।
कंचन थार छत्तीसो व्यञ्जन, आनि धरो मनि थारी॥
जेंवत लालन सिद्धि सदन में, गावत सरहज सारी।
राजकुमारी अति सुकुमारी, शान्ता बहिनि तुम्हारी॥
देना तो चहिये राजकुवँर को, ले भागे जटाधारी।
राजमहल की ऐसी रीति है, बाहर काह गुजारी॥
लूटि न जावे अवध नगर की, सिगरी कन्या कुमारी।
जेंवत लालन मृदु मुसक्यावत, 'सियाअली' बलिहारी॥

(१८)

गारी खूब सुनैबै छयल अलवेला ललाजू॥
दृग पुतरिन के पोढ़ा बनैबै, अँखियन महँ बैठैबै।छयल०।
सरस रुचिर छत्तीसो व्यंजन, हित सों आनि जेमैबै।छयल०।

ससुरारी की गारी है प्यारी, सुनि सुनि कै न लजैबै ।छयल।
एके बहिन आपके लालन, हम पूछें केहि दैबै ।छयल०।
केते जतन करत हैं मुनिजन, तुव बहिनी के पैइबे ।छयल०।
बिनु शान्ती सुख लहत न काहू, झूठ तनक नहिं कहबै ।छयल०
सब जग चाह करत शान्ती को, कँह कँह उनहिं पठैबै ।छयल०
दीजै बहिन दान मिथिला में, 'सियाअली' यश पइबै ।छयल०

(१६)

क्या ही अजब रंगदारी ललन, ससुरारी की गारी।
बड़े भाग बनि आये जनकपुर, पाये सरहज सारी॥
प्रानहु से प्रिय पाहुन मेरे, सुनिये बात हमारी।
शोभा धाम श्याम सुन्दर वर, सुनिये बात हमारी॥
कैसे बची होयगी तुमसे, अवधपुरी की नारी।
औरो एक सही मैं जानति, तव कुल की उजियारी॥
अति अनूप मुनिजन जेहि जाँचत, ऐसी बहिन तुम्हारी।
जिनकी चाह करत सारे जग, तिनकी क्या रखवारी॥
मिथिलापुर घर घर में विहरें, शान्ता बहिन तुम्हारी।
'सियाअली' निज बहिनी के गुन, हिय में लीजै बिचारी॥

(२०)

अचमन करत राम सिय प्यारी।
सरयू नीर सीर अमृत को, नागरि कर वर झारी॥
हास विनोद परस्पर दोउन, बाढ़ी मदन खुमारी।
'कृपानिवास' अली कर अँचरा, परसन हेत समारी॥

(२१)

अचमन करत नवल पिय गोरी ।
श्री सरयू शीतल जल निर्मल, पीवत कुवँर किशोरी ।।
लै रुमाल कमल कर पोंछत,तन मन तृप्ति नैन लखि जोरी ।
'सरसमाधुरी' निरखत दम्पति,सुन्दर श्याम स्वामिनी मोरी।।

(२२)

भोजन करि बैठे पावत पान ।
गोरी नवल किशोरी सियाजू, प्रीतम श्याम सुजान ।।
कोउ अलि फूलमाल पहिरावत, अतर करावत घ्रान ।
वीरी वदन अधर छबि छलकत, मंद मंद मुसकान ।।
प्रीतम हँसि प्यारी तन हेरत, अरुन नयन अलसान ।
प्यारी कर गहि उठे लाल तव, 'रसिकअली' सुखदान ।।

(२३)

वीरी सरस सखी रुचि दीनी ।
लाइ प्रीति करि प्रीतम प्यारी, अधरन लाली लखी नवीनी ।।
मृदु मुसकात बात हँसि बोलत, सुनत सहेली रस में भीनी ।
'सरसमाधुरी' सैन करन को, युगल लालमन इच्छा कीनो ।।

(२४)

आरती जानकी लाल की कीजिये ।
आनन्द कन्द चन्द कोटिन छबि, नयन रसिक रस पीजिये ।।

प्रेम थार कर सकल सौज भरि, समय समय सुख दीजिये।
'कृपानिवास' विलास भवन में, युगल रमन रस भीजिये।।

(२५)

सखि आरती करैं छबिधाम की, लखि मूरति मोद निधान की।
मनि चौकी राजै सिया रघुवर, शोभा वहु रति काम की।।
मंद हँसनि मृदु पान चबावत, छवि अधरन विन दाम की।
'रसिकअली' सुख सेज सवाँरति, सिय रघुवर आराम की।।

(२६)

सिय सिय वल्लभ लाल की सखि, आरति करिये।
दम्पति छबि अबलोकि के, हिय नैनन धरिये।।
रूप अनूप सुहावनो, पट भूषन साजे।
नेह भरे दोउ रसिक, सुभग सिंहासन भ्राजै।।
मन्द मन्द मुसुकाय कै, सिय गरभुज डारी।
ललकि लई उर लाय प्राण प्रीतम निज प्यारी।।
ललना गन बड़भागिनी, लोचन फल पावैं।
'प्रेमलता' उर उमगि, सुमन नचि नचि बरसावैं।।

❀ दोहा ❀

अलि एक शयन कुंज की, विनय सुनाई आय।
चले विशद सुखपाल चढ़ि, शयन कुंज उमगाय।।

।। इति भोजन कुंज ।।

❀ मध्याह्न शयन कुञ्ज ❀

पद-१

रसिक दोउ सयन कुंज को जात ।।
भोजन करि मुख पान सुर्चावित, मन्द मन्द मुसुकात ।
आस पास सब सहचरि राजै, सुभग मनोहर गात ।।
पहुंचे शयन महल के भीतर, शोभा वरनि न जात ।
अति सुगन्ध चहुँदिशि महँ महँहकत,भवँर झुंड मँड़रात ।।
वैठे पलँगा पर दोउ प्यारे, करत व्यंग रस वात ।
कोइ सखि मधुरे वीन वजावति,गान करत स्वर सात ।।
पुनि दोउ मिलि अलसान लगे सखि,परदा करि चहुँकात ।
पौढ़ गये जब दोउ पलँगा पर, 'अग्र' चरन सोहरात ।।

❀ स्वागत ❀

दोहा:--

स्वागत पूर्वक ले चली, कुंजेश्वरि ललि लाल ।
चली पांवड़े डालती, रंग रंगीली बाल ।।

(२)

स्वागत में सिय लाल की, सखि आरती करिये ।
छबि लखि युगल किशोर की, हिय आनन्द भरिये ।।
मंगलमय श्रृंगार किये, मंगलमय सोहे ।
अरुनारे अलसाने नयन, निरखत मन मोहे ।।

वीरी रंजित लाल अधर, मुसुकन मन हरनी।
नाशामनि यकि यन्त्र धरे, सबके बस करनी ।।
युग युग लौं जोवे सदा, मन भावन जोड़ी।
'कान्तिलता' निरखत रहैं, निसदिन तृन तोड़ी ।।

(३)

सेज पै शोभित प्रीतम प्यारी ।।
चितवन सरस हरषि मुख निरखत, पीबत अधर सुखारी।
हँसि मुसुकाय करत रस बतियाँ, उमंगि अंग छबि सारी।।
अरस परस रस पुलकित दंपति, मधुर नीन्द दृग सारी।
हिलि मिलि सेज सुहावत दोऊ, 'रसमोद' निरखि वलिहारी।।

(४)

सेज सुख सोये सावँर गौरि।
प्रान वपुष मन लाय मोद सुख, सिमिटि भये इक ठौरि।।
लपटि भुजा तन सोहत मानो, नेहलता सुख द्रुमनि सकोरि।
पलक लगा वर वदन मनोहर, मीन सुधा सरबोरि।।
शीतल मंद सुगन्ध सुचिन्मय, समय समुझि पुलकोरि।
'कृपानिवास' सिया पद पंकज, सेवत नैन निहोरि।।

(५)

छके युगल रस रंग तरंगन।
शुभ तन शिथिल सिया नृप लालन,
ललना नवल लाल रस जंगन।।

भोजन कुंज से सैन कुंज चले,
रति अभिलाष उमंगन ।
नव तरुनिन तन ताकत हित भरि,
फेरि अंश भुज भरे अनंगन ।।
गावत वीन बजावत सहचरि,
पिय प्यारी गुन नव नद रंगन ।
'ज्ञानाअलि' मन मोद गोद सिय, बैठि सेज ये दोउ मिलि संगन ।।

(६)

रंगीले दोउ जात चले सुख भवन ।
अरस परस अंशन भुज दीने, मंद मंद गज गवन ।।
जनकलली रघुलाल सलोने, रति मनमथ मद दवन ।
सौज साजि चहुँ पास अलीगन, नूपुर पद गति लवन ।।
उठत सुगन्ध झकोर वसन अंग, मंद सुशीतल पवन ।
'रसिकअली' पौढ़े सिय रघुवर, सेज रंगीली रंग भवन ।।

(७)

राम सिया रंगमहल पधारे ।
मंद मंद पगधरत धरनि पर, हंस ठवनि छबि हारे ।।
खमा खमा कहि गहि भुज अलियाँ, भुज गरवाँह दिये दोउ प्यारे
मध्य विराजत रूप छबीली, मैन तिया मद गारे ।
'कृपानिवास' अली मन भावन, तल्प समीप निहारे ।।

(८)

शयन समय सुख आरती कीजै।
लाड़िली लाल निरखि छबि लीजै॥
युगल चरन मुखचन्द्र विलोकनि, नयननि सों अमृत रस पीजै।
राम सिया सुख सेज पधारे, महामोद आनन्द रस भीजै॥
'जयति प्रसाद' निवासअली छबि, एक पलक न्यारो नहिं कीजै

(९)

फूलन सेज सोय पिय प्यारी।
फूलन के शृंगार धारितन, हिल मिलि के गलबहियाँ डारी॥
फूलन के गद्दा अरु तकिया, फूलन के पट वसन सवाँरी।
फूलन के ही फरस गलीचा, फूल बिछोहैं कुंज मँझारी॥
फूलन के गुच्छा लटकतु हैं, फूलहिं वन्दन वारी।
'सरस माधुरी' केलि युगल के, जीवन प्रान अधारी॥

(१०)

शयन भवन शोभा कछु न्यारी।
कहत न बनै जान जो देखे, कृपा दृष्टि सिय प्यारी॥
युगल चरन कोउ मृदुकर कंजन, चापत प्रेम भरी सुकुमारी।
कोउ गावहिं कोउ यंत्र बजावहिं, कोउ ठाढ़ी मुखचन्द्र निहारी
कोउ वीटिका खवाय चन्द्रमुख, निज निज कुंज चली सब नारी
देखत फिरैं चित्र रचना वहु, कुंज २ सुख सेज सवाँरी॥
सोय रही सब जहँ तहँ सहचरि, प्रीतम छबि छकि २ मतवारी।

चित्र केलि दम्पति किलोल लखि,
'ज्ञानाअलि' पिय सुरति सँभारी ॥

(११)

सुन्दर सुघर शिरोमनि जागो ।
प्रीतम प्रान जीवन धन सिय के, मधुर केलि रस पागो ॥
लिये सौज ठाढ़ी ललना गन, जो चाहो सो माँगो ।
अवधचंद चन्द्रानिनि सिय संग, सखियन गोहन लागो ॥
सुमन कुंज जल केलि करो अब, मत मतंग गति बागो ।
युगल चन्द्र छवि पिवत 'ज्ञानाअलि', मन तुमहीं से लागो ॥

(१२)

दिवस मधि सोवत हैं सिय प्यारे ।
उत्थापन के समय समुझि सखि, चहुँदिसि ते आईं जुरि सारे ॥
मधुर स्वरन से गावन लागीं, मधुर यंत्र कर धारे ।
उठि बैठे अलसाने दोऊ, अंश भुजा दोउ धारे ॥
रतन जड़ित चौकी ता ऊपर, उतरि पलँग पाँव धारे ।
मुख प्रछाल सखि पुनि सिगार करि, रतन कटोरन में रसदारे ॥
मेवा मोदक सखी पवावहिं, अचवन करि मुख वीरी सुधारे ।
करन लगी उत्थापन आरती, 'अग्रअली' निज हाथ सुधारे ॥

(१३)

जागे सिय लाल सुनत सब धाई ।
सहचरि नवल किशोरी गोरी, प्रीति प्रेम अधिकाई ॥

निज निज सौज सुधारि सयानी, शयन भवन को आई।
बैठे सुभग सेज पिय प्यारी, निरखत छबि मुद छाई॥
अचवन दान अग्र धरि दीनी, ढारत जल सुघराई।
मुख प्रछाल अंगुछाय नवेली, दर्पन सन्मुख ल्याई॥
भूषन वसन सुधारत सिय के, रसिक लाल रघुराई।
अरस परस दम्पति मुख निरखत, 'रसिकअली' वलि जाई॥

(१४)

आरती उत्थापन की कीजै।
जनकलली रघुलाल बदन छवि, निरखि निरखि सुख लीजै॥
बैठे सुभग सेज गलबहियाँ, महा मोद रस भीजै।
विहँसनि वँक विलोकनि दुहुँदिशि, गात प्रेम रस भीजै॥
छवि आराम कल्प पादक सुनि, सकल मनोरथ सीजै।
'रसिकअली' मृदु वचन चुवत मधु, श्रवन पुटन रस पीजै॥

(१५)

आरती उत्थापन की करिये।
सुखमय सौज थार कंचन के,
वारत प्रान हरषि उर भरिये॥
गीत वाद्य नृत्य मोद सु कौतुक,
चमर बिजन छत्रन सिर धरिये।
'कृपानिवास' श्रीजानकी बर के,
रीझि रीझि पायँन परिये॥

(१६)

विनती सुनिये महाराज कुमार।
दूती केलि कुंज से आई, देखिये करती जुहार॥
कुंजेश्वरि मग जोहत प्यारे, सेवा सौज सुधार।
'कान्तिलता' स्वामिनि संग चलिये, जीवन प्रान अधार॥

॥ इति मध्याह्न शयन कुंज ॥

❀ केलि कुञ्ज ❀

पद-१

चले दोउ केलि कुंज उमगाय।
रघुनन्दन श्री जनक नन्दिनी, पुष्पक यान सजाय॥
छत्र चवँर पिकदान पान लिय, परिकर अति समुदाय।
नाचत गावत यंत्र बजावत, झुन्ड झुन्ड संग जाय॥
कदलि खंभ तोरन पताक से, सड़क सुरुचि सजवाय।
चहुँदिशिखड़ी रंगीली अलियाँ, मंगल कलश बनाय॥
चढ़ी अटारी कुंज कुमारी, पिय से नयन लड़ाय।
गगन विमानन देव कुमारी, फूलन झड़ी लगाय॥

(२)

आरति करि मन मुदित भइ तृन तोर॥
कुंजेश्वरि कर गहि प्रीतम को, जात लिये रस भोर।
सुभग सिंहासन पर बैठाये, छाइ घटा चहुँ ओर॥

मुख अँगुछाय वहु मेवा खवाये, स्वाद कही रस बोर।
पान अतर 'रसराज' दिये पुनि, लगे खेलन चित चोर॥

(३)

❀ आँख मिचौली लीला ❀

खेलैं दोउ रसिया आँख मिचौनी।
सुभग सिंहासन पर दोउ राजैं, पिय प्यारी सुठि लोनी॥
मनिमय शीशमहल की रचना, हिय अनुराग जगोनी।
पिय की आँख सखी एक मूँदो, सब छिपि कुंजन कोनी॥
कुंजेश्वरि पिय आँख खोलाई, तब चले हरष हेरौनी।
अमित रूप धरि आय सुपकरी, केलि करें सरसौनी॥
खेल खेलि दोउ संग विराजैं, लगी आरती होनी।
'प्रेमलता' सिय पिय कल कौतुक, निरखत चित्त लुभोनी॥

❀ दोहा ❀

सबके मन अभिलाष लखि, पिय प्यारी रुचि पाल।
अमित रूप धरि अलिन संग, करन लगे रस ख्याल॥
काम सदन वहु रूप धरि, लगे विहरने लाल।
अमित रूप धरि सखिन तन, प्रविश कीन्ह सियलाल॥

(४)

बंगला अष्ट सुमन कर सुन्दर, सुभग तड़ाग सोपान री।
प्रथमहिं बैठि मधुर फल पावहिं, गावत अलिगन गान री॥

कीर पढ़ावहिं कौतुक निरखहिं, कतहुँ सो झूलन लाग री।
खेलहिं चौपर मरम वचन पुनि, बुझवहिं मन अनुराग री॥
चलत फुहारे विविध भाँति के, खेलहिं पुनि रस फाग री।
पुनि कुंजन 'रसराज'सु यहि विधि,निरखहिं जेहि बड़भाग री॥

(५)

सरस रस चाखत फलहिं मगाये।
मिष्ट आम अमरूद अंगूर अरु, फल अनार के भोग धराये॥
नारंगी केला अरु जामुन, सेव फालसा परम सुहाये।
सजी थार अलि अतिहि प्यार सों,दम्पति को निज हाथ पवाये॥
अचवन करि मुख पोछि वसन सों, वीरी देत अतिहि हर्षाये।
'सरसमाधुरी' फूल माल रचि, पिय प्यारी को पहिराये॥

(६)

❀ बाग विहार ❀

बाग विहार करन चले प्यारे।
श्री नृपनन्दन जनकनन्दिनी, रूप गुनन दोऊ उजियारे॥
सखियन करि शृंगार अंग अंग, पुनि पिय प्यारी के शृंगारे।
यूथ यूथ सखि चली संग में, ह्वै गजरथ ऊपर असवारे॥
कोइ सखि सिर पर छत्र किये हैं,शुभ्र चवँर कोउ लिये करधारे
औरन सखि लिये बहुत सौज कर, पहुँचे जाइ बाग के द्वारे॥
सखियन युत गजरथ से उतरे, वागेश्वरि सुनि दौड़ि पधारे।
यूथ अनेक संग सखियन लिये, पूजन के सामा कर धारे॥

पट पावँड़ि दइ लै गइ भीतर, रतन वेदिका पर बैठारे।
धूप दीप आदिक विधि करके, सखिन सहित पूजे दोउ प्यारे
पुनि दोउ बाग विहार करन लगे,रौसन पर दोउ फिरत खेलारे
कहुँ दोउ पुष्प उतारि कमलकर, थाके धरे सु न्यारे न्यारे।।
रचि रचि भूषन विविध रंगके, निज निज चतुराई विस्तारे।
प्यारी प्यारे अंग पहिरावत, प्यारे प्यारी के अंग धारे ।।
कहुँ मोरन के यूथें नाचै, कहुँ शुक पढ़ रस चरित अपारे।
कहुँ वहुविधि के छुटत फुहारे,ग्रीषम ऋतु पावस सम धारे।।
वहुविधि करि विहार दोउ जोड़ी,
'अग्र' साँझ लखि महल पधारे ।।

(७)

।। शुक-सारिका पाठ ।।

युगल रसिया शुक सारिका पढ़ावै ।
कर कमलन गहि कनक पींजरन, दै चारा परिचावैं ।।
जनकलली कहि अवध छैल तब, सोनै सों चोंच मढावैं।
शुक प्यारी गुन सारि पिये गुन, भाखे मधुरे गावै ।।
'मंजुलता' सुनि छबि लखि अलियाँ, हिये न फूलि समावै ।

(८)

स्वामिनी हमारी सिया सर्व सिर मौर है।
समता में कने मनै अवध किशोर है ।।

मैना कह्यो सुग्गी तूने कियो नहिं गौर है।
राम घनश्याम मेरे सर्व सिरमौर हैं॥
सुग्गी कह्यो अंधा तेरे हिये में न दौर है।
देखो न कलँगी झुकी प्यारी पग ओर है॥
मैना कह्यो कोटि काम राम घनश्याम हैं।
रामचन्द्र चन्द्र छबि और तारे व्योम है॥
सुग्गी कह्यो राम सुखमा के शाहंशाह हैं।
तदपि लखात मेरी सियाजू की छाँह है॥
मैना कह्यो मेरे राम गुननिधि ज्ञानी हैं।
सुग्गी कह्यो भूषन धुनि सुनि भयो पानी है॥
मैना कह्यो मेरे राम विश्व बसकारी हैं।
सुग्गी कह्यो सिया सुधि संध्या हूँ बिसारी हैं॥
मैना कह्यो राम भजे विधि त्रिपुरारी हैं।
शुग्गी कह्यो सिया हित पैदल पधारी हैं॥
मैना कह्यो मेरे राम आनन्द के घन हैं।
शुग्गी कह्यो सिया होत वाम जखन हैं॥
मैना कह्यो हारी हम हारी हम हारी हैं।
दम्पति चरन पर 'मोद' वलिहारी हैं॥

॥ दोहा ॥

हे शुक सुखकर वचन वर, रटहु निरंतर नाम।
जनक सुता श्री जानकी, दशरथसुत श्रीराम॥

जनक नन्दिनी जानकी, दशरथ नन्दन राम ।
शुक सारिका पढ़ावहीं, अपने अपने काम ॥
रघुनायक रघुचंद वर, रघुवंश विभूषन लाल ।
जनक किशोरी जानकी, जनक लड़ैती बाल ॥

॥ कौतुकागार ॥

दोहा :—

भाँति भाँति के कौतुक, उघटन लागे लाल ।
देखि देखि मन मुदित पिय, सिय प्यारी सब बाल ॥
महारास के रहस कबहुँ, चित्रन धरि दिखरावहिं ।
जहँ सिय पिय धरि विविध रूप, सब अलिन रमावहिं ॥
जल क्रीड़ा के दृश्य कवहुँ, पिय अलिन दिखावहीं ।
फाग विहार रंग सब, नाना रंग करावहीं ॥
कहुँ होरी की नकल किशोरी सहचरी ।
अविर गुलाल उड़ावहिं पिय संग रंग भरी ॥
कँवहुक व्याह उछाह जनकपुर साज समाज ।
कोहवर दृश्य लखहिं सारी सरहज के राज ॥
छन रचना सब अरुन रंग, छन सब पीत दिखात ।
छन सो नील रंग देखिये, छन सब हरित दिखात ॥
पुनि हिंडोल विहार कुंज वन, गिरि सरि माँहीं ।
समय समय सब दृश्य चित्र में, प्रगट लखाहीं ॥

❀ दोहा ❀

पुनि अमृतसरा चौक में, आये सिय रघुचन्द।
जहँ मेचक मनि साज सब, देत परम आनन्द ।।
रघुवर सहजहिं सावँरो, मेचक मनि की भाँति।
रसिक तहां उपमा मनो, मिली रात्रि गन राति।।
लखे न कोऊ परस्पर, मच्यो महा रस जंग।
कुंजन प्रति विहरन लगे, कोक कला रति रंग ।।
अगनित रूप बनाय के, एक एक अलि के संग।
लगे विहरने लाल जब, मोहे रती अनंग ।।

❀ प्रहेलिका (बुझौवल) ❀

दोहा :--

अति विचित्र रचना तहाँ, लखि हरषे सिय लाल।
मध्य मंडप सिंहासन ऊपर, बैठे अलि प्रतिपाल ।।
कहत लाल सुनु लाड़िली, देखत हो नहिं प्यारि।
घन पै रवि रवि में कवि शुक युत, तहँ करत विहारि ।।
पान पवावत परस्पर, करत सु हँसि हँसि वाद।
रचि रचि रुचिर प्रहेलिका, यथा उचित मरयाद ।।
प्रीतम कह सुनु लाड़िली, हम देखत तुम नाहिं।
युग सरोज एक चन्द्रमा, रवि मंडल के माँहि ।।

(९)

❀ चकई खेल ❀

ललो लाल छबि जाल फसते फंसाते।
लसे चौक में चारु चकई नचाते॥
कसत डोर करकंज अति ही सुहाते।
नचत देख चकई सु हँसते हँसाते॥
पिय माधुरी मन मदन मोद माते।
श्रवन नैन रसना न मनहुँ अघाते॥
फिरैं चौक में चारु चकई नचाते।
सु किंकिनी की झनकार नूपुर बजाते॥
'रसमोद' पाकर न फूले समाते।
'सियकान्ति' पै विश्वमोहन विकाते॥

(१०)

चकई चतुर चाल सिय कर नचैरी।
छनन छनन तान लै लै करत गान,
सुरतिय तजत भान, कटि जनु लचैरी। ललि २ नचैरी॥
वाद्य यंत्रन मिलित ताल लाबैं विविध,
नया कौतुक रचैरी।
पिय हिय जमत रंग नाचे तियन संग,
सिय पिय रस जंग बहु विधि मचैरी॥
पुनि पुनि उमगि सिय पिय की हरत हिय,
चतुराई कमनीय सबको जचैरी।

सेवति सिय पाँय 'रसकान्ति' भरि भाय,
'रसमोद' सरसाय छबि हिय सचेरी ।।

(११)

चकई नचावै सिय पिय अलियाँ ।
अवध छैल अरु जनक लड़ैती, संग सखी सहचरियाँ ।।
कनक मनिनमय चकई सुहावन, रेशम डोरि लगी भलियाँ ।
बिलग बिलग निज दाव सम्हारत, जितन करै कलवल छलियाँ ।।
रस अनंग वाजी पर राखत, जीति लुटै अंग रस रलियाँ ।
हारि गये पिय चतुर खिलाड़ी, जीति लई मिथिला ललियाँ ।।
तारी दै दै 'कान्ति' हँसत सब, हारे पिय जालिम जलियाँ ।।

।। लट्टू क्रीड़ा ।।

दोहा :—

लट्टू कला प्रवीन तहँ, यूथेश्वरी सुजान ।
लट्टू रंग अनेक के, देत सबनि कहँ आन ।।
ललकि लटकि लटु फेंकि पुनि, झलके कर तल कंज ।
जनु सरोज मधि बैठि कै, मधुप पियत मधु पुंज ।।
मेचक लटू घुमाय कै, धरत सु कंचन थार ।
सूर अंक सौरी करत, मनु लरिकाई चार ।।
घूमत लटु वहुरंग के, मनि सु चौक छवि देत ।
जनु नव ग्रह दुहुँ लोक के, निज निज रूप सो हेत ।।

फेंकत लट्टु महि गिरत सो, अनुपम उपमा देत।
जनु नव खग आकाश ते, आय भूमि सुख लेत॥
फेकि झेलि करतल धरत, फूल छड़ी की नोक।
मदन वान पर नचत जनु, नव रस सुगति विशोक॥
भ्रमर लटू सब नागरी, फिरत सु मृदु कर कंज।
मुकुलित कलिका कंज की, खोलत जनु अलि पुंज॥
जल यंत्रों से छूटि रहे कहुँ, वहु विधि इत्र फुहार।
कयारी कयारी सजे फूल के, गमला अमित प्रकार॥

(१२)

सरस उमंग भरे पिय प्यारी॥

रंग भरी सखि चन्द्रकलादिक, निरखि प्रेम मतवारी।
वैठे आय सुमन बँगले जहँ, छूटत अतर फुहारी॥
पिय प्यारी पर सव न्यौछावरि, तन मन सुरति विसारी।
'अलिसोहाग' अनुराग उमंगि उर, जय २ जयति उचारी॥

❀ फूल बँगला ❀

(१३)

सुमन महल राजत पिय प्यारी।
सुमन अंग भूषन सुमनन की, सुमनन की तन सारी॥
सुमन वारि दोउ दिशि अलि ठाढ़ी, सुमन मोरछल धारी।
निज सुमनन दोउ हारि जात हैं, निरखि अलक घुंघरारी॥

सुमन निकुञ्ज कुंज सुमनन की, सुमन 'मोहिनी' डारी।
सुमनन के सरवर ढिग राजत, भरि सरयू सरि वारी ।।

(१४)

बैठे दोउ नवल नेह भरे, नृप नन्दन जनक दुलारी ।।
सुमन सिंगार किये अंशन भुज,
दिये शोभा अति भारी।
पिय सिर पाग सुमन को जामा,
सिय तन सुमन की सारी ।।
बहु विधि सुमन हार पहिरे उर,
सुमन गुच्छ कर धारी।
सुमन सिंगार किये बहु वनिता,
नव वय अति सुकुमारी ।।
कोउ कर पानदान पिकदानी,
कोउ शीतल जल झारी।
अतर अनेक प्रकार लिये बहु,
बहु गुलाब सुठि वारी ।।
कोउ अति मधुर मधुर स्वर गावति,
चोप राग नित हारी।
'रसिकअली' यह अद्भुत शोभा,
निरखत तन मन वारी ।।

(१५)

किये दोउ राजत सुमन सिंगार।
बैठे कनक भवन आँगन विच, सुमन गुच्छ कर धार।।
प्यारी के सिर सुमन चन्द्रिका, पिय सिर कलँगी धार।
'रसिकअली' सिय रघुवर छबि पर, वारिये वहु रति मार।।

(१६)

गरमी के दिन में फूलों का बंगला बनाइये।।
रंग रंग बूटों से उसको सजाइये।
दरवाजा तरहदार सुरुख सब्ज सोहावन।।
कुन्दन की कली पीत चमेली से छवाइये।
मेंहरावो में मुहब्बत गुच्छे नवीन लाइये।।
हर चार तरफ उसके गुलाबों की टट्टियाँ।
कोमल कमल अमल की फरसें विछाइये।।
नख शिख सिंगार साजि के हर तौर से प्यारी।
श्रीजानकी जीवन को उसी में लाड़ लड़ाइये।।
कुसुमन के सुभग सेज सरस रचि के तरह दार।
'अली हेमलता' लली लाल छबि समाइये।।

(१७)

कीन्ह सिंगार गुलाब के फूलन,
साँवरो फूलि के फूलन जोहै।
चम्पकली सखियान के बीच में,
पंकज नील कली जिमि सोहै।।

मोतिन धाम में धाम गुलाब को,

छुटत सुगन्ध दिशान को मोहै।

'रामसखे' सरयू के लतन में,

रूप वितान तन्यो मन मोहै॥

(१८)

फुल बंगला में राजै नवल रसिया।

नख सिख लौं सिंगार सुमन को,

अंग सों अंग रहे गसिया॥

अगनित यन्त्र छुटत फुल वगिया,

त्रिविध समीर सुखद लसिया।

'प्रेममोद' ग्रीषम ऋतु सरसत,

सिय पिय रूप हिये वसिया॥

(१९)

लै चलु बाँके यार, खसखाने दार बंगला।

सरयू तीर पुनीत सोमवट, झर झर परत फुहार॥

बाजे मधुर मृदंग बजाय सखि, गावत तान पियार।

'नवलअली' तिन कुंजन में, पिय संग करिय बहार॥

(२०)

युगल ललन नव छबि शृंगारे।

फूल सेत चाँदनो सु फूलन, फूल पाग सिर धारे॥

जामा फूल फूल के पटुका, फूल पेंच गल हारे।
फूल कंचुकी चूनरि फूलन, फूल मांग झल कारे॥
फूल माल दोउ गरे विराजत, कोटि चन्द्र उजियारे।
मानो फूल सिन्धु में खेलत, रति मनोज द्वै तारे॥
फूल सिंगार देखि प्रीया प्रीतम, सखियाँ प्रान विसारे।
'जानकिवर' की मूरि सजीवनि, वाह कहत वलिहारे॥

(२१)

बंगला फूल मध्य दोउ बैठे, सोहत श्यामा श्याम॥
अरुन वसन प्यारी तन राजत, प्रीतम पीत ललाम।
जाही जूही ललित चमेली, सेवत बेला दाम॥
झम झम परत गुलाब फुहारे, घनन घनन घनश्याम।
निरखि प्रिया अनुपम छबि प्रीतम, नवल रूप अभिराम॥
कहत बनत नहिं कहौं कहा सखि, ये कामहु के काम।
प्रीतम देखि प्रिया सुन्दरता, कहत मनहिं मन राम॥
हम तो विके सदा इनके कर, विना मोल के दाम।
रहो सदा आनन्द परस्पर, 'जानकिवर' सुखधाम॥

(२२)

फुल बंगले में सोहै युगल रसिया॥
फूल के हार हमेल विराजै, फूलों की सोहै नवल पगिया।
शीशफूल कर्णफूल फूल को, फूलन ही की लसी अंगिया॥
खेलत फूल गेंद लिये दोऊ, चित चोरत सखि मृदु हँसिया।
'सियाअली' तन मन फूलेरी, फूल विहार वसी अँखिया॥

(२३)

बंगलइया में राजे मजेदार यार ॥

आस पास फूलन की क्यारी,
बीच में फूल्यो गुलाब जेवदार ।
चोवा चन्दन अतर अरगजा,
ऊपर से बरसे गुलाब के फुहार ॥
रसिक विहारिनि रसिक बिहारी,
रसिया रसिक हिया के हार ।
'मौन' कहत छबि देखु सहेली,
अवध विहारी को लागो दरबार ॥

(२४)

रसिक दोउ देखु री तरु तरे ।
सुरतरु वर तर तन्यो चँदोवा मोतियन झालर लरे ॥
चन्द्रकला अलि चवँर ढुरावै, मनिमय दीपक वरे ।
अतर गुलाबन केर फुहारे, चहुँदिशि फूहीं परे ॥
झीने वसन मलयतन लेपन, कछु २ भूषन धरे ।
'रामसखे' फूलोंदी गजरा, को न निरखि मन हरे ॥

(२५)

सजि सुमन श्रृंगार दोउ सोहैं भरे प्यार,
छाई शोभा की वहार फूल बंगला में ॥

दोउ गर भुज डार देखैं दृग पट टार,
प्रेमी जन वलिहार फूल बंगला में।
मन्द मुसुकैं निहार करैं हिया आर पार,
रस वरसै अपार फूल बंगला में॥
झाँकी झाँकि मजेदार गावैं गुनी यन्त्र धार,
होत सुमन न्यौछार फूल बंगला में।
धन्य स्वामिनी हमार धन्य राधो सरकार,
'मोद' माचै जयजयकार फूल बंगला में॥

❀ आरती ❀

(२६)

सुमन आरती सीय रमन की॥
सुमन सिंहासन तापर राजत,
सुमन छत्र चामर सुमनन की।
सुमन चन्द्रिका क्रीट सु कलँगी,
कुण्डल तरिवन लसत सुमन की॥
सुमन माल दम्पति उर झलकत,
सोहत भूषन वसन सुमन की।
चहुँदिशि अलिगन सुमन सवाँरे,
लिये खड़ी सब सौज सुमन की॥
गलबहियाँ दिन्ही पिय प्यारी,
दोउ करकंज सुगुच्छ सुमन की।

(३६)

सखि आरति करु रस प्रेम भरी।
सिय रघुवर को शृंगार करी॥
मनिमय थार सखिन कर राजत,
बाती रवि शशि दुति निदरी।
बाजहिं ढोल निशान दुन्दुभी,
शंख झाँझ करताल घरी॥
नाचहिं गान करहिं सखि थेइ थेइ,
सुमन माल मनि होत झरी।
'राम चरन' सिय राम रूप लखि,
सखि आनन्द रस सिन्धु परी॥

(३७)

❀ दूती फाग कुञ्ज की ❀

लाड़िली पिय संग चलिये, खेलिये नवल बसन्त।
नवल उमंग दशहु दिशि उमगत, फाग कुंज विकसंत॥
कुंजेश्वरि नव फाग कुंज की, साज सजाय अनन्त।
मग जोहत सोहत सखियन संग, सब के हिय हुलसंत॥

॥ इति केलि कुञ्ज ॥

-[❀]-

❀ फाग कुञ्ज ❀

पद–१

खेलत बसंत पिय प्यारि संग।
चलो फाग कुंज भरि नव उमंग॥
सोह संग सहचरी समाज।
साजे होरी के विविध साज॥
बाजे मृदंग डक वेनु ताल।
गावहिं चाचरि पिक बैनि बाल॥
सिर छत्र चमर व्यजनादि धार।
आये नव फगुआ कुंज द्वार॥
कुंजेश्वरि आरति कर सम्हार॥

(२)

॥ स्वागत आरती ॥

आरती सिय सुकुमारी की। करिये कुञ्ज बिहारी की॥
होरी रस में छके छकाई, अबिर गुलालन धूम मचाई,
रंगों की तरंगिनी बहाई, सरसिज रति मदहारी की।
खेलन फाग हेतु पधारे, अहो भाग है आज हमारे,
बने रहो दोउ प्रीतम प्यारे, सखियन मन बसकारी की॥
स्वागत करि पुनि पाँवड़े डारो,
तन मन धन लालन पर बारो,
बेगि लिवावहु दोउ प्यारे को, सखियन प्रीतम प्यारी की॥

(३)

॥ दूती सम्वाद ॥

सुनिये सिय स्वामिनी मेरी,
दूती मैं अवधेश कुमार की, प्रीतम की भिजवाई ।
नेक न कीजे देरी, होत अति अवसेरी ।
देश देश की राजकुमारी, नव योवन मतवारी ।
कन्या सुर गन्धर्व गोप की, सैन सजी हैं अपारी ।
कठिन होइ हैं मुठभेरी, रंग की जंग छिड़ेगी ।
अवीर गुलाल और कुमकुमन की, ढेरन ढेर सजाई ।
केशरि नीर गुलाब वारी, रंग हौजन हौज भराई ।
सरस रस रंग मचेगी, चलेगी एक न तेरी ।
तुम हो 'कान्तिलता' की स्वामिनी, खबर देन हौं आई ।
जाइ कहौं मैं प्राननाथ सों, जैसी होय रजाई ।
कहो रुचि निज मन की,
जान मोहि निज आपन चेरी ॥

❀ दोहा ❀

प्रान प्रिया की एक सखी, बोली पिय परचारि ।
बड़े बने रघुवीर हो, चलो रचाओ रारि ॥

(४)

तुम तो नित रारि मचाओ, जबै जस अवसर पावो ।

आजु तुम्हें धरि के रघुनन्दन, मुख भरि रंग लगावों ॥
छीनि लेउँ कर ते पिचकारी,
तब सिय सखी कहाऊँ, भली विधि नाच नचाऊँ।
आज तुम्हें धरि के रघुनन्दन, सुन्दरि रूप बनाऊँ ॥
लै जेहौं मिथलेश लली ढिग,
पिय कहि पायँ पराऊँ, चूक सब माफ कराऊँ ॥

❀ दोहा ❀

फाग चौक दोनों तरफ, ठाढ़े युगल समाज।
पिचक्रा अबिर गुलाल सब, साजे निज २ साज ॥

(५)

वनि आये छैला होरी के, करत फिरत रस चोरी के।
चीरा चारु सीस पर राजत, भाल तिलक दिये रोरी के ॥
फेंट गुलाल हाथ पिचकारी, संग सखा लिये जोरी के।
'राम रसिक' अब होन चहतु हैं, हल्ला जनक किशोरी के ॥

(६)

रंगीली सिया होरी खेलन आई।
लोचन चपल चलावत चंचल, अंचल दै मुसुकाई ॥
बरसत रंग अनंग अंग अंग, लाल रहे ललचाई।
'कृपानिवास' स्वामिनी सुन्दरि, होरी होरी कहि गाई ॥

(७)

होरी खेलन लाईं सखियाँ, सुघर सिखाय।
वारी जनकदुलारी लड़ैती, सुखमा वरनि न जाय ॥

फाग चौक बिच ठाढ़े पिया सजि, केसर रंग बनाय।
चन्द्रकला कर दई पिचकारी, रंग भरी सुख छाय॥
प्रीतम दिशि चलाई प्यारी, तब पिय रहे मुसकाय।
चतुर चूड़ामनि लै कर पिचका, सखियाँ दई भिजाय॥
धूम मची दोहुँ ओर छमाछम, नूपुर धुनि रहि छाय।
बाजत चंग मृदंग झाँझ डफ, कलरव गान सुहाय॥
'रसिकअली' यह युगल केलि पर, निरखि न नैन अघाय॥

(८)

अँखियन भरत अबीर री वह, पीर न जानत।
मुरकावत धरि नरम कलैयाँ, ऐंचत धरि २ चीर॥
झकझोरत मोहि पकरि २ अंग, मारत तकि दृग तीर।
'मोहनि' छिन २ अंक भरतु हैं, कसि कसि के बेपीर॥

(९)

होनी होय सो होय सखी,
मैं तो पिया की पगरिया भिजाऊँगी।
पगिया भिजाउँगी नीके खिझाउँगी, अपनी ओर बचाऊँगी॥
खंजन दृग अंजन सिर सेंदुर, नकबेसर पहिराऊँगी।
बेंदी भाल कपोलन रोरी, कुमकुम मारि भगाऊँगी॥
कर कंकन चूरी पग नूपुर, सिर से चुनरी उढ़ाऊँगी।
ऐतेहु पर जो हारि न मानें, तो धरि संग नचाऊँगी॥

अवीर गुलाल लाल मुख मीड़ौं, धरि गलभुज सुख पाऊँगी।
'ज्ञानाअलि' जो औसर चूकी, तो फिरि फिरि पछताऊँगी॥

(१०)

चलोरी चलोरी खेलैं फाग।
सिय प्यारे को पाग रगोंगी, बहुत दिनन की लाग॥
लावोरी सजि सौज सलोनी, होरी को बड़ भाग।
'ज्ञानाअलि' सुनि श्रवन सुहावन, छन छन नव अनुराग॥

॥ दोहा ॥

अलि बोली अनखाय कै, सुनो छयल रघुवीर।
हा हा तुमहिं खवाइहौं, धरो हिये बिच धीर॥
हौं अवला सुकुमार पिय, अनय कियो बरजोर।
नव उरोज रंग मारि कै, आप हँसे मुखमोर॥

(११)

फूल फाग खेलत पिय प्यारी।
अमित रूप छरि लाल रसिक मनि, जूझत संग २ प्रतिनारी॥
सुमन गेंद लै प्रीतम ताड़त, रतिघर अधर उरोज निहारी।
तंसहि तियगन पिये प्रहारत, सुमन वान मनसिज रसकारी॥
रसबस भये करै हिय कसमस, पिय तियगन संकोच बिसारी।
'कान्तिलता' तेहि अवसर को रस, बरनत ब्याज खोज हियहारी॥

(१२)

खेलैं राघोजी तियन बिच होरी।

लाल गुलाल भरे तन सोहत,

मरकत सैल अरुन पसरयोरी ।।

बिथुरे कच आनन छबि राजत,

चन्द चहूँ दिशि राहु फिरयोरी ।

कर कंचन पिचका अस सोहत,

जनु अहि मनि मुख लै निकस्योरी ।।

पकरि तियन मुख रंग मलत जनु,

राहु अतन लै शशि झगरयोरी ।

'रसिकअली' यह रूप सुधा निधि,

जानि अक्षय मन मीन भयोरी ।।

(१३)

सइयाँ जाने न पैहो, डारो न मोपै रंग ।
श्री मिथिलेश लली को अली सब, आनि जुरी इक संग ।।
सुनि सकुचाय रमाय दृगन दृग, बोलत वचन उमंग ।
काह करैगो विपुल नारि, लगि जाओ हमारे अंग ।।
कंठ लगाय भिजाय मोजि रंग, बढयो परस्पर जंग ।
'युगलप्रिया' यह फाग अनोखी, लखि रति पति मद भंग ।।

(१४)

सखियाँ लागी छिरकन रंग, पट पकरयो पटरानी ।
मनहुँ तमाल फलन हित कोटिन, दामिनि सींचत पानी ।।

केशर नीर अंग सों ढरकत, उपमा कछु उर आनी।
मानहुँ नील शिखर सों झरि २, शारद धरनि बहानी॥
बागो वसन लसन तन की छबि,कवि कोविद थकि बानी।
मानो सुखमा गन कुमकुम सों,रचि चरचित रूप सिहानी॥
तापर डारत लाल गुलालन, बाल सबै मुसुकानी।
'कृपानिवास' रसिक राघो सों, सिय की केलि बखानी॥

(१५)

मद छाकी छबीली, गहि प्रीतम को रंग बोरे री।
मंद विहँसि मुख मोरि फेरि दृग, झकझोरनि चितचोरे री॥
छीनि लई कर सों पिचकारी, मुख मीड़त बरजोरे री।
'रसिकअली' राघो कर जोरत, गहि रहि अंक न छोरे री॥

(१६)

आज चलो सजि फौज पिया को, मैं फाग खेलाऊँ।
उनके साथ फौज रघुवंशी, निमि वंशी दिखराऊँ।
श्याम को मान नवाऊँ ॥आज०॥
श्रीप्रमोद वन जाय कहो कोउ,फाग को साज सजाऊँ।
फूलछड़ी कुमकुमन मारि कैं,पिय की फौज भगाऊँ।
तबै निमिवंशी कहाऊँ ॥आज०॥
घेरि अकेलि गुलाल मेलि मुख, चुम्बन धूम मचाऊँ।
नवल की ऐंड़ छुड़ाऊँ ॥आज०॥

'युगलप्रिया' तब नाहिं कहौं कछु,
मिलि हिय कंठ लगाऊँ ।
रसिक सौ होरी गवाऊँ ।।आज०।।

(१७)

होरी खेलत राजदुलारो ।
अपने पिया पर उमगि उमगि उर,
मारत रंग भरी पिचकारी ।।
चन्द्रकला विमलादि अग्र सखि,
इत उत सैन सजो है अपारी ।
कंकन किंकिनि नूपुर को रव,
पूरि रह्यो पुर में दिशि चारी ।।
बाजत चंग उमंग बढ़ावत,
गावत गीत रसीली गारी ।
उड़त अबीर गुलाल छयो नभ,
वहि चली रंग तरंगिनि भारी ।।
दुहुँ दिशि फूलन गेंद कुमकुमा,
फेंकत दौरि प्रचारि प्रचारी ।
'रसिकअली' उत जै रघुवर पिय,
इत जै जनक दुलारी ।।

(१८)

सलोनी सिय गोरी पिय संग, खेलन आई होरी ।

सजि नव साज समाज सखिन मिलि, घेरि लियो चहुँ ओरी ॥
कोउ मुख अबीर मलत वरजोरी, कोउ कटि पट झकझोरी ।
कोउ अंजन दृग आँजि नवेली, कोउ हँसत मुख मोरी ॥
नख सिख तिय छबि साजि छबीली, छवि निरखत तृन तोरी ।
'ज्ञानाअलि' कर पकरि सिया ढिग, देखिये या नृप छोरो ॥

(१९)

होरी जनकलली संग, खेलत राजकुमार ।
अबिर उड़ावत धूम मचावत, गावत राग मलार ॥
मलि गुलाल मुख चूमि लेत हँसि, अवध छयल दिलदार ।
'मोहनिअली' प्रेम में दोऊ, सुधि बुधि दीन्ह बिसार ॥

(२०)

पिय प्यारी मिलि खेलैं होरी ।
श्याम गौर मन हरन वरन वर, राम सिया रंग बोरी ॥
फाग विहार करैं नित नूतन, मिल नव सुख सरसोरी ।
जियो जुग जुग यह जोरी ॥
अबिर गुलाल की धूम मचो नित, नित नव रंग बरसोरी ।
फूलन की नित मारा मारी, नित रसमय झकझोरी ॥
अचल रहे अहिवात सिया को, भाग सुभाग बढोरी ।
मंगल मोद विनोद अलिन, 'रसकान्तिलता' विलसोरी ॥
सदा रस गान करोरी ॥

(२१)

रंग होरी में प्रीतम प्यारी बने ।
सजि नव सप्त शृंगार मनोहर, द्वादस भूषन अंग ठने ।।
सारो चटक रंग की सुन्दर, अँगिया के बंद नाहिं तने ।
बेसर हलनि मंद मुसुकावनि, तिरछी चितवनि हरत मने ।।
झमकि झूमि झुकि चलनि सुहावनि,
मन मथ गज लखि लाज घने ।
'प्रेमलता' छबि निरखि अलि हरषित,
विजय निशान हने ।।

(२२)

नव नागरि वाल वने रसिया ।
दृग अंजन खंजन रतनारे, तकनि तीर वाँकी गसिया ।।
वेंदी भाल विसाल विराजे, नकवेसर लटकन लसिया ।
'कंचन कुवँरि' श्याम तन सारी,
घुंघट पट मुख छबि ससिया ।।

(२३)

वाह वाह री अवध नृपति छोरी ।
वेंदी भाल अधिक सिर सोहत,
दोउ नयनन अंजन कोरी ।
कटि लहँगा अंग माँहि कंचुकी,
विछिया बजत चलत खोरी ।।

लक्ष्मी निधि सों तोहि व्याहिहौं,
भली बनी सुन्दर जोरी।
जनकलली वड़ि ननद तुम्हारी,
इनके पाँय लगो गोरी॥
दीजै नेग पाँय लागन को,
जो कछु मातु दियो तोरी।
'हरिजन' रसिक लगे जब नाचन,
होन लगी हो हो होरी॥

(२४)

डफ बाजै जनक दुलारी की॥
नव सत साज सजी सब सखियाँ, नव योवन मतवारी की।
लपटि झपटि सब सखा भगाई, धूम मचाई गारी की॥
राजकुमर को पकरि मँगाई, जीत लिखाई प्यारी की।
'कृपानिवास' रसीली अखियाँ, रसिक जनन रसकारी की॥

(२५)

डफ बाजै राजदुलारी को।
दुहुँ दिशि सखी जड़ाउ छड़ी लिये,
पिचकन कर अवध विहारी को॥
मारा मार मचो कुञ्जन में,
छायो गुलाल अँधिकारी को।
यह छबि देखि मगन भये सुर मुनि,
'अग्रअली' वलिहारी को॥

(२६)

बलिहारी अली दोउ प्यारे की ।

रंग रंगीले अतिहि छवीले, वचन पियूष उजारे की ।
गाल गुलाल लगावत दोऊ, अरस परस भुज धारे की ।।
गौर श्याम मन हरन सुहाये, रति मनमथ छवि वारे की।
'प्रेममोद' तृन तोरि विलोकत, जीवन प्रान हमारे की ।।

(२७)

सखि सब भोग थार सजि लाई ।

पिसता और बदाम छुहारा, किसमिस गरी मिलाई ।।
मोदक मेवा और विविध विधि, मोहन भोग मलाई ।
मधुर मिठाई फेना फेनी, गुझिया पावत मन भाई ।।
मोद सहित सब पाइ परस्पर, अचवन सखिन कराई ।
'नेहलता' मुख पोंछि वीरो दै, तिरछी नैन घुमाई ।।

(२८)

❀ आरती ❀

आरती करु नीकी नवल गोरी ।।

दोउ कर कमल कनक पिचकारी, कुम र केशर रंग वोरी ।
दोउ रससिधु मगन रस भीने, सीताराम युगल जोरी ।।
चन्द्रकला विमला शुभगादिक, कंचन थार भरे रोरी ।
डफ मृदंग करताल बजावत, सखन सखिन चहुँदिशि घेरी ।।

चारुशिलादिक सप्त स्वर जोरति, लै लै तान सरस बोरी।
जय रघुवंश छवीले प्यारे, जय मिथिलेश लली गोरी॥
निरखत झरत सुमन सुर बरसत, मिथिला कंचन वर खोरी।
नृत्य करत बिछिया नूपुर रव, 'सियवल्लभ' हँसि कहि होरी॥

(२९)

❀ आरती ❀

आरती लाल लली की, करत रंगीली बाल।
श्याम गौर मन भावन जोरी, लखि लखि होत निहाल॥
कोउ सिर छत्र फिरावति गावति,
ढुरवति दुहुँदिशि चमर रसाल।
कोउ नाचत गावत हँसि कोऊ,
बजवति डफ मृदंग करताल॥
भूषन वसन रतन मनि वारति,
वरसावहिं फूल माल।
राई लोन उतारति कोउ सखि,
कोउ तोरति तृन जाल॥
'कान्तिलता' कुसुमाञ्जलि अर्पहिं, कहि जय जय सियलाल॥

(३०)

❀ आशीर्वाद ❀

भीने रहो रंग भीने रहो दोउ।
यह रंग भीनी छबि अँखियन को,
प्रीतम नित २ देते रहो दोउ॥

आप रंगो रंग डारो हमहुँ पर,

हमसे भी रंग लेते रहो दोउ।

'सियाअली' यह रंग की बधाई,

मोहि मुख चुम्बन देते रहो दोउ॥

(३१)

यह जोड़ी नित ही आनन्द रहो।

नित रस रंग केलि सुख छाके,

मम अँखियन सुख देते रहो॥

नित यह फाग भाग मम आवै,

नित रंग प्रीतम प्यारी रहो।

'सियाअली' आसीस हिया सों,

मम प्रानन के सर्बस हो॥

॥ इति फाग कुञ्ज ॥

❀ झूलन कुञ्ज ❀

पद–१

पधारो कुञ्ज झूलन को हमारे प्रान प्यारे जू।

प्रियाजू के हो जीवन धन, अलिन के प्रान संजीवन,

नयन आनन्द के दानी, हमारे प्रान प्यारे जू॥

सलोने साँवले लालन, नवेली लाड़िली संग में,

निरन्तर नयन में झूलो, हमारे प्रान प्यारे जू।

ललित हिन्डोल झाँकी को, ललचते नयन नेहिन के,
ललो संग झूलिये चलके, हमारे प्रान जीवन धन।।
'लता रसकान्ति' भी अबतो, हिडोले ही पै लतरेगी।
खिला दोगे सुमन जिसमें, हमारे प्रान जीवन धन।।

(२)

झूमत झूलन पै दोउ आवत।
मंद मंद पग धरत धरनि पर, नूपुर धुनि सरसावत।।
राम रसिक वर सिय रमनी संग, गति मयद सकुचावत।।
कोउ सखि पान दान कर लीन्हें, कोउ सिर चवँर ढुरावत।
कोउ कर वीन मृदंग बजावत, पावस राग सुहावत।।
नेही नयन विहारि विहारिनि, नयनन सैन चलावत।
'सियवल्लभ' रसिकन सुख सम्पति, दम्पति मृदु मुसकावत।।

❀ दोहा ❀

झूलन को प्रीतम प्रिया, आये कुञ्ज मँझार।
कुञ्जेश्वरि सन्मान करि, सजवायो दरबार।।

(३)

।। आरती ।।

आरती सिय सुकुमारी की, करिये कुञ्ज विहारी की।
होरी रस में छके छकाई, अबिर गुलालन धूम मचाई,
रंगों की तरंगिनि बहाई, मन सिज रति मनहारी की।।

करत नवल दोउ बारि विहार।
रघुनन्दन श्री जनकनन्दिनी, गौर श्याम छबिदार॥
बहु सखि मंडल रचि जल ताड़त, दुहुँ कर घोष अपार।
लेत उछालें बहु सखि ऊपर, कर पिचकन की मार॥
भाजत पौरि दौरि बहु छूवत, बहुतक बचन प्रचार।
बहुतक डूबि डूबि पग ऐंचति, रसिक केलि मद भार॥

युगल के अंगन अँगोछि पट पहिराये।
गीले वस्त्र उतार सहेली, बसन कंचुकी सजाये॥
धोती उपरना सुठि जामा, सखियन सब साज सजाये।
नीलाम्बर पीताम्बर पहिरि, दम्पति हिय हरषाये॥
कंगहि सो रुचि जुलुफ सँवारे, अलकावलि अति अतर भिजाये
सरस माधुरी किशोर किशोरी, चौकी पर पधराये॥

अंगद बाजु बिजायठ आदिक, कटि धोती बर सारी।
करधनि किंकिनि तोड़े नूपुर, जावक रचि अरुनारी॥
सजि सिंगार झुलन पर बैठे, फूल माल गले डारी।
'प्रेमलता' नख शिख सुठि शोभा, निरखि आरती उतारी॥

झिझरी खेलि रहे सरवर में सिय संग अवध विहारी ना।
रतन खचित मणि नाव बनी है, छज्जे में चाँदनी तनी है।
फर्श मखमली छटा घनी है, मनहर बूटे दारी ना ॥ १ ॥
अति निर्मल सरयू जल सोहै, विविध रंग पंकज मन मोहै।
भ्रमर गान सुनि विहँग नटो है, दादुर धुनि सुखकारी ना ॥२॥
चहुँदिशि रंग रंगीली वाला, कोउ लिये पान इत्र कोउ माला।
मध्य सिहासन पै सिय लाला, मनसिज रति मद हारी ना ॥३॥
कोउ सखि वीन बजावै गावै, ललो लाड़िले के मन भावै।
'कान्तिलता' रस सिन्धु समावै, अवसर की बलिहारी ना ॥४॥

झूमत झूलन पै दोउ आवत।
मन्द मन्द पग धरत धरनि पर, नूपुर धुनि सरसावत।
राम रसिक वर सिय रमनी संग, गति गयंद सकुचावत ॥१॥
कोउ सखि पान पात्र कर लीन्हे, कोउ शिर चँवर ढुरावत।
कोऊ वीण मृदंग बजावति, पावस राग सुनावत ॥ २ ॥
नेही नयन विहार विहारिनि, नयनन शयन चलावत।
'सियबल्लभ' रसिकन सुख सम्पति, दम्पति मृदु मुसुकावत ॥३

झूला झूलन हेतु पधारे, अहो भाग है आजु हमारे,
बने रहो दोउ प्रान पियारे, सखियन मन बसकारी की।
स्वागत करि पुनि पाँवड़ि डारो,
तन मन धन ललना पर वारो,
वेगि लिवाय चलो दोउ प्यारो,
रसिया प्रीतम प्यारी की ॥

(४)

आरती करु सखि श्याम सुन्दर की,
मनमोहन प्रीतम सिय वर की ॥
मदन दम्भ के खम्भ गड़े हैं, कनक दण्ड मनि रतन जड़े हैं,
पटुली द्युति जगमगित अड़े हैं, तहँ बैठे दोउ सुखसागर की।
दिन कर सम सिर क्रीट धरे हैं, चन्द्र ज्योति चन्द्रिका परे हैं,
तरिवन कुण्डल झलक भरे हैं, नासामनि बुलाक छबि धरकी॥
ताल पखावज वीन वजतु हैं, चन्द्रकला सुभगा जु नचतु हैं,
थेइ थेइ थेइ चहुँ ओर मचतु हैं, रीझत नवल रसिक नागर की।
झूलत सिय रघुवर सरसतु हैं,
झमकि झुलाय सखिन हरषतु हैं,
कुसुमन झरि सुरतिय वरषतु हैं,
जै जै कहि दोउ सुख सागर की ॥

(५)

झूलन भोग रसिक जेंवत प्रिय प्यारी ॥

हेम थार में सरस मिठाई, लाइ नवेली सुकुमारी।
रतन कटोरन खीर आदि वहु, व्यंजन अति रुचिकारी।।
पावत दम्पति हिय हरषावत, स्वाद अमित सुखकारी।
सखि अचवाय दई मुख वीरी, 'मधुरलता' बलिहारी।।

(६)

झुलन पर आज सजधज के, युगल सरकार बैठे हैं।।
अलिन मन मोहने मानो, सु छबि श्रृंगार बैठे हैं।
युगल मुखचन्द हेरन को, सभी की आखें चकोरी हैं।।
परस्पर में प्रिया प्रीतम, बने गरहार बैठे हैं।
मजे से झूलते झूला, कभी मचकी भी लेते हैं।।
रसीली मैथिली संग में, रसिक सरदार बैठे हैं।
मधुर मुसकाय सुनते हैं, सरस संगीत सखियों की,
गुनों पर दाद भी देते, सजन दिलदार बैठे हैं।
'लता रसकान्ति' के हिय के, सकल सुखसार बैठे हैं।।

(७)

नवल दोउ झूलत अलिगन साथ।
नवल सखी सम वयस अतुल छबि, लखि रति मदन लजात।।
नवल हिंडोल कुञ्ज द्रुम फूले, त्रिविध पवन सरसात।
नइ नइ तानन दोउ मिलि गावत, मंद मंद मुसुकात।।
नवल वसन भूषन अंग सोहे, लखि छबि दृगन समात।
'ज्ञानाअलि' सुख बरनि न जावे, शिथिल भये सवगात।।

(८)

तेरी झमक झूलन पर वारी रे।
झूलन जोर झोर अंगन को,चितवनि अति अनियारी रे ।।
पान खात गावत स्वर मधुरे, छबि उमगत लग प्यारी रे।
'कृपानिवास'दासि चरनन को,अवध विलास विहारी रे।।

(९)

झमकि झुकि झूलत सिया प्यारी।।
प्यारे झमकि झमकि झुकि निरखत, हँसन नेह वारी।
सावनी सारी मनहारी ।।
हार हमेल गरे गजमुक्ता चन्द्रहार धारी।
छबीली छबि सों मतवारी ।।
'शीलमनी' रघुलाल भाल को, भाग लखो भारी ।।

(१०)

तेरी बाँकी झूलन पर वारी रे।
झूलन जोर हिये विच कसकत, मानहु हूल कटारी रे ।।
नैन कटाक्ष वान धनु भृकुटी, जुलफन जाल सुधारी रे।
'कृपानिवास'दासि चरनन की,रहि गई ठाढ़ी की ठाढ़ी रे।।

(११)

मेरा बांका संवरिया हरे रंग, झूलत आज रे।
हरित महल में हरित मनिन में, हरित हिंडोरा भ्राज रे।।

हरे हरे भूषन अंग साजे, झूलत श्री रघुराज रे।
हरित सितार सरंगी वीना, हरित साज छबि छाज रे॥
हरित सखी सब नृत्य करत हैं, हरित पखावज बाज रे।
हरित भूमि सब तरुवर हरे हरे, हरित कीर खग बाज रे॥
हरित मोर भवनन पर नाचत, हरित गगन घन गाज रे।
हरित २ 'रघुवर' छवि लखि कर, काम कोटि सत लाज रे॥
हरित छटा अवलोकि गगन ते, कुसुम वरस सुरराज रे॥

(१२)

निरखि सखि झूलन की छबि छाई।
सिय प्रीतम गलवाहीं दीन्हें, मन्द मन्द मुसुकाई॥
नवल सखी दोउ ओर झुलावैं, गावैं राग सुहाई।
हारक मनिमय खम्भ युगल वर, पटुली ललित लगाई॥
बहु सखो वोन मृदंग बजावैं, नृत्यति भाव बताई।
एक सौ आठ द्वार चहुँ ओरी, मनि चित्राम बनाई॥
चित्र विचित्र चाँदनी तानी, मुक्तामाल सुहाई।
'प्रेमलता' सिय पियहिं झुलावति, सेवत लाड़ लड़ाई॥

(१३)

झूलत सिय स्वामिनि महरानी।
श्री महराज कुमार झुलावत, सजि सनेह सुखमानी॥
प्रीतम प्रीति प्रबल लखि प्यारी, लहि प्रमोद मुसुकानी।
लखि 'रसरंगमनी' दोउ अँखिया, छबि सुख सिन्धु समानी॥

(१४)

हिंडोरे झूलैं श्री जानकी जान ।।
युगल प्रकाश कुञ्ज कंचन में, विपिन प्रमोद लतान ।
श्याम वदन पर जुलफैं छोड़ें, मन्द मन्द मुसकान ।।
प्यारी संग समाज अलीगन, लेत नई नई तान ।
'युगलप्रिया' वारत तन मन धन, करत निछावर प्रान ।।

(१५)

किशोरी संग झूलत नवल किशोर ।
दशरथ नन्दन जनक नन्दिनी, सुन्दर श्यामल गौर ।।
सरयू तीर सुखद प्रमोदवन, विश्वभूमि सिरमौर ।
तामधि मनिमय रचित हिंडोरा, लसत हेम मय डोर ।।
चन्द्रकला सखि हरषि झुलावति, विमला ढौरति चौर ।
'युगलप्रिया' यह मधुर केलि लखि,
सुधि बुधि भइ सब भोर ।।

(१६)

लिये झूलें छवीले सुवर धनियाँ ।
घूँघट बीच अनोखी चितवन, वदन सरोज कसे तनियाँ ।।
मंद हँसनि मुखचंद सुधा सर, जनकलली रघुकुल मनियाँ ।
'शीलमनी' नव रंग रंगीली, जोरी बनी सब सुखदनियाँ ।।

(१७)

झूला झूलें राजदुलारी, श्री महाराज कुमार ।।

रेशम डोर मनिनमय पटुली, झींगुर करत गुंजार।
कुसुमी चीर सुभग तन राजहिं, जड़ित किनारी दार ॥
क्रीट चन्द्रिका मनिमय भूषन, सुखमा अंग अपार।
वीरी सरसत चन्द वदन पै, अरुन अधर रतनार ॥
मृगनयनी मुसुकाय झुलावहिं, गावहिं राग मलार।
सुमन बरसि तृन तोरि विलोकहिं, 'सनेहलता' दिलदार॥!

(१८)

लखो सखि झूलत युगल किशोर ॥
वन प्रमोद हिंडोल कुंज बिच, पिय प्यारी चितचोर।
विद्रुम खंभ खचित मनि मोतिन, पटुली वेलन डोर ॥
बजत मृदंग सितार सरंगी, गरजि वरस घनघोर।
'कामदमनि' निहारि नवल छबि, सुख नैनन को कोर ॥

(१९)

चलो पिया वाही कदम तर झूलैं।
सरस सघन द्रुमकुंज लतन बिच, कीजिये सुख अनुकूलैं ॥
प्रीतम मनमोहन हो रसिकवर, सुषमा सर के कूलैं।
'नवलप्रिया' घनघटा छटा छबि, देखि देखि मन फूलैं ॥

(२०)

सखि सुकृत सरयू कूल,
सिय रघुवरहिं झमकि झुलावहीं।
सजि हेम हीर हिंडोर, युगलकिशोर केलि करावहीं ॥

कोइ गाय तान तरंग तरल, उमंग रंग रचावहीं।
कोइ नचहिं सब अंग लचहिं, बाजा बजाय मोद मचावहीं।
कोउ वाम विहँसि ललाम ललि सों,लाल नाम लिवावहीं।
सिय लजहिं बैनन कहहिं पिय तन, नैनन सैन जनावहीं।
सब लहहिं अति आनन्द,सिय रघुनन्द छबि मन भावहीं।
चिरजिवहु 'मनि रसरंग' जोरी, रंगनाथ मनावहीं ।।

(२१)

❀ झूला नजरवाग का ❀

देखो झूलत राघो डोल।
जनक सुता लीन्हे संग शोभित, गौर श्याम तन लोल ।।
हीरा पन्ना लाल पिरोजा रतन खचित वेमोल।
क्रीड़त राम जानकी दोऊ, वजै दुन्दुभी ढ़ोल ।।
हँसत परस्पर प्रीतम प्यारी, आनन्द बढ़्यो सचोल।
'अग्रअली' सुनि सुनि सुख पावति, बोलहि मीठे वोल ।।

(२२)

❀ आशीर्वाद ❀

जै रहे अवधेश ललान मिथिलेश लली की जै रहे।
पिय साँवरे सोहैं घटा, सिय दामिनी सी छा रहे ।।
बातें मधुर रस रहस के, आनन्द जल बरसा रहे।
अति रंग भरे झूलैं दोऊ दुहुँ ओर सखियाँ झुलावहीं।।

झोंका सरस झुकि झूमि २, भूषन झमाझम बजि रहे।
चहुँओर से नागरि खड़ी, वाजे सुमधुर वजावहीं ॥
कोउ तान लेति तरंग सों, चातकि मयूरि सी होइ रहे।
तिरछी नजर हँसि हेरि हेरि, फुलगेंद की चोटें चले ॥
'प्रेमअली' यह चाहती, नित नयन में छाये रहें ॥

(२३)

झूलन आरती सखिन करतु हैं।
जगमग जगमग ज्योति बढ़तु हैं ॥
रतन जड़ित कंचन के खंभा,
रचना लखि विधि होत अचंभा।
खंभा दोय जनु मनसिज विरचित,
श्याम गौर तहँ उमग भरतु हैं।
रवि सम तेज क्रीट झलकतु हैं,
चन्द्र ज्योति बेसर हलरतु हैं ॥
सखिन छत्र सिर चवँर ढुरतु हैं,
झमकि झमकि दोउ सखी झुलावहिं,
मंद विहँसि दोउ सुख सरसावहीं,
'देव' वधू कुसुमुन झरिलावहिं,
हरषि निरखि रघुवर जस गावहिं ॥

(२४)

❀ दूती बैठक कुञ्ज की ❀

रसिकमनि चलो बैठक कुञ्ज, अवसर पहुँचो आन ॥

आइ बुलावन कुञ्जेश्वरि भेजी, कीजै अरजी कान।
लिये सौज ललनादिक ठाढ़ी, मग जोहत चतुरी सुजान ॥
अब न विलम्ब करो सुनु लाड़िले, विनती लीजै मान।
'मधुरलता' दोउ रँगे प्रेम रंग, करैं मन्द मुसकान ॥

(२५)

झूलन से उतरि चले हर्षाई ॥
दक्षिन सिंह पौर पर आये, सिय पिय अंक लगाई।
सिय सों भेटि पिया गये बाहर, रूप हिये बिच लाई ॥
अनुज सखन संग चढ़ि हय गज पर, पितु दरसन चित आई।
'प्रेमलता' सिय संग महल ते, प्रीतम छबि दरसाई ॥

❁ बैठक कुञ्ज ❁

पद-१

झूलन कुंज से राजदुलारी बैठक कुंजहि चलत भये।
वसु घोड़े के रथ पर चढ़ि के अमित सहचरी संग लिये ॥
छत्र चवँर कर व्यजन सुधारे करत बारता मोद मये।
कोउ गावति कोउ यंत्र बजावति मग मँह मंगलमोद छये॥
देवकुमारी चढ़ी विमानन वरसावत कल कुसुम चये।
'अलिरसराज'करति आरती स्वागत पूर्वक ले जात भये॥

(२)

चली सिय प्यारी बैठक कुंज अली ॥

करि विहार झूलन की सखियन सहित श्री जनकलली।
रतन जड़ित सोविका अतिसुन्दर तापर राजत सुभग लली ॥
चहुँ दिशि सखि जन सौज लिये हैं नाना रंग रली।
पहुँची सर्वतोष भवन जहँ मध्य सु रतन थली ॥
करि सनमान सखी कुञ्जेश्वरि आनन्द भरि उछली।
बैठारी श्री रतन सिंहासन पूजन करि सु मोद भली ॥

(३)

चलि सिय बैठक कुँजहिं आई।
सुभग सिंहासन बैठी सोहैं, चहुँदिशि सखि समुदाई ॥
बात करत मिथिला सुधि आई, नयनन नीर भराई।
नैहर की सब प्रीति बखाने, मातु पिता अरु भाई ॥
इतने में गुरु पत्नी आई, उठि सिय सीस नवाई।
आदर करि बैठारि सिंहासन, षोडस विधि सेवकाई ॥
रिषि पत्नी रघुवंशिनि आई, देवर जेठ नारि नन्दाई।
पिय की नेह सिया सन गाई, हास विलास सुहाई ॥
तीनों बहिन मिली पुनि आई, बैठि संग हरखाई ॥

(४)

पधारी सिया सर्व तोष आगार।
सुभग सिंहासन बैठी सोहैं, चहुँदिशि सखि सौज सुधार ॥
समय जानि इत गुरु मुनि तिय गन, आई लगि दरबार।
स्वामिनि शील सुभाव सनेह कै, वरनसि विविध प्रकार ॥

तात मात की भाग सराही, गवनि सहित सत्कार।
देवरानी अरु ननद जिठानी, ये सब करहिं सुमार।।
आई प्रेम विलास पगी सब, हास्य केलि मनुहार।
पान सुमाल मशाले लहि लहि, लूटि सकल सुख सार।।

(५)

सांचो सुहाग जानकी तेरो, रघुवर भल बस कीन्हों री।
परसत पानि और नहिं परसो, इक ललना व्रत लीनो री।।
तोसी नारि नहीं त्रिभुवन में, पिया प्रेम रस भीनो री।
'अग्रस्वामि' मन वच क्रम तोको, रीझि अलिंगन दीनो री।।

(६)

मेरी स्वामिनि को अचल सुहाग।
जाको परस और नहिं परसी,
रघुपति दिन प्रति बढ़्यो अनुराग।।
सीता सो सिरजी जिन पत्नी,
केलि अकंटक लग्यो न दाग।
'अग्रस्वामि' स्वामिनी अहरनिशि,
सुख विलसत दोउ भूरि भाग।।

(७)

सर्वोपरि मेरी स्वामिनी, राघो की प्यारी।
जाको परस और नहिं परसी, व्रत लीन्हों इक नारी।।

रस बस कियो दशरथ नृप नन्दन, नाहिंन कोऊ सारी।
वैदेही के कमल वदन पर, 'अग्रअली' बलिहारी॥

(८)

प्यारी सीता तै प्यारो बस कीनो री।
तेरे रस बस और न देखत, जगत शून्य कर दीनो री॥
सर्व दिसन सिय तुम में भासत, तेरे ही सुख भीनो री।
'युगलअली' प्रिय जीवन सियजू, यही सिद्ध कर लीनो री॥

(९)

पिय की सर्वस है सिय तूरी।
तो बिन छिन न रहत सिय प्यारो, तुम हो लाल सजीवन मूरी॥
तव मुखचन्द विलोकि पलक पर, मानत हैं दुख भूरी।
'युगलअली' गावत गुन सिय के, देखत सिय मुखचंद सु पूरी॥

(१०)

आज सखी मन मोहि पिय हँसि,
नैनन सैनन सों करि बातें।
बैठि अचानक रीझि अलिंगन,
मेलि करी तिन घातें॥
भूलि सबै सुधि अंगन की तब,
कौन सम्हारि कहे कछु बातें।
अबला बल हीन करौं मैं कहा,
'रसमाला' विहाल करी तिन तातें॥

❁ दोहा ❁

कहति सखी कोउ नागरी, गये कहूँ वे नाहिं।
रूप अनेकन धारि कैं, छाये तुव अंग माँहि॥
यह विधि जहँ तहँ विलसहिं, सिय की अली अपार।
इक आवहिं इक जात है, जनक लली दरबार॥
अपने अपने महल ते, उर्मिलादि गुन खानि।
खिरकिन मग आवत भईं, समय सुहावन जानि॥
उठि सबके सियजू मिलीं, निकट सबन बैठारि।
कहन लगीं बातें विहँसि, अपनी अपनो बार॥
दाहिने बैठी उरमिला, वाम माँडवी प्यारि।
श्रुतिकीरति सिय लाड़िली, गोद लई बैठारि॥
वटन लगी वीरा मधुर, मेवा फल वहु जाति।
अंग राग बहु गंध युत, सुमन माल वहु भाँति॥
वालपने की व्याह की, चरचा कछुक चलाइ।
हँसति हँसावति परस्पर, देह दशा बिसराइ॥
कहै उर्मिला विहँसि कैं, हैं हमरे बड़ भाग।
जन्म एक संग एक घर, पायो अचल सुहाग॥
अहाँ के भागन हम भली, रहत सुखी दिनरात।
अब लग हम जानी नहीं, कहाँ तात कहँ मात॥
कह्यो माँडवी रैन दिन, रहत तुम्हारो ध्यान।
जा दिन तुम्हें देखें नहीं, मानो निकसे प्रान॥

बोली श्रुति कीरति हमहिन, आवैं बहुतन बात।
हम छोटी हम पर ध्यान, सबकी है दिनरात॥
यहाँ लड़ैती गोद में, वहाँ सास की गोद।
जात दिवस नहि लख परत, सोवत रैन प्रमोद॥
इतने में आई खवर, पठई सास बुलाय।
सुनत उठी सिय लाड़िली, सबै उठी हरषाय॥
चारिहु वहिनिन संग चली, आसपास सखि यूथ।
दामिनि सम जगमगत ज्यों, रति रूप के वरूथ॥
अन्तर मारग दूसरो, जहाँ तीय सब जाहिं।
लगे विमानन सब उतरि, झमझम 'मोदमन' माहिं॥

(११)

बधुन की छबि लखि लेत बलैया।
अंकन भरि भरि वदन चूमि सिर, घ्रान करति सब मैया॥
मधुर खवाइ पिलाइ सुजल पट, निज कर चवँर ढुरैया।
देति मुदित 'रसराज' निछावरि, वारति लौन सुरइया॥

(१२)

रुचि सों विदा कियो सनमान।
प्राननाथ छबि उरझी चित मन, विलम्ब भयो मुख म्लान।
आज विमान शीघ्र सब गवनी, कनक निकुञ्ज अटान।
इत प्रीतम सुख सौज सजायो, पतंग खेल विधान॥
उतरि मिली 'रसराज' स्वामिनी, पिय हिय सों लपटान॥

(१३)

रूप राशि सीता दुलहिन को, देखन आई गुरुजन नारी।
उठत नहीं अतिकाल ह्वै गयो,
पढ़ि मोहनी मूठ मानो डारी ।।
रामचन्द्र मिलिवे को आतुर,
वासुक शेष कठिन भयो भारी।
अनंग पीर अकुलाय दंडकर,
त्रासत तुरगहि बुद्धि बिचारी।।
रवि गुरु बाज हमारो मंगल,
रथ प्रेरन को सुधि जु विसारी।
ये असु अर्पत उनके नाते,
वेगि चलो कुल जानि दुखारी ।।
सहि नहि सकत वियोग पलक को,
अस्ताचल तन रहे निहारी।
मदन तरंगनि मगन 'अग्र प्रभु',
पाई जीवन जनक दुलारी ।।

(१४)

पियाजू चलिये खेलन चंग।
हार जीत के संग धरायो बाजी निज २ अंग ।।
रमकि झमकि कै चंग उड़ाओ, उमगे नेह तरंग।
हारे वाहि को नाचन परिहैं, 'कान्तिलता' के संग ।।

(१५)

❀ पतंग लीला ❀

सखी आज अटारी पै, उड़ावै चंग रघुराई ।।
सखिन की भीर पीछे में, किशोरी संग सुखदाई ।
वदन श्रृंगार सब कीन्हे, कंगुरा की क्या छटा छाई।।
वढ़ावत झोंक कर कमलों, सुहावन डोर मन भाई ।
घटा वै ताकि नभ ओरी, सिया दिसि मंद मुसक्याई ।।
'सरूपानन्द' तब प्यारी, पिया ढिग हरषि के जाई ।
पिय श्रमकन पोछि मुख अंचल, निहारत श्याम गुन गाई।।

(१६)

देखो सखि सिय पिय चंग उड़ावै ।
गोरिया श्याम पिय कर लै सिय,
कर कमलनि गहि खैंचि वढ़ावैं ।
ग्रीव झुलावैं कटि लचकावैं, विविध कला कर फेर दिखावैं ।।
हार जीत की बाजी लगा के, अलिगन अधिक उमंग बढ़ावे ।
'मंजुलता' भइ जीत प्रिया की, विहँसि अली करताल बजावे ।।

(१७)

उड़ावत चंग ललित पिय प्यारी ।
पिय कर डोर रेशम की सुन्दर, गहे इतय सिय प्यारी ।।
आपनि आपनि जीति विचारत, छोड़ो गगन मँझारी ।
भरी गोत करि चंग पिया मन, भावन सखियन मोद अपारी ।।

सकुच जान प्रिया प्रीतम कहँ हँसि, गलवहियाँ डारी।
'नेहलता' छवि देखि मगन भइ, धनि दोउ चन्द खिलारी ॥

(१८)

चंग उड़ावत रास विहारी ॥
सिय नागरि पिय संग लड़ावति, निज पतंग गति न्यारी।
चंग संग गति नृत्य सम्हारत, दोऊ चतुर खिलारी ॥
हँसि हेरनि कर फिरनि दुहूँ की, लखि लखि सखि बलिहारी।
चंग उड़ावत गति दरसावत, नृत्य कला विस्तारी ॥
ग्रीव ढुरत कटि लचत बजत पग, छूम छननन मनहारी।
'कान्तिलता' यह युगल केलि लखि, तन मन सर्वस वारी ॥

(१९)

बने पिय चंग उड़ावै री।
श्याम पोत वर डोरि कमल कर, तकि २ ग्रीव झुकावै री॥
वहु सखि गावै बीन बजावे, हिय उत्साह बढ़ावै री।
प्यारी जोति पिया जब हारे, सखि करताल बजावै री ॥
प्रीतम कर गहि सखि लै आई,
प्यारी भुज भरि अंक लगावै री।
सुभग सिंहासन मिलि दोउ राजै, 'प्रेमलता' बलि जावै री॥

(२०)

❀ आरती ❀

कनक थार भरि आरति आली।

आरतिहर पर वारति तन मन,

चलि चलि चाल सु बाल मराली॥

बाजत झाँझ मृदंग चंग रव,

जलज सितार प्यार करताली।

'युगल विहारिनि' चरन सु परसी,

मुदित गूँग रस लहि खुशहाली॥

(२१)

❀ जल विहार सरयू जी में ❀

महल ते सरयू तट चलि आये॥

चढ़ि विमान संग अलिगन लीन्हें, सेवा सौज सजाये।

सरयू सखी आन करि आदर, सिंहासन बैठाये॥

पूजि सकल विधि लाड़ लड़ाये, उबटि सु तेल लगाये।

ज्रल क्रीड़ा हित उठि के दोऊ, तीर खड़े चित चाये॥

मनिमय प्यार वेदिका बँगले, चित्र विचित्र सुहाये।

कमल कुमुद जल जन्तु तरंगे, निरखत चित्त चुराये॥

भ्रमर खगन की गिरा सुहावनि, नावन छबि मन भाये।

यहि विधि देखि चले जल भीतर, 'प्रेमलता' सुखदाये॥

(२२)

नवल जल केलि करत मन भाई।

सिय पिय संग सु रसमय क्रीड़ा, सखियन को सुखदाई॥

जल फूँहीं करि द्वन्द मचावै, शब्द होय जनु सिंधु मथाई।

नाल सहित गहि कमल कमल कर, जल छीटैं हरषाई ।।
एकन ऊपर एक कूदि कै, बाँह पकरि छिटकाईं ।
जल के धार परी इक आली, पिय को पास बुलाई ।।
प्रीतम गये पकरि सो लिपटी, मन अभिलाष पुराई ।
भीजे वसन लिपटि तन सोहै, शोभा अति सरसाई ।।
सखियन के युग भाग बनाये, खेलैं हार जिताईं ।
सिय के गोल पिया जब आवैं, बाँह पकरि बिलमाई ।।
मन भावै सो करैं सहेली, सीय को जीत मनाईं ।
पिय के गोल सखी जब जावै, तब पिय केलि मचाई ।।
विविध भाँति जल क्रीड़ा कीन्ही, कहो कौन विधि गाई ।
जल क्रीड़ा करि बाहर आये, भींगे वसन हटाई ।।
नवल वसन धारन कर सबही, बैठो अति सुख पाई ।
'प्रेमलता' सिय पियहिं सिंगारत, चतुर सखी सब आई ।।

(२३)

जल बिहार मिस रार मचाई ।
पैरि पैरि जल डूबि पकरि पग,
सुमन कंज लै मारत धाई ।।
सिय रुख पाय अली चपलावलि,
पिय घनश्याम घेरि लियो जाई ।
कर पिचकारिन सुमन गेंद लै,
यह रस रारि देखि मन भाई ।।

(२४)

झीने पट भीने तन लपटे सोहै ॥
ज्यों घर कोट ओट दलि दिन कर,
छिटक छटा छवि किरन विपोहै ।
भये निहाल लाल ललना गन लखि,
तेहि छन की सुखमा को जोहै ॥
नहि अधिकार बिना सखियन के,
प्रियतम जिनके हाथ बिको है ।
भारी चौक वेदिका मनिमय,
जनु विरंचि निज हाथ रचो है ॥
लता वितान सुमन द्रुम फूले,
बिछी फरस कुरसी सो वहु है ।
'ज्ञानाअली' सिंगार सुमन मय,
करन लगी नख सिख सरसोहै ॥

(२५)

किये दोउ राजत सुमन सिंगार ।
बैठे सुमन कुञ्ज बँगले में, सुमन गुच्छ कर धार ॥
प्यारी के सिर सुमन चन्द्रिका, पिय सिर कलँगी सुधार ।
'रसिकअली' सिय रघुवर छबि पर, वारिय वहु रति मार ॥

(२६)

आज गुलाब महल बिच दम्पति, राजत वेष किये रो ।

'सियवल्लभ' वलिहार परस्पर,
सुमन झरत सब 'देव' द्रुमन की।'

(२७)

❀ जल विहार ❀

नौकारूढ़ समाज अलीगन सब सामान भले।
गान तान सनमान सोहावन पावन प्रेम पले।।
सरयू देखि सिया रघुवर छबि गलवाँही रंगरले।
अति उमंग सो रंग ढग लहि तरल तरंग तले।।
भादव भल भावन हरि वासर शुक्ल सोहाग फले।
नाव नावरी खेल खेलारी 'जानकीवरहि' मिले।।

(२८)

खेलत नाव नावरी रघुवर।।
सीय समेत सखी सुख राजत साजत भूषन वसन तरह तर।
ध्वजा रंगीन पताका फहरत लहर लेत श्री सरयू ऊपर।।
विछे बिछावन अति मन भावन नाचत गावत जयति जयति कर
लूट लुटावत रंग बरसावत लाल रतन वहु वर्षंत मन भर।।

(२९)

नावरी खेलिये महराज। प्रेम बरस बरसाये।।
नौका सुभग सनेह सोहावन, अंग अंग प्रीतम छवि छावन।
सुन्दर लाल लली मन भावन, यह सुख देखना हो राज।।
सरयू रंग उमंग न थोरी, कहूँ घटा कहुँ चन्द उजोरी।
अद्भुत रंग मच्यो चहुँओरी, सुख से खेलना हो राज।।

तरह तरह के रंग रंगीले, कहूँ लाल कहुँ पीत रसीले,
मेघ श्याम कतहूँ चटकीले, सरयू कूलना हो राज ॥
राज दुलारे दुलारी परस्पर, डारत हैं जल दोउ दुहुँन पर,
मच्यो दुहुँन बिच खेल अपारी, भींगे पिय पट सारी प्यारी,
निरखि निरखि कै सखि वलिहारी, प्रीतम भूलना मति राज ॥

(३०)

श्यामा श्याम की बलिहारि ।
भई सुरुचि जल सरयू बिहरै, खेलें नाव नवारि ॥
नभ सघन घन वन सुछायो स्वच्छता वर वारि ।
सजि सुनाव सिंहानोपर सोह प्रियतम प्यारि ॥
श्री चन्द्रकला चन्द्रा चन्द्रानना सकल साज सवाँरि।
जस श्री जानकी जान सखि जलयान गान सुधारि॥
नाव से नाव मिलावै छिनपल, भल सु लेहु विचारि ।
'युगलविहारिनि'पर अपर सब मत मतांतहि वारि ॥

(३१)

बैठे निरखत सरयू तरंगे ।
लली लाल अलि अबली भलि विधि सुभग समाज सुसंगे॥
मोदवंत सद संत सुसज्जन बृन्द सजे रस रंगै ।
प्रेम वारि विच सुछवि निहारति श्याम गौर दुति अंगै ॥
दरस परस मज्जन सुपान करि होत महा भव भंगै ।
राम अयन रामायन पेखो रामहिं बचन प्रसंगै ॥

सिय पिय कमल अमल रस माते रसिक जनन मन भृंगै।
'युगलविहारिनि' नाव नावरी खेलत भरे उमंगै ।।

(३२)

बैठे निरखत सरयू हिलोरे।
सिय पिय पीर हरत जनमन के धीर समीर बहोरे।
तट मनि जटित सोम वट प्रफुलित वन प्रमोद चहुँ ओरे ।।
गुंजत मधुप मत्त रस रूपिया जनु सूर गान करोरे।
अलि भलि कंज कली सु खिली कल प्रमुदित अनन्दन थोरे।।
प्रिय पीतम अस्नान करो अब,
'युगल विहारिनि' कह कर जोरे ।।

(३३)

जल बिहार मिस रार मचाई।
पैरि २ जल डूबि पकरि पग सुमन कंज लै मारति धाई ।।
सिय रुख पाय अली चपलावलि
पिय घनश्याम घेरि लियो जाई।
कर पिचकारी सुमन गेन्द लै यह रस रासि देखि मन भाई।।
अमित केतु कर राहु सिरज्यो सिर
जल अकास पिय शशि जनु पाई।
भइ सरि जनु सिय रमनी हित गुप्त खण्ड तकि रहे लुकाई ।।
अन्तर्ध्यान भये सखियन लखि निकसि सबै ढूढ़े अकुलाई।
कूँज २ जल थल वन उपवन सुमन बाटिकन मन चित लाई।।

सखियन विकल जानि आये पिय भींजे बसन मन्द मुसुकाई।
'ज्ञानाअलि' प्रीतम प्यारी मिलि चली निदाघ कुंज लिबाई॥

(३४)

करि जल केलि निकसि भये ठाढ़े।
झीने पट झलकत छबि पावै॥
चुवत बून्द रहि रहि छतियन पै,
शोभा अस अनुपम दरसावै।
जनु शशि ते अमृत लै नागिन,
सादर शिव के शीश चढ़ावै॥
चिहुटे चीर सटे अंगन में,
लखि अलियन के नैन लुभावै।
झलकत मदन मरोर दृगन बिच,
'मोहनि' छबि नव अँखियन भावै॥

(३५)

चतुर सखी सब मिलि के आज।
पिय प्यारी को कर शृंगार॥
वेनी अलक सुधार अतर सों, मनि हीरन मोति लगे तार।
साड़ी नील पीताम्बर सुन्दर, ललित चन्द्रिका मुकुट सुधार॥
केसर तिलक बिन्दु की रचना, दृग अजन कर अति सुकुमार।
नकबेसर झुमका नक मुक्ता, कंठा कंठ पदिक उर हार॥
बाजु विजावठ चूरी कंकन, किंकिनि वर ओ कटि सूत्रधार।
पायजेब नूपुर वर चरननि, 'प्रेमलता' को बरने पार॥

बँगला फूल कुंज सुख पुंजन, विहँसत दोउ गलबांह दिये री ।।
फूल के भूषन अंग सुशोभित, मनमथहूँ को मान दले री ।
'मोहनि' निरतत मत्त भये लखि, प्रेम वारुनी छके हिये री ।।

(२७)

फूल बँगले में सोहे युगल रसिया ।।
हार हमेल बिराजे फूल के, फूल के सोहें नवल पगिया ।
शीशफूल कर्णफूल फूल के, फूलन हार लसी अँगिया ।।
खेलत फूलगेंद लिये दोऊ, चित चोरत सखि मृदु हँसिया ।
'सियाअली' तन मन फूले री, फूल बिहार बसी अँखिया ।।

(२८)

।। नौका विहार ।।

करत सुरत नौका इक आई ।।
बैठे लाल प्रिया संग मृदु हँसि,
अलियाँ खेलति हिय हुलसाई ।
फूले कमल भवँर गुंजारत,
छिटकि चाँदनी छबि दरसाई ।।
पहुँची जाय मँझधार में नौका,
तब प्रीतम इक खेल रचाई ।
कला कुशल हँसि खेलन लागे,
छबि पर अँखियाँ रही लुभाई ।।

कवहुँ झुकन संग नाव झुकावत,
डगमगात लखि मृदु मुसुकाई।
कवहुँ भवँर महँ जाय घुमावत,
मुग्धा सखि हिय अतिहिं डेराई॥
रस लम्पट प्यारी की 'मोहनि',
सैनन निरखि रहे सकुचाई॥

(२९)

नाव पर खेलत प्रीतम प्यारी॥
श्री सरयू मनि धार मनोहर, स्वच्छ सुभग रुचि वारी।
दुहुँ तट भीर भई अति भारी, निरखत छबि नर नारी॥
छोरत नाव परस्पर दम्पति, हार जीत की लागी वारी।
सिय की नाव जीति सखि आई, प्रीतम की सखि हारी॥
देव निशान वजाय सुगावहिं, सुमन वरषि युत नारी।
'प्रेमलता' छवि निरखत अलि सब, जय जयकार उचारी॥

(३०)

रसे रसे नौका को चलावो राम रसिया।
डगमग करै क्यों अनारी अवधेसिया॥
अति सुकुमारी सिय प्यारी जु हमारी प्यारे,
तरल तरंग चले सरयू की तीव्र धार,
रोको रोको प्यारे नातो हो जैहैं अजसिया।
चतुर चूड़ामनि गिरायो पाल रोकि डारो,

अतिहि उमंग प्रान प्यारी जू को अंक धारि,
मारे 'मोद' कलिका पै विहँसनि असिया ॥

(३१)

॥ वन विहार ॥

युगल ललन शोभा देखत डोले ।
गहे परस्पर वर कर कंजन, चरन धरत धरनी हौले हौले ॥
कुसुमित तरुवर भाँति सघन बिच, हँसि हँसि करत किलोले ।
'सरस माधुरी' पियत अधर रस, लता कुञ्ज के ओले ॥

(३२)

सब राहस साज सजाये, वन विहरत सो रस पागे ।
वहु रंग के फूल उतारी, वनमाल गुही पिय प्यारी ॥
बहु भूषन सुमन वनावे, रचि प्रीतम को पहिरावे ।
प्रभु निज कर फूल उतारी, वहु कंचुकी हार सवाँरी ॥
सव सखियन को पहिरावे, सखि फूलन माँग गुहावे ।
रचि सेत सुमन वहु सारी, सुचि रंग विरंग किनारी ॥
प्रभु निज कर वर पहिराई, मुख दिव्य सुगंध लगाई ।
सव दिव्य अलंकृत सोहै, रस रास वसंत रच्यो है ॥
एक सखी नाम हेमा प्रवीन,
चलि रस छल करि प्रभु पकरि लीन ।
कोइ हार पीताम्बर लियो छीन,
कोइ निज उर पिय उर डारि दीन ॥

कोइ चुम्वत मुख लालन लड़ाइ,
कोइ हँसत पानि वत्सल लगाय।
मिलि प्रीतम सखि अहलाद रूप,
रचि 'रामचरन' राहस अनूप ॥

(३३)

सघन वन विहरत युगल किशोर ॥
कुंज विहारिनि कुञ्ज विहारी, गौर श्याम सुकुमार।
वो उनके वो उनके अंगन, निज कर करत सिंगार ॥
भूषन सुमन सजे नख सिख लौं, दोऊ दृगन निहार।
आलिंगन चुम्वन परिरंभन, लिपटि भरत अँकवार ॥
तन मन मिले भिजे उज्ज्वल रस, पीवत अधर सुधार।
'सरस माधुरी' वाँकी झाँकी, दृगन निरख बलिहार ॥

(३४)

विहरत अशोक वन दोउ रंग भरे।
सिय रघुनन्दन अरस परस्पर, ललित सु वाँह गरे ॥
कंचन मनिमय भूमि मनोहर, त्रिविध सुबात वहे।
घूम घूम कुंजन वहु कौतुक, निरखत 'मोद' बिनोद भरे॥

(३५)

प्रीतम चलो कुंज द्रुम छहियाँ।
विविध रंग के सुमन खिले जहँ, सुन्दर बागन महियाँ॥
सुनि सिय मधुर वचन रघुनन्दन, हँसि प्यारी कर गहियाँ।
'मोहनि' जाय प्रमोद विपिन में, विहरत दै गलवहियाँ॥

(३६)

सरयू तट विहरत रंग भरे,
अवधेश ललन मिथलेश लली ।।
कर कंजन से करकंज गहे,
अति अमल अदा रस रीति रली ।
मुसुक्यान परस्पर प्रीति पगी,
सत सहस सुधाकर मान दली ।।
अंग अंग उमंग तरंग लसे,
सोहे संग में सुकुमार अली ।
पिय भूलि अपन पौ प्यार छके,
उझके छबि 'युगल अनन्यअली' ।।

(३७)

रस विलसत कुंजन कुंजन में,
मन हरन वरन सुख साज नई ।।
कर कंजन से कर कंज गहे,
रहे दम्पति सम्पति प्रान मई ।
अंग अंग रुचि रहस्य उमंग अली,
भली भाँति नवल झलकात भई ।।
वर वचन रचन मधु मधुर स्वाद,
सुनि सुख सहज समाधि लई ।
यह नित्य विहार वहार हृदय लखि,
'हेमलता' सरसाइ गई ।।

(३८)

नागरी नवल नेह अरुझान ।
उतरि चलीं पिय कोमल कर धरि, कुंजन दिशि मुसुकान ॥
हँसि गवनी निरखत प्रीतम दिशि, मधुरो सैन चलाय ।
छबि अमृत वरसत चारो दिशि, अलि दृग पियत अघाय ॥

(३९)

❀ गेंद लीला ❀

चले दोउ खेलन को सिया प्यारे ।।
श्री नृपनन्दन जनक नन्दिनी, रूप गुनन दोऊ उजियारे ।
सखियन करि श्रृंगार अंग अंग,
पुनि पिय प्यारी के श्रृंगारे ॥
यूथ यूथ सखि चली संग में,
ह्वै गज रथ ऊपर असवारे ।
कोइ सखी शिर पर छत्र किये हैं,
सुभ्र चवँर कोउ लिये कर धारे ॥
अपर सखिन लिये बहुत सौजकर,
पहुँचे जाइ चौक के द्वारे ।
यूथेसा अनेक संग सखियन,
लिये पूजन के सामा कर धारे ॥
पट पावँड़ि दै लै गई भीतर,
रतन वेदिका पर बैठारे ।

धूप दीप आदिक विधि करि कै,
सखिन सहित पूजे दोउ प्यारे ॥

(४०)

चले दोउ खेल करे चौगान ।
सिया रसीली संग सुघर बर, रघुवर रसिक सुजान ॥
छत्र फिरावत चवँर ढुराबत, सखी अतर लिये पान ।
बहु विधि यंत्र बजावत आवत, करत मधुर सुर गान ॥
श्री सरयू तट अघट रास रस, उमगत मोद महान ।
गेन्द चौक में आय विराजे, 'कान्तिलता' के प्रान ॥

(४१)

खेलन सरयू तीर चले ॥
श्याम गौर सुन्दर सकल, सजि सजि साज नवीन ।
सरयू ढिग इक ठौर हुई, गनि गनि गुइयाँ लीन ॥
हँसै सब दै दै वाँह गले ॥
स्वर्ण रतन की वल्लिका, लीन परस्पर हाथ ।
फेंक गेंद ताड़न लगे, तमकि तमकि एक साथ ॥
हरषित 'राम स्वरूप' जन, वसन सुधारत धाम ।
देख देख मुख माधुरी, मन नहिं नेक अघाय ॥
मगन अलि सब अभिलाष फले ॥

(४२)

आजु तो रसीले तोहिं, गेन्द में छकाऊँगी ।

गोइयाँ विलगैहौं, सिया प्यारी दिसि ह्वैहौ मैं तो,

सुमन सु गेन्दा रंग रंग बिरचाऊँगी ।।

दौरि दौरि फेकें प्यारी फहरेगी अंग सारी,

रस भरी तेरे मन मदन जगाऊँगी ।

उरज कपोल गोल मैन गेन्द से अमोल,

सिय अंग संग पिय जिय ललचाऊँगी ।।

तकि तकि मोरे अंग बाढ़ै छन छन रंग,

झुकनि कुदनि लखि दृगन भराऊँगी ।

केलि चातुरी दिखैहौं, सिया प्यारी को जितैहौं,

'कान्ति' चुम्बन मचाय धूम, तोहि को छकाऊँगी ।।

(४३)

कन्दुक खेलत प्रीतम प्यारी ।

उछरि उछरि मारत सुख पावत,

अद्भुत केलि कला विस्तारी ।।

हँसत हँसावत मोद बढ़ावत,

सुछबि विलोकत सखि बलिहारी ।

पिया के गेन्द प्रिया चादर में,

खोजि थकी नहिं सके निहारी ।।

(४४)

प्यारी जू दीजै गेंद हमारी ।

पूछत श्री मिथलेश सुता से, रघुवर अवध विहारी ।।

खेलत रहे एक संग मिलि के, जो निज सखी तिहारी।
तिन अंचल पट ओट छिपाई, कीजै खोज पुछारी॥
हा हा करत खड़े रघुनन्दन, सखी प्रमोद मँझारी।
'श्याम' सखे सिय गेंद दिखाई, सखिन बजाई तारी॥

(४५)

खेलत गेंद नवल पिय प्यारी।
संग समूह लिये सहचरि गन, चन्द्रकलादिक सारी॥
ललना गेंद चलाई रंग सों, तकि मारत सुकुमारी।
धाय धाय ले धरत हरत मन, पिय की केलि कला विस्तारी॥
बढ़ो खेल अति जोर परस्पर, निज निज जीत विचारी।
कबहुँक जीत होत प्यारे, कबहुँ सिया सुकुमारी॥
अमित गेंद चलि रहे अलिनयुत, छाये गगन मँझारी।
'नेहलता' जीती स्वामिनि संग, जय जय शब्द उचारी॥

(४६)

दीदी लाल बड़े खिलवार।
कन्दुक मिस जुवतिन आँचर तर, हेरत बारम्बार॥
सूधे श्याम इन्हें मति मानो, ये धूर्तन सरदार।
रसचोरी के घात तकत नित, रमनी रस बस प्यार॥
रंग जंग में सदा पराजित, तऊ न मानत हार।
'कान्तिलता' नयनों के तारे, युवतिन प्रान अधार॥

(४७)

रसिक दोउ खेलत कन्दुक खेल॥

सो रस रहस जानि कै प्रीतम, कठिन कला रहे झेल ॥
स्वामिनिहूँ सब कला कोष निज, दरसाई यह केल ।
चली न ऐक रस रोक टोक हठि, अंशन भुज दियो मेल॥
वचन विनीत वदत प्यारी सों, पिय 'रसराज' छकेल ।

(४८)

❀ भोग ❀

साजि थार अति हित सों आली,
दम्पति को निज हाथ पवाये ।
पावत प्रेम मुदित प्यारी पिय, सखिन अनन्द बढ़ाये ॥
अचवन करि मुख पोंछि वसन सों, दै वीरी हरसाये ।
'सरस माधुरी' फूल हार रचि, पिय प्यारी पहिराये ॥

(४९)

❀ आचमन ❀

करत दोउ आचमन जानकी जान ।
कंचन झारी जल अति निर्मल, मानो सुधा समान ॥
कोइ खरिका कोइ लाइ अंगोछा, कोइ भरि डब्बा पान ।
धोइ हाथ मुख पोंछि प्रिया संग, बैठे निज स्थान ॥
इतर पान अलि 'मधुरलता' तब, दिये सु करि मुस्कान ।
कुंजेश्वरि तब कीन्ह आरती, उमगेउ मोद महान ॥

(५०)

❀ पान ❀

पान पवावत हैं पिय प्यारो ।
कबहुँक रीझ देत आलिंगन, कबहुँ करत मनुहारी ॥
कबहुँक रद छद करत कपोलन, कबहुँ लाल वलिहारी ।
कबहुँक 'मोहनि' बिबस कामबस,
छिनहुँ करत नहिं न्यारी ॥

(५१)

❀ आरतो ❀

अवलोको सखी सिय लालन छबि,
चितवतही चित लेत सु चोरी ।
कनक थार सजि करति आरती,
नख सिख रूप निरखि भई भोरी ॥
दै गलबाँहि लसी अद्भुत छबि,
राई लोन वारि तृन तोरो ।
कल कपोल दर्पन से राजत,
अरुन अधर मुक्ता सु लसो री ॥
अंग अंग अद्भुत सुख माधुरी,
जहँ मन लागत तहँई फँसो री ।
'युगलअली' लोचन जीवातुक,
वलि वलि जाती सकल किशोरी ॥

॥ इति बैठक कुञ्ज ॥

❀ रास कुञ्ज ❀

।। आचार्य बन्दना ।।

—०—

पूर्वाचार्य सहचरी, नित्य धाम बसि हेरिये ।
जनक लड़ैती के प्रिये, मोहि भरोसो तेरिये ।।

।। सोरठा ।।

वन्दौं गुरु परमेश, जिनकी महिमा को कहै ।
थके गनेस महेस, सारद सेष रमेस युत ।।

दोहा :—

जिनके पद नख प्रभासे, हृदय सु होत प्रकास ।
नसत तिमिर सूझत हिये, सिय पिय रहस विलास ।।
वन्दौं चन्द्रकला अली, सकल सखिन सिरमौर ।
कृपा दृष्टि करि हेरिये, सूझै रहस हलोर ।।
वन्दौं चारुशीलादि अली, रूप गुनन की खान ।
करुना करि हिय में बसो, उपजावहु रस ज्ञान ।।
वन्दौं श्री मन्मारुति, जिन सम रसिक न आन ।
दया दृष्टि मो पै करो, दरसावहु रस ज्ञान ।।
वन्दौं श्रीमज्जगदगुरु, रामानन्द महान ।
रसिकन पंकज के लिये, उदित भानु भगवान ।।
श्रीमद्‌अग्राचार्य वर, सब रसिकन सिरताज ।
रसिक सालि हित मेघ ह्वै, वरसायो रसराज ।।

वन्दौं तिनके चरन रज, मम धन जीवन प्रान।
निज लघु किंकर जानिकै, उपजावहु रसज्ञान ।।
श्री श्री तुलसी दास जी, भाविक महा उदार।
कलि कुटिल जीव निस्तार हित, वाल्मीकि अवतार।।
तिनके पद अरविन्द को, वन्दौं बारम्बार।
कृपा करौ दरसै हिये, सिय पिय रहस उदार।।
वन्दौं तुलसी के चरन, जिन कीन्हौं जग काज।
कलि समुद्र बूढ़त लख्यो, प्रगट्यो सन्त जहाज।।
श्री नाभा श्री बाल अली, मधुराचार्य धुरीन।
राम सखे हरि रूप सखी, कृपा निवास प्रवीन।।
रामचरन हरि रसिकअली, युगलप्रिया रसखान।
युगलानन्य प्रपन्नजू, और जो रसिक महान।।
वन्दौं सबके पद कमल, सदा जोरि युग पानि।
सब मिलि के करिये कृपा, लघुतर किंकर जानि।।
जय जय जय श्रीजानकी, जय जय अवध किशोर।
जय जय नटवर वेषजू, जय रसिकन सिरमौर।।
राम रूप सम रूप नहीं, राम धाम सम धाम।
राम चरित सम चरित नहीं, रामनाम सम नाम।।
वन प्रमोद सम वन नहीं, सरि नहिं सरयु समान।
राम रास सम रास नहीं, मुनि कोकिल कियो गान।।

'रमु' क्रीड़ा के अर्थ से, रामहिं रास प्रधान।
औरन में यह गौण है, रस कवि करत बखान॥
जो ईसन के ईश हैं, अवतारन अवतारि।
कारन के कारन अहैं, वरनत वेद प्रचारि॥
सोई सीताराम हैं, अवध धाम के माँह।
विहरत सखी अनन्त युत, सिय संग दिय गलबाँह॥
क्वचित रास लीला करत, क्वचित करत जल केलि।
क्वचित सिया संग झूलहीं, क्वचित फागरस मेलि॥
एवं नित्य विहार में, प्रिया प्रेम रसलीन।
अवध छाड़ि गवनत नहीं, पद भरि रसिक प्रवीन॥
मंगल श्रीप्रमोद वन, मंगल ललि औ लाल।
मंगल सखिन समाज हैं, मंगल रसिकन माल॥

पद–१

छवीली चलु री कुञ्ज लतान।
झुकि रहे डार फूलि रही लतिका, करत भवँर रस पान॥
आगम निसा सरद की शोभा, प्यारी दृग ललचान।
फँसन चहत अलि कमल कोष में, प्रीतम नेह लुभान॥
निरखि वदन ससि गगन चन्द्रमा, लज्जित ह्वै सकुचान।
खिलन चहत कलियाँ कुमुदिनि की, 'मोहनि' रस पहिचान॥

(२)

॥ दूती ॥

पधारो रास मंडल में, हमारे प्रान संजीवन॥

सरद की यामिनी में, कामिनी सब अंग फूले हैं।
इन्हें रसरास से भरिये, हमारे प्रान संजीवन ।।
सजा कर रासमंडल को, रंगीली कुंज ललनायें।
खड़ी मग जोहती चलिये, हमारे प्रान संजीवन ।।
'लता रसकान्ति' की, सूखी जाति विरह ज्वर से।
सुछबि रस प्याइये चलके, हमारे प्रान संजीवन ।।

(३)

चलो सखि रास मंडल पिय प्यारी ।।

नवल रसाल हिंडोल कुंज से, सकल शृंगार सवाँरी।
संग रंगीली अलिगन सोहै, सेवा सौज सुधारी ।।
चढ़ि विशाल सुन्दर रथ ऊपर, फूलन गेन्द उछारी।
कौतुक अमित करत मग माहीं, गान तान मनहारी ।।

(४)

देखो सखि आवत रास बिहारी ।।

सरयू तीर सिगार विपिन में, अति अनूप छबि धारी।
सीताराम मनोहर जोरी, चितवन की बलिहारी ।।
संग सखी सोहैं अलबेली, बनी ठनी छबि कारी।
सुमन सिगार किये नखसिख लौं, निज कर श्याम सवाँरी ।।
प्रभु आगे सखि खेलत आवे, फूलन गेंद उछारी।
झुकि झुकि लेत परस्पर फेंकत, लखि अनन्द पिय प्यारी ।।

आये दम्पति 'रामचरन' सखि, सुमन सिंगार उतारी।
नखसिख मनि भूषन सिंगार करि, सिंहासन बैठारी॥

(५)

परस्पर पिय प्यारी करत सिंगार॥
चन्द्रकला अरु चन्द्रमुखी दोउ, देत सुधार सुधार।
जनु धन दामिनि ऊपर राजत, रवि ससि ज्योति अपार॥
कुंडल कर्नफूल बुलाक नथ, और विविध मनिहार।
कटि किंकिनि केयूर जटित नग, नूपुर अति रव कार॥
पीत नील अति रुचिर वसन तन, पहिरे घूम घुमार।
नटनि वेष यह सिय रघुवर को, निरखि 'रसिक' बलिहार॥

(६)

रास कुञ्ज मंडप मधि बैठे पिय प्यारी।
शुभ्र मनिन सिंहासन ऊपर शोभा भइ भारी॥
आसपास अलि समाज सौज विविध धारी।
कोउ चवँर छत्र कोउ कोउ मुरछल छविकारी॥
कोउ यंत्र वीन कोउ कोउ सुरमंडल वारी।
उघटत संगीत कोउ नृतत गति धारी॥
कोउ करत गान कोउ तान लेत भारी।
'रसिकअली' यह समाज, लखि लखि वलिहारी॥

(७)

किये दोउ राजत रास सिंगार॥

युगल सखी सिर छत्र फिरावे, युग युग चवँर सुढार।
षोडस सखी वाद्य सजि चहुँविधि, वीन मृदंग सितार॥
अमित अली नव वरन मनोहर, सोभित मण्डलाकार।
'प्रेमलता' अति मुदित अलीगन, निरतत सुछबि निहार॥

❀ श्री प्रियाजू ❀

प्रीतम रास विलास को, मोमन अति उत्साह।
चलो चलें सब अलिन युत, नवनिकुंज के माँह॥
चन्द्रकले गुन आगरी, तुम हो परम प्रवीन।
सुन्दर रास विलास के, बाँधो ठाठ नवीन॥
सुर मंडल विमला गहे, चन्द्रावती मृदंग।
साज सितार सु चारुशिला, चन्द्रे तुम मौचंग॥
सुभगा मधुर अलापहीं मदनकला दे ताल।
अली प्रसादा भाव के, निरखि बतावे हाल॥
गहे तमूरा लक्ष्मणा, छेम विशाल रबाब।
सारंगी हेमा अली ऐसो बने बनाव॥
प्राननाथ वीना गहें, मैं नाचूँ सजि साज।
नदी बहे पुनि प्रेम की, ऐसो बने समाज॥

—०—

या विधि साज प्रवन्ध करो,
सखि आनन्द की रसधार बहेगी।
प्रीतम के मन की रुचि है,
यह मेरे हिये अभिलाष पुरेगी॥

तुम सबही सुख पावो महारस,
आनन्द वेलि हिये उमगेगी।
बरषे घन आनन्द प्रेम महा,
तब सहजहिं बेली फूलि फलेगी॥

❀ श्रीचन्द्रकला जू, श्रीस्वामिनी जू से ❀

॥ दोहा ॥

हे मेरी सुख दायिनी, मन की जाननहार।
हम सबकी अभिलाष को, सब विधि पूरनहार॥
रास साज सजवाय के, सब विधि करब तैयार।
रस विलसो प्रीतमप्रिया, हम सब करब सम्हार॥

❀ सखिगनों से ❀

हे मम प्रान समान अली, सव रास रचो सुख के उपजावन।
तुम सव साज धरो मिलिके,सबहीं विधि से रतिनाथ बढ़ावन॥

(८)

सखिगन रास भोग सुखलाई।
मेवा मगद सलोने मिसरी, अरु पकवान मिठाई॥
जेंवत जानकी रमन कवर कर, करत विनोद सुछाई।
'कृपानिवास' अली जल प्यावति, अचवन करि सुखदाई॥

॥ दोहा ॥

सखिन सहित सिय लाल तहँ, कीन्ह सोमरस पान।
सुमन माल पहिराइ सखि, अतर करावति घ्रान॥

वीरी ललित सम्हारि अलि, दुहूँ ललन मुख देंहि।
चन्द्र वदन अवलोकि के, तृन तोरि वलैया लेंहि ॥

(६)

॥ आरती ॥

राज कुंज रस बरसि रही है,
आरति करि सखि हरषि रही है।
स्वेत सिंहासन ऊपर राजत,
स्वेत चन्द्रिका क्रीट विराजत,
स्वेत हार गर चमकि रही है ॥ आरति० ॥
विधु वदनी अति आरति गावति
नृत्य करति प्रियतमहिं रिझावति,
पग नूपुर झम झमकि रही है ॥ आरति० ॥
स्वेत सुमन सुरतिय बरसावति,
मनसिज रति छबि पर वलि जावति,
उमा रमा पद परसि रही है ॥ आरति० ॥
बिहँसि बंक पिय सैन करत दृग,
सखिन चैन मन धरत चपल दृग,
अँग अँग नव रस उरझि रही है ॥ आरति० ॥
'सियबल्लभ' सिय ओर निहारत,
पुनि प्रिया प्रीतम छबि उर धारत,
छटा माधुरी छिटकि रही है ॥ आरति० ॥

(१०)

जय जय श्रीवन प्रमोद रसिकन सुखदाई ।
सरयू तीर दिव्य भूमि, वेलि लता रही झूमि,
फूलन प्रति भवँरा अति, गुंजत मनभाई ।।
कुंज कुँज प्रति अनूप, विलसत तहँ युगल रूप,
जनकलली रघुनन्दन, मधुर मधुर ताई ।
चन्द्रकला विमलादिक नागरी नवीनो अति,
मधुर यंत्र लीन्हें कोइ सप्त स्वर जमाई ।।
गावहिं सब दिव्य तान सुनहिं लाल अति सुजान,
रास सरस भीज मंद मंद मुसुकाई ।
'अग्रअली' विपिन राज, यह सुख तहँ नित समाज,
जानत कोइ रसिक भेद, निज यह रसपाई ।।

(११)

जय जय रघुनन्द चन्द रसिकराज प्यारे ।
अंग अंग छवि अनंग कोटि वारि डारे ।।
विहरत नित सरयु तीर, संग सोहै सखिन भीर,
सिया अंश भुजा डारि अवध के दुलारे ।
कोइ सखी छत्र लिये, व्यजन लिये कोई,
युगल सखी चवँर लिये, करत प्रान वारे ।।
सुन्दर सुकुमार गात पुष्पमाल सकुचि जात,
परसत भयभीत होत रूप के उजारे ।

नख सिख भूषन अनूप यथा योग तथा रूप,
कोटि चन्द कोटि भानु निरखत दुति हारे ॥
मन्द मन्द मुस्कुरात, प्यारी संग करत बात,
देखि देखि 'अग्रअली' तन मन धन वारे ॥

(१२)

सिंहासन राजत सिय रघुवीर ।
कोटिन भानु प्रकास सिंहासन, कोटिन शशि सम सीर ॥
कोटि काम रति छवि निन्दत दोउ, श्यामल गौर शरीर ।
मनि वहु भाँति विभूषन भूषित, नील पीत पट चीर ॥
वहु सखि धूप की युक्ति बनावहिं, वहु सखि दीप सजीर ।
वहु सखि रचि नैवेद्य लगावहिं, वहु सखि लीन्हे नीर ॥
वहु सखि मुख पोछन पट लीन्हें, वहु सखि लीन्हें वीर ।
वहु सखि छत्र व्यजन चामर लिये, वहु सखि करत समीर ॥
वहु सखि वाजन त्रिविध वजावहिं, ताल देत अति धीर ।
'रामचरन' सखि गौरी गावहिं, मधुरे स्वर गंभीर ॥

(१३)

देखो सखी सरद का दरबार हो रहा है ।
आनन्द में सखीजन सरसार हो रहा है ॥
चादर बिछी हुई है अत्यन्त श्वेत कैसी,
ज्यों चन्द रश्मियों का अवतार हो रहा है ।

दोनों बिराजते हैं हीरों के मंच वर पर,
सुमनों का सब तरफ से उपहार हो रहा है ।।
पहने हुये हैं दोनों पोशाक अति धवल तर,
सित पुष्प श्वेत मनिमय श्रृंगार हो रहा है ।
त्यों ही, सखीजनों के भूषन वसन धवल तर,
सब श्वेत द्वीप का सा व्यवहार हो रहा है ।।
सारंगियाँ वो वीना कलवेनु बज रहे हैं,
लय ताल से मुरज का धुधुकार हो रहा है ।
जो गान कर रही हैं उनकी अवाज के संग,
आनन्द का अधिक तर संचार हो रहा है ।।
प्यारी की देखकर छबि लज्जित है रति विचारी,
प्यारे की छबि से लज्जित अति मार हो रहा है ।।
ग्रीवा में है प्रिया के प्रियतम की बाँह आली,
धारन तमाल दल का या हार हो रहा है ।
प्यारी के मुख पै प्रीतम निज दृष्टि हैं लगाये,
प्यारे के मुख पै उनका दृग वार हो रहा है ।।
कुछ कह रहे हैं प्यारे, देखो मगर उधर से,
कुछ मन्द मन्द कहकर इनकार हो रहा है ।
जी में जो आय समझो, इस 'प्रेम' का हृदय तो,
श्रृंगार रस में फँसकर लाचार हो रहा है ।।

(१४)

अलि छबि देखु शरद की यामिनि ।
विमल अकाश चन्द्र परिपूरन,
रासकुञ्ज चलिये गजगामिनि ।।
देखी जाय विपिन अद्भुत तहँ,
मण्डल विभाग मनि भूमि सुनामिनि ।
नटवर अद्भुत वेष रसिकमनि,
अद्भुत चन्द्रकलादिक भामिनि ।।
अद्भुत अवध रंगमनि महलैं,
अद्भुत श्री सरयू वर कामिनि ।
नटति परस्पर बाँहाजोरी,
अद्भुत 'युगलप्रिया' की स्वामिनि ।।

(१५)

आउ आउ री सहेली लखु चाँदनी ।।
रघुनन्दन अरु जनक नन्दनी, संग सखी सब माननी ।।
वन प्रमोद विच रास रच्यो हैं, छाइ प्रभा अह्लादनो ।
चन्दकला अलि वीन वजावति, गावें चारुशिला प्रिय वादनी।।
और सखी सब नृतति गावति, मनहुँ देह धरि रागनी ।
तन मन प्रान निछावर प्यारे, देखि नटत प्रिय प्राननी ।।
पिय हिय लागि मगन सिय स्वामिनि,
'नेह' मधुर रस स्वादनी ।।

(१६)

नइ नइ वधूटी आनि जुरी धरि,
लई लालजू की आँगुरिया।
इक ओर अली मिथिलेश लगी,
सब गुन की आगर नागरिया॥
सिय भाल चन्द्रिका चमकि रहो,
प्यारे राम लाल सिर पागरिया।
मुख चन्द्र सों चन्द मिलाय रहे,
गुन गावें पिया की माधुरिया॥
सुख सागर नागर नटत दोऊ,
लखि 'युगलप्रिया' वड़ भागरिया॥

(१७)

देखो सखी रहस कलोल नटत पिय प्यारी।
यह चटक चाँदनी सरद चन्द्र उजियारी॥
सुन्दर अशोक वन कुञ्ज सदा सुखकारी।
फूले द्रुमलता वितान मधुप गुञ्जारी॥
वीना धर वीन वजाय गाय लय धारी।
सहजा सितार कर धारि लेत गति न्यारी॥
चन्द्राननि मृदंग टंकोर चन्द्रकला तारी।
सुभगा जू सप्त स्वर घोरि रहस मतवारी॥
यह रास विलास अपार सिधु अति भारी।
'ज्ञानाअलि' क्यों करि कहै पंगु मति हारी॥

(१८)

❀ प्रीतम जू का गान ❀

प्यारी तेरे नयना मदन सरवारी।
रतनारी कारी कजरारी,
चन्द वदन पर अति छविधारी॥
चितवन वाँकी तिरछी प्यारी,
मम हिय के घायल करि डारी।
मीन कमल खंजन दुति हारी,
सब विधि प्रान अधार हमारी॥
हँसनि नटनि अरु अंग मरोरनि,
देखि देखि मैं जाऊँ वलिहारी।
रूप उजागर 'अग्र' तियन में,
हौ तुम श्री मिथिलेश दुलारी॥

(१९)

❀ श्रीप्रियाजू का गान ❀

प्यारे मुखचन्द विलोकहु सजनी।
क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल,
नयन कमल दल अति छवि छवनी॥
नासामनि सु अधर पर राजत,
मनहु कमल दल शुक्र उदवनी।
कल कपोल पर अलकें छूटीं,
चन्द उपर मनु वसि वहु अहिनी॥

कटि कछनी काछे बने आछे,
पग में नूपुर अति मन हरनी।
मुरनि ढुरनि अरु हँसनि नटनि में,
कोटिन काम करो निवछवनी॥
रूप उजागर 'अग्रस्वामि' मेरे,
मम हिय के हैं प्रान संजीवनो॥

(२०)

सखिन बिच नृत्यत युगलकिशोर॥
विपिन प्रमोद सरोजा तट पर,
दिव्य भूमि चमकत चहुँ ओर।
चक्राकार रास मंडल रचि,
राग रागिनी के कल शोर॥
चन्द्रकला विमलादि रंगीली,
वीन मृदंग लिये कर घोर।
चारुशिला सुभगा हेमा लिये,
मुरली मुचंग किन्नरी जोर॥
चन्द्रा चन्द्रवती मिलि गावत,
छेमा स्वरहिं भरत रस वोर।
मदन कला करताल बजावति,
सारंगी नन्दादि टंकोर॥
पिय सिर सुभग सुक्रीट बिराजै,
चन्द्रिका सीता के सिर रोर।

चन्द्रहार प्यारी उर चमकत,
पिय उर मोतिन माल उजोर ।।
कोटि कोटि रति काम विमोहन,
नटवर वेष श्याम अरु गौर ।
रूप माधुरी कहि न परतु हैं,
अंग अंग छवि के उठत हिलोर ।।
करसे कर दोऊ मिलि धारे,
नयनन सैन चलत दुहुँ ओर ।
कबहुँ अधर रस पियत परस्पर,
रस मतवारे दोउ चित चोर ।।
प्यारी हाव पिया चित करषत,
पिय के भाव प्यारी निज ओर ।
दोउ रससिंधु मगन रस लम्पट,
'अग्रअली' नहिं चाहत भोर ।।

(२१)

तेरो चितवन मोहे राजकुमार ।
अरुनारे कजरारे नयना, चलत समर सरमार ।।
खंजन मीन कमल मद मोचन, लोचन लोल निहार ।
जुवतिन गन तन लता विपिन विच, खेलत रूप सिकार ।।
रसिक शिरोमनि राजकुवँर तुम, मन की जानन हार ।
'रसमाला' चितवनि उर सालत, लीजे वेग उबार ।।

(२२)

पिय सियहिं मनावन जात री ॥
मनहुँ मनोज उरोज संमुख लखि, जात समीप डरातरी।
गाय बजाय रिझावत बहु विधि, बार बार वलिजात री ॥
सुकर उरोज त्रदन हिम कर सों, परसत अति सकुचात री।
धरि ठोढ़ी कर पुनि २ चूमत, मनहुँ अमित रस खात री॥
गोद बैठाय मोद अति पावत, प्रेम प्रीति लपटात री।
'मधुरी' हँसि सिय मिली अंक भरि,
आनन्द उर न समात री॥

(२३)

प्यारे सो हँसि मिलि सिय प्यारी।
तज्यो मान सुनि राम बैन मृदु, भयो अनन्द अति भारी॥
गावहिं सखी बजावहिं बाजन, जै जै वदत उचारी।
'रामसखे' लागी विहरन अब, पिय संग जनक दुलारी॥

(२४)

नटत सियाजू पिया लेत बलिहरिया।
छम छम छमकत नूपुर बजावत,
पिया मन मोहत कहत हरिहरिया॥
पीत चम्पा पर घन सोहत छबि,
तापर नखत दामिनी फूलझरिया।
लेत तान जब प्यारी नइ नइ,
वाह वाह कहत पियाजू स्वर भरिया॥

'नवल विहारी' प्रिया विरिया खिलावत,
जय जय कहत सखिन मनहरिया ।।

(२५)

रसिक दोउ नृतत रंग भरे ।
विपिन अशोक रास मंडल बिच, जनकलली रघुलाल हरे ।
अमित रूप धरि करि कछु चेटक,
युग युग तिय मधि श्याम अरे ।
क्रीट मुकुट की लटक चन्द्रिका,
झुकनि मदन मद दूर करे ।।
मोतिन हार युगल उर राजत,
कुन्द मालती माल गरे ।
पग नूपुर मंजीर मधुर रव,
कंकन किंकिनि मुखर वरे ।।
मुरज मंजीर ढोल सारंगी,
एक मुरली की टेर करे ।
विविध ताल संगीत अलापत,
तताथेइ तताथेइ कहत खरे ।।
कवहुँ मधुर मुसकाय के दम्पति,
निरखत छवि भुज अंश धरे ।
कवहुँ सुरत करि व्याह समय की,
फिरत भावँरी रसिक बरे ।।

यह रस रास महा सुख सागर,
द्वादस योजन लौं सवँरे।
'रसमाला' भरि पूरि रहयोवन,
जग कोइ बुन्द प्रकाश करे ॥

(२६)

नटत राम नागर नागरिया।
चन्द्रकला कलवीन बजावत, गावत चन्द्रवती सहचरिया ॥
सुनि सुनि थकित भये सरयूजल, मुनिजन सकल भये बावरिया।
प्यारो अंश पिया भुज धारे, पिय अंशन प्यारी भुजधरिया।
मनहुँ तमाल लता कुंजन में, सावँल गौर परस्पर अरिया ॥
सुधि आवत जबव्याह समय की, रास मंडल दोउ लेत भवँरिया।
या सुख सिन्धु रूप के ऊपर, रति पति कोटि वारने करिया॥
वन प्रमोद विहरत नाना विधि, अवध ललन अरु जनकदुलरिया।
'रामसखे' दम्पति लीला रस, लखि लखि दृगन प्रेम उरभरिया॥

(२७)

सिय पिय लूटैं सरद वहारे, सरयु किनारे हो रामा।
आपस में दोउ तन मन वारे, गरभुज डारे हो रामा॥
वीना इन्दुकला झंकारे, ललना गन गति पै पग धारे,
पैंजनि ध्वनि छूम छननन छननन छम्म छम्म कारे हो रामा।
नृत्यत कोटि कलान नवेली, सर्वकला कुशला अलवेली,
गावै सप्त स्वरन त्रय ग्राम मूर्छना धारे हो रामा॥

प्रीतम उर उमंग अति वाढ़े, द्वै प्यारी विच २ भये ठाढ़े,
सरस्यो 'मोद' मंजु रस साम से भयउ सकारे हो रामा ॥

(२८)

कोइ सखि वीन मुचंग काहू लिये, जलज तमूरा कोइ धारी ।
वहुत सखी लिये वहुत यंत्र हैं,
थेइ थेइ कर नाचत बहु नारी ॥
छम छम नूपुर चरनन बाजै,
मनु मोहनी मन्त्र ध्वनि कारी ।
गावति सब रागन रागिनि में,
स्वर सुनि इन्द्रबधू मन हारी ॥
जब प्यारी प्रीतम मिलि गावत,
ताथेइ ताथेइ और न प्यारी ।
स्वर्ग सात पाताल व्यापि गयो,
परमानन्द के बह्यो पनारी ॥
महा रास सव दिशि में छायो,
आकर्ष्यो जहँ तहँ नर नारी ।
सब सखियन मन पिय अंग धारी,
करौ मनोरथ रुचि अनुसारी ॥
सब की रुचि लखि के सिया प्रीतम,
धारयो बहुत रूप मनहारी ।
जस जस जाहि मनोरथ रहेऊ,
तस तस करि सब किये सुखारी ॥

अस्थावर जंगम जो जहँ लौं,
आनन्द मगन भये नर नारी।
अद्भुत रास रच्यो पिय प्यारी,
संग, सखिन लिये 'अग्र' दुलारी॥

(२९)

रास मंडल मधि सोम श्रवन वट,
नटत प्रिया प्रीतम आजु री।
अलिगन जाल मकर सम चहुँ दिशि,
बीचहिं दम्पति भ्राज री॥
विविध भाँति भूषन षट पहिरे,
सिरन चन्द्रिका ताज री।
कबहुँ प्यारि मुख चूमत प्यारे,
अंशन भुज जुत छाज री॥
राग अलापत नृत्यत थेइ थेइ,
नहिं कछु लावत लाज री।
मन्द मन्द मुसुकात परस्पर, मधुरी वीना बाज री॥
पान खवावत गर लपटावत, नयन मयन सर साज री।
चन्द्रकला सखि चवँर ढुरावत,'जानकी' मनेमन गाजरी॥

(३०)

रास श्रमित बैठे मन भावन।
चन्द्रमनी सिंहासन ऊपर,
वाम भाग सिय अति छबि छावन॥

मृदु कर कंज विजन कोउ सारति,
श्रम सीकर पोंछति कोउ दामन ।
कोउ सखि दोउ के चरन पलोटत,
कोउ कर कोउ कटि लगी दवावन ॥
कोउ सखि पुनि अचँवाइ दोउन को,
दूध मलाई लगी पवावन ।
पान पवाइ अतर अर्पन करि,
फूल माल लागी पहिरावन ॥
'कान्तिलता' रस आरति करती,
नाचि नाचि सुख सिन्धु समावन॥

(३१)

❀ विसर्जन क्रम ❀

निरखु सखि रास किये दोउ राजैं ॥
सिथिल अंग श्रमकन मुख झलकत, अलक छुटी सुख साजैं ।
चवँर छत्र सिर बिजन ढुरावैं, चहुँ दिशि अलिन समाजैं ॥
बहु सखि भूषन वसन सवाँरैं, चन्द्रिका वर सिरताजैं ।
'प्रेमलता' सखि आरति करहीं, साज बाज मिलि बाजैं ॥

(३२)

❀ आरती ❀

सखि आरती युगल किशोर की ।
श्याम गौर अभिराम युगल छबि,
सकल अलिन चितचोर की ॥

रति रस सने नयन अलसोहैं,
चितवनि सुख रस वोर की ।
कल कपोल कुण्डल प्रतिबिंबित,
सिय बिधु वदन चकोर की ॥
अंस धरे भुज लसत परस्पर,
छूटी अलक झकोर की ।
'रसमाला' पिय छबि पर वारिये,
उपमा मदन मरोर की ॥

❀ दोहा ❀

बिमल वेदिका मनि जटित, सोहत सुर तरु छाँह ।
'प्रेमलता' सियराम तहँ, बैठे दिये गलबाँह ॥
बाला बालरु मंजरी, मुग्ध सु मधुर किशोर ।
सेवति श्री सियराम नित, 'प्रेमलता' चितचोर ॥

(३३)

परस्पर दोनों उरझि रहे ।
मन सो मन नयनन सों नयना, बोलन सों बोलन हे ॥
पियहि खवावति पान पियारी, पिय सिय चिबुक गहे ।
अधर रसहि ललचाय नवल पिय, चितवनि चखनि चहे ॥
एक कर अंश धरे पिय सिय के, एक कर उरज गहे ।
'रसमाला' छवि निरखि दुहुँन को, उर ते ताप दहे ॥

—०—

सर्वेश्वरी श्री चन्द्रकला जू की जय।

जय जय कृपा की निधान,
सिया रस रंग में बोरी की जय जय ॥
जय जय सखिन को आश्रयभूति,
युगल मुखचन्द चकोरी की जय जय ॥
जय जय महा छवि रास विधायिनि,
सियाजू प्रीति विभोरी की जय जय ॥
जय जय सिया पद प्रीति उपासिनि,
श्री चन्द्रभानु किशोरी की जय जय ॥

—०—

जय जय सिया सुख वर्धन कारिनि,
श्री चन्द्रभानु दुलारी की जय जय ॥
जय जय सिया पद प्रीति बढ़ावनि,
युग लाड़ प्रदायिनि उदारी की जय जय ॥
जय जय चमाचम चन्द्रिका बन्दो,
सीय प्रसाद विभूषिनि की जय जय ॥
जय जय सखी सुखनिधि उमगावनि,
सिय पिय प्रीति डुबावनि की जय जय ॥
जय जय युगल मुख चुम्बन वारी,
स्वामिनि अंक निवासिनि की जय जय ॥

—०—

श्री प्रियाजू की जय जय ।।

जय जय सदा करुना की निधान,
कृपा रसरंग में बोरी की जय जय ।।
जय जय सखीन की प्रान अधार,
पिया मुख चन्द चकोरी की जय जय ।।
जय जय महाछबि रासि कलामयि,
प्रीतम प्रेम विभोरी की जय जय ।।
जय जय सदा निमिवंश उजागरि,
श्री मिथिलेश किशोरी की जय जय ।।

--०--

श्री प्रीतम जू की जय जय ।।

जय मनोहर सुन्दर श्यामल,
छैल छली सरकार की जय जय ।।
जय जय सनेहिन के रसिया,
रस प्रेम के दानी उदार की जय जय ।।
जय जय चमाचम कुँडल क्रीट की,
हीरन मण्डित हार की जय जय ।।
जय जय सदा रसरंग भरे,
रघुनन्दन आर्य कुमार की जय जय ।।

(३४)

❀ दूती व्यारू कुन्ज की ❀

समय लखि आई नवल नवेली, करि सिंगार अलबेली ।

रास मध्य जहाँ दोउ राजै, सिय पिय सहित सहेली।
नाइ चरन सिर करी प्रशंसा, पिय कहँ कही तजहु यह केली।।
चलिये ब्यारू करन लाड़िले, समय सुखद अवभेली।
'मधुरलता' सुनि बचन प्रेममय, चले सु गरभुज मेली।।

❀ दोहा ❀

आली ब्यारू कुञ्ज की, आइ प्रार्थना कीन।
चले यान चढ़ि सखिन संग, रंग भवन चित दीन।।

।। इति रास कुञ्ज ।।

❀ ब्यारू कुञ्ज ❀

पद-१

चले दोउ ब्यारू कुंज अली।।
करि सु विहार रास के दम्पति, रघुनन्दन श्रीजनकलली।
रतन जड़ित सिविका अति सुन्दर, तापर लाल लली।।
चहुँ दिशि सखियन सौज लिये हैं, नाना रंग रली।
पहुँचे ब्यारू कुञ्ज सुभग जहँ, मध्य सु रतन थली।।
करि सन्मान सखी कुञ्जेश्वरि, आनन्द भरि उछली।
बैठाये रतनन चौकी पर, पूजन करि सु भली।।

(२)

सिय पिय ब्यारू कुञ्ज पधारे।
चढ़ि सुखपाल अलीगन लीन्हें, मन में मोद अपारे।।

कुञ्जेश्वरि आरती कीन्हीं, अरध पावँड़े डारे।
रास सिंगार उतारि नवल करि, मुख कर कमल पखारे।।
मनि चौकी पर आय विराजे, सखियन थार सवाँरे।
'प्रेमलता' परिकर युत दोऊ, भोग विशाल निहारे ।।

(३)

करत दोउ व्यारू भोग रसाल ।
विविध भाँति पकवान मिठाई, नरम गरम सब माल ।।
साग अचार दूध अधऔटा, भरे कटोरन थाल।
पावत मोद विनोद बढ़ावत, करत सु रसमय ख्याल ।।
पिय निज कर लै सिय मुख देहीं, सिय प्रीतम रुचिपाल।
मधुर मधुर सुर गान करत सब, सुभग रंगोली बाल ।।
सखि सरयू जल पान करावति, छबि लखि होत निहाल।
'प्रेमलता' अचवन करि दोऊ, पान खात लली लाल ।।

(४)

कनक थार वहु भरि पकवान, सखि कर कमल सुहाई जू।
करत वियारू राम जानकी, परसहिं सखि रुचिदाई जू ।।
पंच कवर करि जल पियाइ पुनि, पावत सिय रघुराई जू।
वहु प्रकार भाजा तरकारी, दूध सु रुचि मधुराई जू ।।
भाँति भाँति वहु बनी मिठाई, गरम गरम मन भाई जू।
विविध अँचार सुरस मनरोचक, बिच बिच भावत पाई जू ।।

मोहनभोग बनाइ भाँति बहु, मेवा चूर मिलाई जू।
परसत करहि हास रस बहु सखि, रसमय बचन सुनाई जू।।
राम लला तुम सिय जू के चेरे,कहि जल सखिन पिवाई जू।
वो आनन्द सुख जाने सो सखि, 'रामचरन'किमि गाई जू।।

(५)

व्यारू कुञ्ज रंग भरे दोउ, व्यारू करत पिय प्यारी।
बैठे रतन रचित चौकी पर, रतन दीप उजियारी।
कोउ सखि पानपात्र कर लीन्हें, कोउ सखि लीन्हें झारी।।
कोउ सखि मुख पोछन पट लीन्हें,सौज विविध विधि नारी।
कोउ सखि बाजन विविध बजावत,गावत मृदु सुर गारी।।
जेंवत अति स्नेह भरे पिय, रघुवर जनक कुमारी।
बहुबिधि स्वाद सराहत बिहँसत,लखि 'रसिका'बलिहारी।।

(६)

व्यारू करत किशोर किशोरी ।।
एकहि थार माँहि मिलि पावत,
सुन्दर श्याम स्वामिनी गोरी।
छप्पन भोग छत्तीसो व्यञ्जन,
पृथक पृथक भरि धरी कटोरी ।।
साक सलोने रुचिर रायते,
भाँति विविध सकरौरी।
पापर तले मुरमुरे न्यारे,
बारा बरी दनौरी फुलौरी ।।

विविध अचार चटपटी चटनी,
चाखत लालन ले ले बोरी।
'सरस माधुरी' रूप लुभानी,
निरखि सिरानी अखियाँ मोरी ॥

(७)

व्यारू करत भावती जोरी।
मिलि जेंवत दोउ राम जानकी, देत परस्पर कौरी ॥
प्रिया प्रीतम दोउ जेंवन बैठे, पिय साँवर सिय गोरी।
षट्रस व्यञ्जन विविध भाँति के,सखियन कर परसोरी॥
जाल रन्ध्र छबि निरखत वनिता, देखि प्रमोद बढ़ो री।
'तुलसिदास' हँसि लेत बलैया, देत है प्रान निछोरी ॥

(८)

व्यारू करत जानकी वल्लभ, व्यंजन विविध सँवारे जी।
खस्ता पूड़ी लुचइ कचौड़ी, पुआ आदि रसकारी जी॥
सक्करपारे मोदक बरफी, गुलकंद संदेश रबड़ी जी।
रसगुल्ला इमरती जलेबी, पेड़ा आदि सुधारी जी॥
परवल आलू और करेला, केलादिक तरकारी जी।
विविध भाँति मेवा अचार बहु,चटनी भाँति हजारी जी॥
दही रायता दूध मलाई, वहु सिरका तलखारी जी।
यहि विधि अमित भाँति दोउ पावहिं,
अलिगन सहित सुखारी जी॥

(९)

ब्यारू करत लाड़िली लाल।

षटरस व्यंजन विविध बनाये, परुसें हँसि २ बाल।
खाजा खुरमा तपत जलेबी, मोदक विविध रसाल ।।
घेवर सेव अमृती फैनी, मालपुआ भरि थाल।
मोहनभोग कचौरी पूरी, खोर खाँड़ घृत घाल ।।
जेंवत सरस परस्पर दोऊ, करत अनेकन ख्याल।
मेवा मिसरी दूध अधौटा, ल्याई सखि ततकाल।
हित सों पियो लियो अवशेषित, सकल सखी 'रसमाल' ।।

❀ कवित्त ❀

मिथिला का मेंहीं चिउरा रुचिर गमागम करै,
अध औटे दूध में मींजि प्यार से भिजावती।
कमला किनारे का प्रसिद्ध औ स्वादिष्ट दही,
ताकी केवल छाली छाछी से काढ़ि लावती ।।
मिसरी चूर आमरस शाक भाजी भाँति भाँति,
भरि भरि कटोरनि चहुँ ओर से सजावती।
मिथिला की सुघर सुकुमारी दुहुँदिशि खड़ी,
ग्रास को सुधारि लली लाल को पवावती ।।

—०—

कोउ सखि पेड़े और मलाइ को मिलाइ आनि,
दोनों मुखचन्द में बड़े प्यार से अर्पती हैं।

केले को मिसाइ पुनि दूध में मिलाइ,
वहु भाँति से सौंधाइ मनि गिलास में पिवाती हैं॥
कहाँ लौं गिनाऊँ मिथिलानियों का लाड़ प्यार,
नाना मिष्टान्न और पकवान को जिमाती हैं।
चटनी अँचार तो हजार भाँति से हैं सजे,
व्यञ्जन अनेक मनरंजन को पवाती हैं॥

—०—

हँसहिं हँसावहिं पिय रस बरसावहिं,
कभी मीठी सी मजाक कभी चुटकी भी लेते हैं।
काहू दिशि नैन सैन मैन बान फेंकि फेंकि,
काहू दिशि देखि मन्द मन्द मुसुकाते हैं॥
काहू के अंचल के भीतर के परसि अंग,
और दृष्टि बचाकर काहू मुख चूमि लेते हैं।
काहू लाजवन्ती को पकरि चतुर चूड़ामनि,
दधि और मिसरी भरि गाल लपटाते हैं॥

(१०)

अचवन करत नवल सिय गोरी।
सरयू जल सुरभित अति सुन्दर, पीवत कुवँर किशोरी॥
लै लै वसन कमल कर पोछत, पान खात मुसकोरी।
'सरस माधुरी' निरखि मुदित मन,
सुन्दर श्याम स्वामिनी गोरी॥

(११)

करत दोउ आचवन जानकी जान ॥

कंचन झारी अति निरमल जल, मानो सुधा समान ।
कोइ खरिका कोइ लाइ अँगोछा, कोइ भरि डब्बा पान ॥
धोय हाथ मुख पोंछि प्रिया संग, बैठे निज स्थान ।
अतर पान अलि 'मधुरलता' तब, दिये सुकर मुसुकान ॥

(१२)

अलि छबि देखु लड़ैती लाल ।

करि व्यारू बैठे मनि चौकी, फबि रहि उर मनि माल ॥
चरवन पान हँसनि मृदु बोलनि, लखि दृग दृगन रसाल ।
'रसिकअली' सिय रघुवर छबि लखि,
रति मनमथ उर साल ॥

(१३)

बीरी सरस सखी रुचि दीनी ।

लाइ प्रीति मुख दै पिय प्यारी,
अधरन लाली लसी नवीनी ॥
मृदु मुसुकात बात हँसि बोलत,
सुनत सहेली रस में भीनी ।
'सरस माधुरी' सैन करन को,
युगल लाल मन इच्छा कीनी ॥

(१४)

व्यारू शेष आरती उतारे।
गीत वाद्य नृत नवल सखी जन,
केलि कुतूहल मोद अपारे।।
जयति जानकी वल्लभ मुख पट,
सेज महा सुख चाह निहारे।
खिलत विनोद कमोद कली सी,
युगल चन्द्र रस किरन पसारे।।
धूप दीप जल पट प्रिय के हित,
मुकुर दिखावत समय सँभारे।
जयति जानकी वल्लभ सुख पै,
'कृपानिवास' प्रान तन वारे।।

(१५)

❀ दूती शयन कुञ्ज की ❀

व्यारू भोग अरोग भली बिधि, आय गयो युग याम।।
सुमन सेज सजि आईं सखियाँ, लै चलि सुख के धाम।
हिलि मिलि पौढ़ि परम सुखलीजै, कीजै पूरन काम।।
सुनि विनती सखियन की दम्पति, चले सुख के आराम।
'सरस माधुरी' रस के माते, कुवँरि किशोरी श्याम।।

।। इति व्यारू कुञ्ज ।।

—०—

❁ रात्रि शयन कुञ्ज ❁

पद–१

महल को चलिये श्री महराज।
राजत राजत जिया अलसाने, बीति गई वहु रात ।।
नैना रसीले रंग भरे दोउ, छिन छिन झोंका खात।
'राम बहादुर' प्यारी प्रीतम, गरवहियाँ लपटात ।।

(२)

उमगि आई निन्दिया चलो सेजिया पै।
शयन भवन दम्पति सुख लोजै, यामिनि अधिरतिया पै ।।
चन्द्र वदनि गहि उठी पिया कर, अरुनाई अँखिया पै।
'रामप्रिया' सिय संग में लीनी, सैन दई सखिया पै ।।

(३)

झूम झूम आई निंदिया नैनन में।
पिय प्यारी सुख सेज पधारो सैन करो सुख चैनन में ।।
मृदु मुसुकाय चले प्यारी संग बतरावत रस वैनन में।
'रामप्रिया' संग रसिक विहारी केलि करो नव कुंजन में ।।

(४)

लाल लली कीजिये अब शयन। सुख सागर गुन अयन ।।
साज सकल प्रथमै मैं रचिके, तब ढिग आई सुख अयन।
अब न विलम्ब करो दोउ साजन, सियवर मरदन मयन ।।

सुनि मृदु विनय विहँसि करुनालय, बोलि मधुर वर वयन ।
आये शयन कुंज सिय नागर, 'मधुरलता' सुख चयन ।।

(५)

चले सिय प्यारे शयन कुन्ज अलसाय ।।
चढ़ि सुखपाल अलिन संग लिन्हें, नवल द्वार बैठाय ।
अति आदर पय पान करायो, अतर पान अरपाय ।।
अरघ पावँड़े डारि मनोहर, पलँग आनि पधराय ।
'प्रेमलता' करि शयन आरती, अपने भाग मनाय ।'

(६)

चले दोउ पान खात मुसकाते ।।
करि व्यारू संग अलिगन लीन्हें, नवल नेह उमगाते ।
आय सिहासन राजे दम्पति, नयनन सैन चलाते ।।
छत्र चवँर लिये वहु सखि सोहै, रसमय रंग बढ़ाते ।
वहु सखि साज बजावे गावे, 'सियवल्लभ' सुखराते ।।

(७)

युगल के अंग अंग छाइ अलसान ।
अंगरावत रस भरे रसीले, सखियन जीवन प्रान ।।
कोमल कलित ललित वस्त्रन सों, सेज रची सुखदान ।
पौढ़न तापर चलो रसिक दोउ, चतुर छयल रसखान ।।
संग चली सहचरी सलोनी, करत शयन पद गान ।
'सरस माधुरी' बसहु दृगन में, युगल केलि रसदान ।।

(८)

प्रीतम चलो सेजिया पै रैन रही थोरी।
नवल लाल नव सेज रंगीली, नव नागरि सिय गोरी ॥
शिथिल गात अलसात प्रान प्रिये,श्रीनिमिराज किशोरी।
सुनि अलि बचन चितै प्यारी तन,उठि भुज अंस गहोरी॥
दोउ मन उमगि चलो रस सरिता,अलि हिय सिंधु भरोरी।
'रामप्रिया' आनन्द अलौकिक, सो बड़भाग लखो री ॥

(९)

लाल अब सेज भवन पधारो।
सुरति समय सुख सेज बिलोको, जिय के भाव उघारो ॥
मदन बनाइ सेज सदन में, सफल करो रसरंग विहारो।
बीती जात महारस रजनी, सुखमय साज सँभारो ॥
उमगे अंग अनंग जनावत, रंग रलो रति जंगन हारो।
'कृपानिवास'श्री जानकीवल्लभ, सखियन हेत विचारो॥

(१०)

जानि सेज सुख सखियन सेज सवाँरी।
रतन जड़ित पलँगा मृदु कुसुमनि,कोमल सुजनी डारी ॥
दृढ़ सु प्रबन्ध बाँधि मखतूलनि, सम सुढार सुखकारी।
सींचि सुगन्ध गेंद तकियादिक, सौज सजित मतवारी ॥
ल्यावति पधरावति हरषावति, लाल रसिक सुकुमारी।
'कृपानिवास' तल्प सुख लिन्हें, राम निहारत प्यारी ॥

(११)

अब हमारे प्रान प्रीतम प्यारे अलसाने लगे।
छिनहिं छिन अंगड़ाइयाँ लै लै के जमुहाने लगे॥
चंचलाहट हट गई उत्पन्न भोरापन हुआ।
नींद से माते नयन, नव कंज सकुचाने लगे॥
रैनहूँ बीती बहुत, नभ मध्य उड़ु गन आ गये।
गीत राग विहाग भो, गायक गुनी गाने लगे॥
दूसरी नौबत बजी, घड़ियाल जन दिन्ही गजर।
पाहरू आये अपर, पहरे को बदलाने लगे॥
ले चलो 'हरिजन' उठा कर, प्यारे को सुख सेज पर।
सैन छबि निरखन को अब, मम नयन ललचाने लगे॥

(१२)

सैन चलिये पिया मोरे राम सिया॥
सकल सखी मुख चन्द विलोकहिं, रैन गई बहुतेरी।
अलसाने लखि नयन उनिन्दे, सहजा सखी निहोरी॥
ललिय लाल सोवन चलहु, वलि सकल सखी करजोरी।
सुनि सखि बचन उठे पिय प्यारी, उतरि सिंहासन सो री॥
सखियन राम सियजू के भूषन, हरषि हँसी कछु छोरे।
भूषन बसन उतारि राखि सखि, सैननि भूषन थोरे॥
राम सिया सोवन चले सुख, सखियन अति उमगो री।
मनिमय पलँग ढिगन मुक्तावलि, सेज बन्द कसि डोरे॥
'रामचरन' उछोरी गेंदुआ पय फैन सेज पौढ़े सुख सरसोरे॥

(१३)

रसिक दोउ सयन कुञ्ज को जात ॥
भोजन करि मुख पान सु चर्वित, मन्द मन्द मुसकात ।
आस पास सब सहचरि राजै, सुभग मनोहर गात ॥
पहुँचे सयन महल के भीतर, शोभा बरनि न जात ।
अति सुगन्ध चहुँदिशि महँ मँहकत, भवँर झुंड मड़रात ॥
बैठे पलँगा पर दोउ प्यारे, करत व्यँग रस बात ।
कोइ सखि मधुरे वीन बजावति, गान करत स्वर सात ॥
पुनि दोउ मिलि अलसान लगे, सखि परदा करि चहुँकात ।
पौढ़ि गये जब दोउ पलँगा पर, 'अग्र' चरन सोहरात ॥

(१४)

पलंग पर राजत हैं सिया प्यारे ।
कोमल कलित सेज मन भावनि, तकिया गेंद सवाँरे ॥
भूषन वसन समय सम शोभित, मन में मोद अपारे ।
गलबाँही दै राजत दोऊ, रसमय बचन उचारे ॥
रुचि निहारि अलि शयन करायो, सेवा सौज सुधारे ।
वीन बजावति गावति अलियाँ, चहुँदिसि परदा डारे ॥
तन से अलिन गई निज कुञ्जन, मन से रूप निहारे ।
'प्रेमलता' सिय पिय पद सेवति, जीवन प्रान हमारे ॥

(१५)

सेज पर शोभित प्रीतम प्यारी ॥

चितवत सरस हरषि मुख निरखत,
अधर पियत सुखकारी।
हँसि मुसुकाय कहत रस बतियाँ,
उमगि अंग छबि सारी॥
अरस परस रस पुलकित दम्पति,
मधुर नींद दृग सारी।
हिलि मिलि सेज सुहावत दोऊ,
निरखि 'मोद' वलिहारी॥

(१६)

पीवत दूध युगल किशोर।
अधिक औंटि सिराय लाई, कन्द मिसरी घोर॥
भरि भरि कटोरन कनक दिन्हों, इला केसर छोर।
प्रथम 'प्रियाहि पियाय प्रीतम, लेत श्याम बहोर॥
लियो प्यारी अधर अमृत, स्वाद तामें बोर।
'मधुरप्रिया' प्रिय तृप्ति न मानत, रसिक जनहिं विभोर॥

(१७)

हँसि हँसि दूध पीवै पिय प्यारी इक साथ॥
मधुर कोमल बचन कहि कहि प्रान प्यारी साथ।
कनक कटोरा भरयो अमृतमय, पिये लिये मुसुकात॥
लाड़िली को अँचवाय पहले, पीछे आप धोवत हात।
श्याम श्यामा की युगल छवि पर,
वलि वलि 'रसिका' जात॥

(१८)

नृपलाल सुजान रसिकवर,
वीरी रचि रचि सियहिं पवावत ।
अंग अंग कुच कच अलकन में,
नेह विबस वर अतर लगावत ।।
आप लेत उर लाय रसिक पिय,
रसराज सु रीति दिखावत ।
'दयाअली' सुख निधि दम्पति तजि,
भजे अन्य तेहि धिग श्रुति गावत ।।

(१६)

पलकनि झुकनि सखीजन जानी ।।
रुचि वेता सिय रमन सुमन की,
अवसर पाइ सेज नियरानी ।
विगलित तल्प सुधारी चहुँदिशि,
ओढ़न साज मृदुल तन मानी ।।
ऋतु अनुसार सौज धरि नव नव,
पान पदारथ विविध विधानी ।
भोग बिहार समय सुखदाई,
ल्याई सखी सकल सयानी ।।
'कृपानिवास' विलासी दम्पति,
किलकत हुलसत सिय रसदानी ।।

(२०)

रसिकवर राजत पलँग अलसाते।
ललना गन चहुँओर बिराजै, लखी रूप एक टक ते ।।
रुख लखि कीन्ह आरती सजनी, निरखि निरखि हरषाते।
'मधुरलता' पुनि चरन पलोटति,
लखि लखि छबि बलि जाते ।।

(२१)

बतियाँ करत लागि गये नैन।
दशरथसुत अरु जनकनन्दिनी, दोनों सुखमा ऐन ।।
बाजत वीन रबाब मधुर धुनि, राग उठत घन गैन।
'मधुरअली' मधुरे स्वर गावति, पावत नित प्रति चैन ।।

(२२)

रंग भरी आँखें तेरी दिल मेरे भाने लगे।
जेती जगत में हैं मनोहर मुरति सब महबूब की।।
देखि दिलवर की अदा सरमिन्दिगी खाने लगे।
माधुरी अंग की तारीफ कवि क्यों कर करै,
जिस तरफ पड़ती नजर छवि छावनी छाने लगे।।
श्रीजानकीजीवन की जगजग ज्योति जाहिर जोहिये।
'युग्म' हर इक तौर से मुख मोहि सरसाने लगे ।।

(२३)

कनक भवन पलँगा के ऊपर, बैठे प्रीतम श्याम सुजान।

बाम भाग श्री जनकनन्दिनी,

निरखति प्रीति रीति पहिचान ।।

नवल अंग नव भूषन सुन्दर,पीत वसन सिरताज समान ।

चमकत चमचम दमकत दमदम,लली सुनैना कृपानिधान।।

श्रीयुत कौशल्याजू के प्यारे,आनन्द मंगल सुन्दर ध्यान ।

'रूपलता'के हृदय बसो नित,लाल लड़ैती करि मुसुकान।।

(२४)

जय श्री जानकी वल्लभ लाल ।

मनि मन्दिर श्री कनक भवन में, विपुल रंगीली वाल ।।

कोइ गावति कोइ बीन बजावति, कोइ मृदंग करताल ।

'युगलप्रिया' रिझवति दोउ लालन,

छबि लखि भई सो निहाल ।।

(२५)

करत दोउ नैनन में बतियाँ ।

सेज भवन की ओर चलो अब, लघु लागत रतियाँ ।।

लगन लालची लाघव लाई, सुरति सुहागिन पतियाँ ।

'कृपानिवास' श्री जानकी जीवन,मिलवत रस घतियाँ ।।

(२६)

ऊँची अटरिया पौढ़े पिय प्यारी ।।

सुवरन रतन जड़ित को पलँगा, झालर मोतिन न्यारी ।

पचरंग सेज सुरंग रंग तकिया, नील वितान मनहारी ।।

तेहि पर पौढ़े लाल लाड़िली, कोटि मदन रतिवारी ।
श्याम गौर अंग अंग मिले अति, 'प्रेमलता' वलिहारी ॥

(२७)

दोउ सुख झाँके झरोखनि अलियाँ ॥
सैन किलोलत लोल रसिक मनि,
मैन बढ़ै या रैन सुघुलियाँ ।
उघरे अंग संग युत राजत,
जनु सर पंकज कंचन कलियाँ ॥
उर उर अरत ढरत केसर वर,
करत बिनोद विपुल रंग रलियाँ ॥
'कृपानिवास' विलास विलोकत,
आस सखीजन मन की सुफलियाँ ॥

(२८)

आज दोउ अरुझि अरुझि मुसुकात ।
कर कपोल गहि अरस परस दोउ, नैनन सों वतरात ॥
अंश भुजा दिये प्यारी प्यारे, शोभा किमि कहिजात ।
दम्पति अधर सुधा रस लोभी, पीवत नाहिं अघात ॥
मद के भरे सावँरे अरुझे, उर कठोर दरसात ।
'प्रीतिलता' छवि अवलोकि दरस करि,
आनन्द उर न समात ॥

(२९)

छबीली छयल सों हँसि हँसि बोलैं ।
संन कुञ्ज बिच रतन सेज पै,
बैठि युगल जिय की रुचि खोलैं ।'
पगो लाल के प्रेम प्रिया जू,
प्यारी प्रेम पगे पिय जोलैं ।
कौन अधिक गुन रूप दोउन में,
सब सखियाँ निज मन में तौलैं ।।
एक समान जानि हर्षित अलि,
'प्रेम' हिये धरि मूरति सोलैं ।।

(३०)

पिया की प्यारी जू आलस भरि ऐंड़ात ।।
छिन मूँदत छिन खोलत नैना, नींद विवस झपकात ।
काजर युत पिय प्रेम रंग रस, प्यारी नैन सुहात ।।
निरखि लाल नैना नैनन में, सिय जू सौं वतरात ।
'प्रेमअली' धनि लाल लड़ैती, जो यह सुख दरसात ।।

(३१)

महल में सोय रहे सुख पाय ।
सिय प्यारी रघुलाल सलोने नेह उमंग बढ़ाय ।।
गौर श्याम एक रूप किये मनु, हरित रंग छवि छाय ।
अगनित भाँति भोग की सामा, राखे अलिन बनाय ।।

रतन दीप सुठि चारु चँदोवा, परदा ललित झुकाय ।
लागि झरोखनि निरखन अलियाँ,युगल सु छवि दरसाय।।
शयन कुंज की अद्भुत रचना, कहैं कौन विधि गाय ।
रसाचार्य आचार्य दिखावै, 'प्रेमलतहिं' समुझाय ।।

(३२)

महल में सोये दोउ सुकुमार ।
जनक नन्दिनी सुघर सिरोमनि, दशरथ प्रान अधार ।।
रहस विवस दोउ भये सलोने, करि २ कला अपार ।
सुरत खेत सु सुख सु अनुपम, मन वानिहुँ तेपार ।।
जानहिं अली रली जो पिय रंग, जिनके भाग उदार ।
'मधुरलता' नहि स्वाद वखानै, जानत कोइ सबिचार ।।

(३३)

पलँग पर राजत हैं सिय प्यारे ।
कोमल कलित सेंज मन भावन, तकिया गेंद सवाँरे ।।
भूषन वसन समय सम सोभित, मन में मोद अपारे ।
गलवाँही दै राजत दोऊ, रसमय वचन उचारे ।।
रुचि निहारि सुख सयन करायो, सेवा सौज सुधारे ।
वीन बजावति गावति अलियाँ, चहुँदिशि परदा डारे ।।
तन से अलिगन निज २ कुंजन, रूप अनूप निहारे ।
'प्रेमलता' सिय पिय पद सेवति, जीवन प्रान हमारे ।।

(३४)

महल में सोवत हैं दोउ प्यारे ।

रतन जड़ित पलँगा अति सुन्दर, मयन मनहुँ तन धारे ।।

ताके ऊपर बिस्तर पयके, फेन लजावन हारे ।

तापर पौढ़े युगल विहारी, हररिपु कला सुधारे ।।

करत केलि नाना विधि दम्पति, सखियन नयन निहारे ।

हँसि हँसि वातें करत परस्पर बरसत मोद अपारे ।।

'अग्र' स्वामिनी स्वामी दोऊ, जीवन प्रान हमारे ।।

(३५)

करति नवल छवि रंग आरती, कनक थार सजिलाई ।

नवल रंगीली सेज सलोनी, राजत सिय रघुराई ।।

सुरति विलास विलज्जित प्यारी, पिय तन मृदु मुसुकाई ।

अवध लाल छवि लखि मुद छाये, तन मन धन न्यौछाई ।।

रंग भवन मुद मंगल छायो, जय जय सिय रघुराई ।

'रसिकअली' के जीवन दोऊ, रस कीरति रसगाई ।।

(३६)

❀ पुष्प-शय्या शयन ❀

फूलन सेज सोये पिय प्यारी ।।

फूलन के शृंगार धारि तन,

हिल मिल के गलबहियाँ डारी ।

फूलन के गद्दा अरु तकिया,
फूलन की परदा है सवाँरी।
फूलन ही के फरस गलीचा,
फूल बिछे हैं कुञ्ज मँझारी॥
फूलन के गुच्छा लटकतु हैं, फूलन बन्दनवारी।
'सरस माधुरी' केलि युगल के, जीवम प्रान अधारी॥

(३७)

पौढ़े मिलि रसिक रमन पिय प्यारी।
अरस परस दिन्हें गलबँहियाँ, श्यामा श्याम विहारी॥
मन्द २ मुसुकात परस्पर, दोउ अनंग उमंग अपारी।
हिलित मिलित कल केलि करत दोउ,
दम्पति नैनन नीन्द खुमारी॥
पानदान मिष्टान्न विविध विधि,
सेज ढिग धरि सहचरी सुधारी।
अतर सुगन्ध माल फूलन की,
अरु सरयू जल झारी॥
अलवेली अनुरागी दम्पति,
लिपटि रहे दोउ भरि अँकवारी।
'सरस माधुरी' शयन कुँज की,
युगल केलि सखि नैन निहारी॥

(३८)

रसीले पौढ़े सेज सुहाई॥

सिटी उगलि खोली पट भूषन, आलि रजायसु पाई।
अति अनूप मनि पलँग बिछे हैं, बसन सु अति सुखदाई ।।
राजत मनिन के दीप अनेकन,छबि बरनि न नहिं जाई।
चापै चरन मधुर गति ललना, अति आनन्द बढ़ाई ।।
रुख लखि गई कुंज सोऊ पुनि, बहु विधि लेइ बलाई।
एक वसन ओढ़े दोउ पौढ़े, मौज करत मन भाई ।।
मधुर मंजरी सेज चहूँ दिसि, धरी सहित चतुराई।
मेवा पान इतर जल झारिन, चौकी निकट धराई ।।
पहरेदार महल के चहुँ दिसि, कठिन कु शब्द बराई।
सौटिन में बतिआइ छबीले, सोये सिय रघुराई ।।
कुञ्जेश्वरी सिखाई सबहीं, निज २ भवन गई सिरनाई।
'मधुरलता' यह ध्यान मनोहर, जा जिय विच रुचि जाई।।

(३९)

चलो सखि सो गये राजकिशोर ।।

मनिन जड़ित के पलँग मनोहर, ताकी छवि अतिजोर।
मिलि सखियाँ सब चरन पलोटत, रस बस पिय घनघोर ।।
चौकी वालि सजग होइ रहियो, लागे न कहुँ दृग चोर।
नूपुर दाबि चलो मोरी सजनी, होय न जेहि पग सोर ।।
सुभग सेज सिय राम सयन लखि, ललचत है मन मोर।
'अग्रअली' दम्पति दरसन हित, आऊँगी बड़ी भोर ।।

(४०)

चलो सब युग छबि हिय में धरी ॥

सोय गये सखि पिय प्यारी अब, आनन्द रस में भरी ।
लाल लली गुन कहत परस्पर, आनन्द सिंधु परी ॥
निज २ कुञ्ज की ओर गई सखि, युथेश्वरि मबरी ।
सबसे मिलि संग इन्दुकला थल, 'अग्र' गई स्वथरी ॥

(४१)

सो गये सिय संग लाल रसिकमनि ।

अब जनि सोर महल विच करियो, कहत परस्पर वाल ॥
निज निज कुँज पधारो अलियाँ, उर धरि ध्यान रसाल ।
चौकी चहुँदिशि देति हैं आली, 'रसमोदलता' वड़ भाल ॥

(४२)

महल में सोर करो जनि कोइ ॥

कछुक रहस बस कछु आलस बस, अबहि मैथिली सोइ ।
नूपुर दाबि चलो मोरी सजनी, तनक झनक नहि होइ ॥
पहरे वारी सजग होइ रहियो, आवागमन न होइ ।
'अग्रअली' जू के प्रान जीवन धन, सियवर मैथिली दोइ ॥

(४३)

ये दोउ अरुझि रहे रिझवार ।

क्रीट चन्द्रिका नथ सों बेसर, उरझि रहे हिये मनिहार ॥

उरझे नैन बैन सो बैना, उरझी भुज सों भुजनि निहार ।
उरझे पग पायल झनकारत, लखि २ 'सियाअली' वलिहार ।।

❀ दोहा ❀

अति सुगन्ध रचि धूप दै, दीप युगल अति जोति ।
निरखि मनोहर युगल छबि, वारति मनिगन मोति ।।

(४४)

किशोरी जू अंक में सो गई, पिय गर बहियाँ डार ।
निरखि सखी कर जोर कहत सब, सुनिये राजकुमार ।।
दीजै अब पौढ़ाय सेज पर, मानिये विनय हमार ।
पुनि धीरे पिय आप पौढ़िये, जागे ना कहिं सुकुमार ।।
सुनि सखि बचन लाय हिय सिय को, सोये प्रान अधार ।
'कंचन कुवँरि' युगल पद चापैं, निरखत छबि बलिहार ।।

(४५)

चरन पलोटति सहचरि प्यारी ।
पौढ़े विवि सुख सेज प्रिया प्रिय,
राजत चित्रित री चित्रसारी ।।
अंग अंग अरुझे अरसाने,
आनन्द मंगल छकी महा री ।
विजन करति हित 'रूप सहचरी',
छवि लखि २ पुनि २ वलिहारी ।।

(४६)

❀ सखी द्वारा रात्रि प्रशंसा ❀

निंदरिया तु अति भाग्य भरी ।
अब सव खेल विसारि प्रिया प्रिय, तोसों प्रीति करी ॥
तौहूँ आदर अधिक दियो है, मानी रंग ररी ।
सुख दायक अब तु जु भई है, हमको जानि परी ॥
लाड़ चाव करि लै मन भायो, रजनी जाति जु टरी ।
रवि रथ पाछे आवतु होइहँहि, पच्छिम धप जु धरी ॥
हम उर आनन्द भरनि आवत, मंगल महा घरी ॥

(४७)

ऐसु नियरी सहेलिया अब न बोलना रे ।
देखु याम युग बीती रजनी,
　　　　अलससे सिय पिय दृग झपने,
　　अब सब साज समेटि चलो लै, रोलना रे ॥
नूपुर दाबि चलो मोरी सजनी,
　　　　　　होय नहि बजनी,
कटि किंकिनी मिलि कंकन नहिं बजहिं बिलग ह्वै,
　　　　　　　　　　डोलना रे ॥
जाहु सकल निज थलन बिराजो,
　　जंगलन छबि लखि दृग सुख साजो,
　　'मंजुलता' अब होय भोर पट खोलना रे ॥

(४८)

❀ आरती पलँग की ❀

मुक्तामनि भरि थार आरती साजी, सुख उर सरसाई।
लखि लखि छबि मनमोहन दोऊ, देह दशा बिसराई॥
कल कंठनि गावति रस छाकी, बाजे मधुर बजाई।
'रसिकअली' बरसत कुसुमावलि, युगल जयति धुनि छाई॥

(४९)

समय सुख साजि आरती ल्याई।
प्रेम थार कर वाति प्रीति मय,
छबि मिश्रित युग जोति सवाई॥
गावति केलि बजावति वादन,
सनद चपल चहूँ दिसि छाई।
अपने गुन गन मान प्रगटि कल,
लाल लड़ैती लाड़ लड़ाई॥
नन सबनि के तृप्ति न पावत,
रूप माधुरो महादुरि पाई।
'कृपा निवास' विलास सियावर,
श्री प्रमोद वरजोर दिखाई॥

(५०)

शयन आरती करती प्यारी।
हाव भाव दीपावलि सुन्दरि, बाती प्रेम रंग उजियारी॥

अंग अंग मिलि करत आरती,
पानि पयोधर सुमन भर डारी।
'मोहनि' चित चिन्ता जो भयो अब,
हरषी मन अति उदगारी ।।

(५१)

रंग आरती करत नवल सखि, कनक थार सजि ल्याई।
नवल रंगीली सेज सलोनें, राजत सिय रघुराई ।।
सुरति विलास विलज्जित प्यारी,पिय तन मृदु मुसुकाई।
अवध लाल छबि लखि मुद छायो,तन मन धन न्यौछाई।।
रंग भवन मुद मंगल छायो, जै जै सिय रघुराई।
'रसिकअली' के जीवन दोऊ,
रस की रीति प्रीति युत गाई ।।

(५२)

मधुर यन्त्र बाजत स्वर झीने।
मधुर गान मनि महल उमंगि रहे, मधुर विपञ्चि नवीनें ।।
द्वार द्वार आवृत प्रति कोटिन, रक्षित अलिगन भीनें।
'रसिकअली' सोये प्रिया प्रीतम, रंग राग रस लीनें ।।

(५३)

सेज सुख सोये सावँरि गौरि।
प्रान वपुष मन लाय मोद सुख, सिमिटि भये इक ठौरि ।।
लपटि भुजा तन सोहति मानो,नेहलता सुख द्रुमनि सकोरि।
पलक लगा वर वदन मनोहर, मीन सुधा सरबोरि ।।

सीतत मन्द सुगन्ध सु चिन्मय, समय समुझि पलकोरि।
'कृपानिवास' सिया पद पंकज, सेवति नैन निहोरि ।।

(५४)

चली सखि निज २ कुञ्जन जाय।
करत पिया प्यारी की बातें, छिन छिन हिय उमगाय ।।
कोइ कह उचित न कीन्ह विधाता, जो दै रैनि बनाय।
कोइ मुसुकाइ ताहि सन वोली, नयनन सयन चलाय ।।
पिय संग केलि करब निज कुंजन, सुनि रस हिय सरसाय।
यहि विधि करत विनोद परस्पर, पहुँची महलन जाय ।।
'मधुरलता' निज संग पिया के, पौढ़ो प्रीति बढ़ाय ।।

(५५)

चलो सखि सोये सिया रघुराई।
सुरति विनोद मोद रस पागे, ओढ़े एक रजाई ।।
चरन सेय सब सौज सजाई, युगल सु छबि हिय लाई।
यहि विधि चलि गुरु कुञ्जन आई, रजनी बहुत बिताई ।।
रसाचार्य आचार्य चरनवर, सेवा करहि सोहाई।
आज्ञा मानि आये निज कुञ्जहिं, सोई नीन्द न आई ।।
अष्टयाम सियवर की सेवा, श्री सतगुरु दरसाई।
'प्रेमलता' यहि विधि नित करहीं,
एक दिनन कछु गाई ।।

(५६)

परी वलि कौन अनोखो वानि।
ज्यों ज्यों भोर होत है, त्यों त्यों पौढ़त हौ पट तानि॥
अरस तजहु अरुनई छाई, गई निसा रति मानि।
'श्रीहरिप्रिया' प्रान धन जीवन, सकल सुखन की खानि॥

(५७)

आज इन दोऊन पै वलि जैये।
रोम रोम से छवि वरसत है, निरखत नैन सिरैये।
रूप रासि मृदु हास ललित मुख, उपमा देत लजैये।
'नारायन' या गौर श्याम को, हिये निकुञ्ज बसैये॥

❀ कवित्त ❀

आस पास सहचरी नूपुर झनकार करैं,
चम्पा की कली सी मानो फूली वे समान की।
सौंधन की जपटैं टपटि भीर भौंरन की,
वीनादिक वजन लागै उघटैं कल गान की॥
झाँकन झरोखन लागी परदे उघार देत,
शोभा उघटन लागी कोटि शशि भान की।
मिटै अमंगल मंगल भयो, 'किशोर सूर',
जगमगाय उठी महल जागी श्रीजानकी॥

—०—

(५८)

❀ बल्लभ आरती ❀

बल्लभ आरती उतारिये सजनी, सिया पिया वर की ।
अद्भुत छबि फबि झाँकिये, पिय जनक लली की ।।
श्याम गौर दम्पति भावति अति, जीवनधन अलियन की ।
श्याम कमल छबि धारहि, जनु चम्पकली की ।।
पीत बसन जड़ि अंग सु छाजत, अति नीकी ।
मुक्ताफल हलरात है, छवि हरत सु कवि की ।।
'मधुरलता' वलि जाति है, चितवन तिरछी की ।।

(५९)

झमकि करैं आरती अलवेली ।।
कुञ्ज कुञ्ज सुखपुञ्ज मैन लखि, सु छबि नवेली ।
भूषन वसन चमाचम चमकत, गमकत सुमन चमेली ।।
कोउ जल वारि उतारि लवन कोउ, लेति वलाय हथेली ।
'मधुरलता' या छबि पर वारौं, तन मन धन सब हेली ।।

(६०)

देखियौन २ ये वहिना ।
हरियो हरियर भेला होइते, वैदेही दहिना ।।
बड़ा भाग सँ भेल समागम, होईत रहो अहिना ।
धन मिथिला धन 'मोद' मैथिली, धन हम सब वहिना ।।

॥ दोहा ॥

हे सीते नृप नन्दनी, हे प्रीतम चितचोर।
नवल वधू की वीटिका, लीजै नवल किशोर॥
हँसि वीरी रघुवर लई, सिय मुख पंकज दीन।
सिये लीन्ह कर कंज में, प्रीतम मुख धरि दीन॥
निरखि सहचरी युगल छवि, वार वार वलिहार।
करत निछावर विविध विधि, गजमोतिन के हार॥
रतन सिंहासन राजहीं, गलवहियाँ दिये लाल।
चहुँदिशि अलिगन सेवती, नवल रंगीली वाल॥

—०—

जय सिय स्वामिनि, जय सरकार।
पिय हिय हारिनि, सिय हिय हार॥
'मोद' मन्दिर में, करो विहार,
पिय प्यारी गलवहियाँ डार॥

काजर महावर, मेहदी पान।
तिरछी चितवन, मन्द मुसकान॥
बुलकन हुलकन, दृगन मिलान।
'मोद' रसिक के, जीवन प्रान॥

निशिवासर यहि छवि को ध्याय।
वाद विवाद सबै विसराय॥

जो यहि विधि, करिहौ अनुराग ।
तौ प्यारे, कहँ जैहैं भाग ॥

❀ आशीर्वाद ❀

नित्य निकुञ्ज विहार करो,
रति रंग रंगो रहो, लाड़िली गोरी ।
प्रीतम प्रान सुजान के संग,
दिये गरबाँह, बसो हिय मोरो ॥
श्री चन्द्रकलादि अली गुन आगरि,
नागरि रूप लखे तृन तोरी ।
ईस मनाय असीसैं सबै,
कि बनी रहे नित्य किशोर किशोरी ॥

—०—

आनन्द रहो दृग चन्द दोऊ,
शुभ सगुन तुम्हें नित ही बनि आवें ।
दोउ मिलि केलि कलोल करो,
हम निरखि २ अति हो सुख पावें ॥
हम अलियन को यह धन मिल्यो,
कँह लौं विधना के गुन गावें ।
सखिगन मिलि आशीष देतु हैं,
सुख विलसो हम वलि वलि जावें ॥

—०—

(६१)

॥ आशीष ॥

सदा चिरजीवो रंग भरि जोरी ।
सदा विहार करो रंग मन्दिर, रंग किशोर किशोरी ॥
सदा सुहागिनि की अनुरागिनि, रंगे रहो वड़भाग वढ़ोरी।
पिय के प्रान बसो सिय सुन्दरि, सिय मन श्याम बसोरी ॥
पिय की चाह सु चातक लौं रहो,
सियजू की मया स्वाति बरसो री।
पिय मुखचन्द सुधा रस द्रवै नित,
पिय के नयन चकोरी ॥
हमरे नयन प्रान के सर्वस,
अधिक अधिक सुख रस सरसोरी ।
'कृपानिवास' उपास महल की,
टहल लगी सो लगोरी ॥

॥ इति रात्रि शयन कुञ्ज ॥

॥ श्रीबृहद् अष्टयाम पदावली समाप्तम् ॥

-। शुभम् ।-

---०---

❀ परिशिष्ट ❀

पद–१

अब मोहि चन्द्रकला जू की आशा ।
जनकलली जू की मुख्य सहेली विहरति सकल विलासा ।।
चौरासी भव फंद छोड़ाकै रसिकन संग दियो बासा ।
'युगलप्रिया' अब नहिं कछु संशय विपिन प्रमोद निवासा ।।

(२)

नमो श्री अग्र स्वामि पद कंज ।
प्रिय वानो रसिकन मन मोदक बोधक विपुल रासिरस मंजु ।।
रसिक वर्य रसिकन मत मंडन खंडन असद् विषय भ्रम पुंज ।
नमो श्रीजयति जयति प्रमोद वन पिय प्यारो रस रहसि निकुंज
नमो श्रीजयति जानकीवल्लभ नाम रसिक रसनावलि गुंज ।
प्रीति रीति परतीति लली पद 'युगलप्रिया' हिय तमसि विधुंज ।।

(३)

मिथिला बिनु नाते नहिं दरसे ।
पढ़ै गुनै समुझै समुझावै पोथी लादै खर से ।।
लसति अनादि थली मनिभूमी मुक्ति फिरे घर घर से ।
विहरत सदा रसिक रघुनन्दन लली चरन रज परसे ।।
यही जानि सुख मानि बसी सब कांचनवन रस अरसे ।
सची शारदा रमा भवानी कमला सेवन कर से ।।

जे रूखे रस कथा पगें नहिं मोह निसा प्रिय चर से।
लहे न रसिक गुरुन संगति भव बहे नदी ग्रह गर से।।
परम रसिक शृंगार अहारी जग नभ बसि जलधर से।
कामादिक पवनहु गति थाकी काल डरत जेहि डर से।।
सूरति मिथिला सब अंग सिथिला विरह चढ़ी जनु ज्वर से।
विरही जिज्ञासू साली लखि कृपा प्रेम जल बरसे।।
रसिकन की गति अकथ कहानो सङ्ग लहै तो सरसे।
अग्रस्वामि रस रीति मिलन को 'युगलप्रिया' जिय तरसे।।

(४)

मन बस्यो अवध की गलियाँ।
महल विचित्र कनक मनि मंडित निरखि मनोरथ फलियाँ।।
कंचन कोट फटिक मनि चित्रित नग जगमग छबि छलियाँ।
खाई निर्मल जल परि पूरित मिलि सरजू रंग रलियाँ।।
चहुँदिशि वन प्रमोद कंचनमय भूमि विराजत भलियाँ।
कुञ्ज कुञ्ज प्रति पुञ्ज पुञ्ज गुन आगरि नागरि अलियाँ।।
भीतर चौक बजार हजारनि भिन्न भिन्न रंग थलियाँ।
नृप सुत 'युगलप्रिया' के जीवन जनकराय जू की ललियाँ।।

(५)

अवध की भूमि सोहावन जानी।
अरुन पीत सित मनिमय राजति रसिकन दृग लपटानी।।

श्री सरयू सब सरित सिरोमनि वेद पुरान बखानी।
जहां नित्य विलसत पिय प्यारी वन प्रमोद सुख दानी ॥
जिनके युगल विहार कथा नित तिन यह पथ पहिचानी।
'युगलप्रिया' निसिवासर ध्यावति रीझि रीति सुख मानी ।

(६)

हमरे वन प्रमोद रसदानी।
विविध कुंज द्रुमलता सुहावन निरखत छबि मनमानी ॥
योग ज्ञान अरु नेम दान व्रत इन सब को न प्रधानी।
प्रेम लक्षणा भक्ति सिरोमनि चहूँओर सरसानी ॥
सरजू सोम विटप रतनागिरि छबि नहिं जात बखानी।
'युगलप्रिया' यह रस विलास पथ संत कृपा ते जानी ॥

(७)

अवधपुर नित्य विहारी राम।
चहुँदिशि जिनके कंचन अवनी वन प्रमोद सुखधाम।
द्वादस चतुर्विश जेहि भीतर भिन्न सीम गुन नाम ।
तहँ तहँ विहरत युगल विहारी दिये अंशन भुज दाम।
कुंज कुंज प्रति अमित सहचरी सेवन विधि अनुपाम ॥
मिटत त्रिगुन चन्द्रार्क बरुन यम ये नहिं मिटत ललाम।
जे जन रसिक भक्त सेवन करि पायो रति अष्टयाम ॥
मानस सरसि भाव सुचि अंबुज 'युगलप्रिया' विश्राम ॥

(८)

अब हम भई सोहागिन साँची।

कृपा करी कौशलपति प्रीतम मधुर मोहब्बत माची॥

बिसरी विषय विभूति वासना नासी जग मति काँची।

नूतन नेह बाँधि नूपुर पद परा प्रीति युत नाँची॥

साधन सकल निवारि नेम करि युगलनाम सन राँची।

'युगलअनन्यशरण' सीतावर रहस भावना याँची॥

(९)

संतन चरन धूरि जो पाऊँ।

सीस चढ़ाय लगाय दृगन सो पाय हृदय निज सरस बनाऊँ॥

सुरसरि अघ छूटत जिन परसे तिन संतन जस केहि मुख गाऊँ।

संत समाज तीर्थ सेवन करि उज्ज्वल रस सागर अवगाऊँ॥

सन्तन को चरणामृत लै लै उर बिच सरिता प्रेम बहाऊँ।

सन्तोच्छिष्ट पाय श्रद्धा सों जनम जनम त्रय ताप नसाऊँ॥

सन्तन अनुगत होय 'बाँके' पिय संतन की अनुचरी कहाऊँ।

(१०)

ये दोउ चन्दा बसो उर मेरे।

दशरथ सुत श्रीजनकनन्दिनी अरुन कमलकर कमलन फेरे॥

बैठे सघन कुञ्ज सरयू तट आस पास ललना गन घेरे।

ललित भुजा दिये अंश परस्पर झुकि रहे केश कपोलन नेरे॥

चन्द्रवती सिर चवँर ढुरावति चन्द्रकला तन हँसि हँसि हेरे।

'रामसखे' छवि कहि न परत जब पान पीक मुख झुकि २ गेरे॥

मुद्रक :--मनीराम प्रिंटिंग प्रेस, शास्त्री-अयोध्या

(१)

रसिक दोउ निरतत रंग भरे।
विपिन अशोक रास मण्डल विच, जनकलली रघुलाल हरे ॥
अमित रूप धरि करि कछु चेटक, युग युग तिय मधि श्याम अरे।
क्रीट मुकुट की लटक चन्द्रिका, झुकनि मदन मद दूर करे ॥
मोतिन हार युगल उर राजत, कुन्द मालती माल गरे।
पग नूपुर मंजीर मधुर छबि, कंचन किंकिनि मुखर तरे ॥
मुरज मजीरा ढोल सरंगी, अरु मुरली की टेर करे।
विविध तान संगीत अलापत, ततथेइ ततथेइ कहत खरे ॥
कबहुँ मधुर मुसुकाय के दंपति, निरखत छबि भुज अंश धरे।
कबहुँ सुरति करि व्याह समय की, फिरति भाँवरी रसिक वरे॥
यह रस रास महासुख सागर, द्वादस योजन लो सवरे।
'रसमाला' भरि पूरि रही बन, जग कोई बुन्द प्रकाश करे ॥

(२)

सखियन की रुचि जानन हारी।
प्यारी प्रीतम गल बंहियाँ दै, विहरत कुंजन न्यारी न्यारी ॥
कहुँ मधुपान, कहूँ चौसर छबि, कहुँ दक्षिन नायक रस धारी।
कहुँ बीरी कहुँ अतर सुगन्धित, कहुँ फूलन सिंगार सँवारी ॥
कहुँ कोउ मानवतीहि मनावत, पहिरावत नूपुर झनकारी।
कहुँ किसलय दल रचित शयन पर,
पौढ़ि रहत तिय गल भुज धारी ॥

यहि विधि कुंज निकुंजन विहरत,

सुख पावति निज रुचि अनुसारी।

तत्सुख सुखी रहति नित आली,

निज 'मोहनि' सुख कृपा विचारी ॥

(३)

नवल लाल रघुनन्दन रस बस, फिरत अलिन के संग।
यथा गयंद स्रवत मद करिनी, बृन्द विगाहत रंग ॥
काहू सो बतरात श्रवण लगि, काहू को कछु देत।
काहुइ बि वसन करि उरज गहि, मधुर अधर रस लेत ॥
लै उछंग काहुइ बिधु मुख छबि, एकटक रहत निहारि।
हसि हसि कहत करत कछु औरै, तन की दशा विसारि ॥
काहुइ देत सुमन की माला, विविध सुगंध लगाइ।
नीबी बन्धन छोरत लखि सखि, रही बिहसि सकुचाइ ॥
कहति भले जू भले लाल तुम, छल बल रहत लिये।
बरजोरी न चलैगी हम सों, कोटिहु जतन किये ॥
कोइ सखि पियहि मृदुल गुल चावहिं, दपटति तिरछे नैन।
विहसत लाल मदन मद माते, कहि कहि परिहसि बैन ॥
बीरी खात खवावत बिधु मुख, निरखि अलिगत बाल।
भूषन बसन सम्हारत ढीले, निरखि मदन भरि लाल ॥
छुटकि रही अलकावलि दुहुँ दिसि, घूर्नित नयन विसाल।
रस लंपट रसखानि पिया के, रूप पगी 'रसमाल' ॥

(४)

पिय निरतत सिय कर धारि रंग विस्तारी ।
चिन्मय श्यामा श्याम रूप बहुधारी ।
नख सिख नटवर बेष सजे मन हारी ॥
अनुपम श्यामल गौर छटा उजियारी ।
जुगल जुगल मिलि संग लेत गति न्यारी ॥
साजन ताल मिलाय सुराग उचारी ।
कबहुँ चक्र सम घूमि मंडलाकारी ॥
कबहुँक भिन्न सुहोय देत करतारी ।
हाव भाव करि कलन सुकेलि पसारी ॥
कुन्ज निकुन्जन जाय रमत पिय प्यारी ।
अंगन अंग मिलाय मगन मुद भारी ॥
निरखि झरोखन अलिन सुपरम सुखारी ।
यह रस केलि सु अगम भाव विनु नारी ॥
सिंधु बिंद रवि दीप अपर उपभारी ॥
'प्रेममोद' सुचि सेव सुस्वाद अपारी ॥

(५)

झमकि झमकि लली लाल की मटिनियां ।
निरखि निरखि अलि हिय कसकनियां ॥

बाजत मृदंग बीन, सारंगी तमूरा झीन,
अलगोजा बंशी बाजै बाजत पैंजनियां।
मृगी नाचे चन्द पर, शेष नाचे शम्भु पर,
कवि नाचे विव पर मनके हरनियां॥
कर सो कर धरि थिरकि थिरकि अलि,
ताताथेइ ताताथेइ ताथेइ कहनियाँ।
'नवलअली' की लली वंध के बंधनियाँ,
रसिक सिरोमनी सो रस के पियनियाँ॥

(६)

साँवरे सलोने जू झमकि झुकि आवै रे।
सरद कै रैन पिया अधिक सोहावे रे।
मंद मुसुकाये प्यारी जू के गलबाँह दिये।
ऊँचे स्वर तान ले मधुर स्वर गावे रे॥
रास मंडल अली, सग लली कर धरि।
छम छम छननन नूपुर बजावे रे॥
कटि लचकनि ग्रीव मुरनि घुरनि नैन।
कुंडल हलक मनि क्रीट झलकावे रे।
'नवल विहारी' प्रिया लली संग रस वस।
अली संग लता कुंज मन ललचावे रे॥

(७)

नटत छबीले छैला सियामन हरिया॥

जब पिया घूमत वागा फहरत,
सिया मन कहरत मदन लहरिया।
कंपत चलत पसेवनि अँसुवा,
उमगत मानहु सावन की नहरिया॥
गिरि गिरि लेत पिया तान अलापत,
मुरछि परत सखि सिय थरहरिया।
'नवल विहारी प्रिया' पिय रस लूटत,
प्यारी पर छिरकत चंदन फुहरिया॥

(८)

नटवर उघटत गति नई नई।
नादर्दोनि, तुमतदानि तदारेदानि,
सखि चहुँ दिसि उचरत थेई थेई॥
छुम छनननन स्वर पूरि रही गति,
उलटि पलटि समताल लई।
सिय रीझि पिया गलबाँह दई,
'ज्ञानाअलि' निरखि निहाल भई॥

(९)

आजु बनि ठनि ठाढ़े राजकिशोर।
स्यामल वरन तन, सुरंग वसन मनि,
मोतिन के दाम उर, करति उजोर॥

सोहै सिर क्रीट मनि, कलंगी लसति बीच,
कुण्डल कपोल मन, हरि लियो मोर ।
हलनि बुलाक की जु साली उर आली लखु,
जुलफैं अतर भीनी, राखी है मरोर ।।
मृदु मुसुकानि हसि हसि बतरानि पी की,
निरखि उठति हिय काम की हलोर ।
लेत मीठो तान कल, गान के निधान सब,
गुन के निधान 'रसमाला' चितचोर ।।

(१०)

प्यारी तेरे नैना में अजब टोना ।
अंजन न है प्यारी, फाँसी मेरे गर डारी,
दृगन के कोर में गजब होना ।
उठी तन पीर भारी, पीरी अंग अंग छाये,
मदन के लहर जुलुम ढोना ।।
अंग सब कंप गये, लरखर कंठ भये,
प्रान के पयान मैं चहत होना ।
'नवल विहारी प्रिया' पिया की चातुरी लखि,
सिया हेरि आतुर बदत दोना ।।

(११)

आज जनक दुलारी रस रंग भरी ।।

चम्पा के वरन वारी, बसन सुरंग वारी,
वदन मयंक वारी, रूप आगरी।
अरुण अधर वारी, बोलनि मधुर वारी,
तिरछो चितवनि सर मारत खरी॥
बेसर सुरास वारी, भुजन मृनाल वारी,
उरज उतंग वारी मदन जरी।
मोतिन के हार वारी, मध्य भाग छीन वारी,
'रसमाला' उर वारी मोह्यो मन री॥

(१२)

रास विहारी बड़े पिय रसिया॥
रास कुन्ज में रास रचत नित,
दिये गलवहियाँ रहत नित फँसिया।
नैन नचावत भौंह चलावत,
मोद बढ़ावत कहि मृदु हँसिया॥
थेइ थेइ कहि मोहि नाच रिझावत,
रस माँगत सु रहत नित लसिया।
रास विहारी प्रिय ठवनि त्रिभंगी,
निशि दिन रहत हमारे दृग बसिया॥

(१३)

जीते रहो रास रसिक विहारी॥

तेरी मूरति मेरे दृग अरुझी, पलक न हूजिये न्यारी।
सरयू पुलिन रास ललना संग, नित येही आस हमारी॥
'कृपानिवास' असीसति सुख लै, प्यारो जीव जियारी॥

—: कवित्त १४ :—

प्रात ही से प्रीतम प्रिया को मुख हेरो करें,
मज्जन श्रृंगार में बहार बरषावै हैं।
समय समय के कृत्य नृत्य आदि होते सबै,
आठोयाम विविध विनोद भाव भावैं हैं॥
प्यारी औ विहारी को विहार लखि आलिन के,
मन में अपार सुख सिन्धु लहरावै हैं।
मणिन महल में महान छबि छावैं ऐसो,
दम्पति अनूप रूप देखि मन लुभावै हैं॥

(१५)

राघव सवाँरत श्रृंगार मैथिली को मंजु,
मानि कै स्वशक्ति भक्ति भाव में भरे हैं।
दपरन दिखावैं कबौं बेनियाँ डोलावैं,
कबौं हावन के भावन सों पायन परे रहैं॥
वीरी रुचि पवावैं फूल माल पहिरावैं,
कभूं इत्र दान लिये प्यारी सन्मुख खड़े रहैं।

या विधि विहारी प्राण प्यारी के रिझाइबे को,
आठोयाम राम सेवा सिया की करे रहैं ॥

(१६)

दम्पति महल सुख सम्पति सरसाती जहाँ,
लीला अनूप नित्य होत न्यारे न्यारे हैं ।
चौसर बिछाइ गई प्रेम सों प्रमोदित ह्वै,
खेलने के पूर्व ये विचार निरधारे हैं ॥
हारै सो बनैगो दास दासी यही बाजी लागी,
(श्री) चारु शीला आदि सेवा करत निहोरे हैं ।
पाँसे फेंकबे में दाँव पेंच भी भये हैं किन्तु,
जीती (श्री) सिया स्वामिनी 'विहारी' राम हारे हैं ॥

(१७)

डोलैं वाटिकान में कबों प्यारी विहारी संग,
बोलैं मृदु बैन नैन सैन सरसावै हैं ।
भावैं कबौ भृकुटी नचावैं मुख मोरि मंजु,
राग रागिनी को ताल दै दै दरशावैं हैं ॥
तोरि तोरि सुमन सुंघावैं पहिरावैं माल,
लावैं कबौं अङ्क में बिलोकि हरषावै हैं ।
आठोयाम सिया को हँसावैं राम हँसि हँसि,
मानों केलि कुन्ज में पीयूष बरषावैं हैं ॥

(१८)

आठोयाम बाम की बिहारी शुचि सेवा करें,

झूमि झूमि झाँकी झाँकै बाँकी प्रिय प्राण की।

आलिन के पुन्जन में रासन के कुन्जन में,

नवल निकुन्जन में शोभा सरसान की ।।

रम्भा चँवर ढारें उमा आरती उतारें,

लखैं प्रिय रुख दारा देवतान की।

परिजात सुरतरू सुमन अदूषन के,

भूषन बनाय पहिरावें राम जानकी ।।

(१६)

झंडा औ पताका बल्लम मूर्छल लिये हैं हाथ,

आगे में रंगीली बाल चलती इठलाती सी।

नर्तकी नवीनी गान तान में प्रवीनी,

सो भी नाचती है जाती प्यारे आगे मदमाती सी ।।

यन्त्रों को बजाती सु रसीले गान गाती,

पीछे पीछे चली आती और लंक लचकाती सी।

छत्र चँवर व्यजन पान दान पीक दान लिये,

खासी जो खवासी संग चलती रंग राती सी ।।

(२०)

किशोरी जू के अनुपम रस मय बैन ।
सुध सुधाकर शुक पिकहूँ नहि, कोकिलहूँ सम हैन ।।
मंद हसनि रद दसन अधर छबि, फँसनि पिया पद चैन ।
अंग अंग छबि फबि कबि दबि मति, शारद वरनि सकैन ।।
करत विहार अपार पिया संग, कनक भवन सुख दैन ।
'जुगल विहारिनि' भरि उमंग सखि, सेवति है दिन रैन ।।

(२१)

प्रिया जू के नैनन की बलिहारी ।
भाव भरे रस भरे मनोहर, मुद प्रद अवध विहारी ।।
चितवनि चपल चतुर चित चोरनि, मुरनि ढुरनि निज न्यारी ।
अंजन विनहिं सोहावन भावन, वर सावन सुख कारी ।।
पगे प्रेम प्रीतम सुजान नित, नवल रसिक हिय हारी ।
'हेमलता' ऊपमा वारि सब, अहनिशि रही निहारी ।।

(२२)

बनीरी आज जोरी नवल किशोर किशोरी ।
निरखत दृगन तृप्ति नहि मानत, जो कछु उपमा कहों सो थोरी ।।
पिय गर भुज धर चिबुक सुभगतर, परिकर गन हरषित तृण तोरी ।
'कृपानिवास' राम भामिनि के, नैन परस्पर हेरी भोरी ।।

श्री सर्वेश्वरी श्री चन्द्रकला जू की जय ।

श्री अष्ट सखी जू की जय ।

श्री समस्त महल वासिन जू की जय ।

श्री समस्त परिकरगन जू की जय ।

श्री साकेत दिव्य धाम की जय ।

श्री विरजा जू की जय ।

श्री प्रिया प्रीतम जू की जय ।

श्री युगल नाम की जय ।

श्री युगल रूप की जय ।

श्री युगल लीला की जय ।

श्री युगल धाम की जय ।

श्री रसमोद कुञ्ज विहारिणी विहारी जू की जय ।

श्री नवल कुञ्ज विहारिनी विहारी जू की जय ।

श्री नित्य नवकेलि कुञ्ज विहारिणी विहारी जू की जय ।

श्री अलिन कुञ्ज विहारिणी विहारी जू की जय ।

श्री सीतामही उर्विजा कुण्ड विहारिणी विहारी जू की जय ।

श्री सीतामही लक्ष्मणातट विहारिणी विहारी जू की जय ।

श्री मिथिला कमलातट विहारिणी बिहारी जू की जय ।

श्री अवध सरयूतट विहारिणी विहारी जू की जय ।

श्री चित्रकूट मंदाकिनीतट विहारिणी विहारी जू की जय ।

श्री कनक भवन विहारिणी विहारी जू की जय ।

श्री हृदय कुञ्ज विहारिणी विहारी जू की जय ।

श्री नेत्र कुञ्ज विहारिणी विहारी जू की जय ।

श्री सीता रामनाम महाराज सिरताज की जय ।

मुद्रक :- मनीराम प्रिंटिंग प्रेस

शास्त्रीनगर अयोध्या